पटरानी

विमल मित्र

'नदी केवल यही कहती है कि मैं समुद्र बनूंगी। यह उसका मद नहीं है—बल्कि एक सच्चाई है, इसलिए यह कथन उसकी विनय का ही सूचक है। वह समुद्र के साथ मिलकर क्रमशः समुद्र बनती जा रही है—और उसका समुद्र बनना अभी शेष नहीं हुआ है।'

—रवीन्द्र नाथ

इस कहानी को लिखने का मेरा कोई खास उद्देश्य नहीं था। यद्यपि पहले मेरी ऐसी धारणा थी कि दुनिया में उद्देश्य ही सब कुछ है, पर अब नहीं। इसके अलावा, उद्देश्य और निरुद्देश्य दोनों की तुलना करने की कोशिश में मैंने न जाने कितनी ही गलतियां भी की हैं। अब उनका लेखा-जोखा करना चाहूं, तो भी नहीं कर सकता; हां, अगर कर सकता तो देखता कि उन गलतियों का अम्बार लगते-लगते पर्वत बन गया है और उस पर्वत ने न सिर्फ हानि की पीडा को बल्कि लाभ की खुशी को भी अपने पीछे छिपा लिया है। सिर्फ इतना ही नहीं, संभवतः यह भी हो सकता है कि किसी दिन मुझे पता चलता कि हानि-लाभ के अंकों की उलझन में उलझकर मेरा असली जीवन ही न जाने कब का खो गया है। अतः बेहतर यही है कि उद्देश्य-निरुद्देश्य की बात यहीं खत्म कर दी जाए और कहानी को शुरू किया जाए।

पर ठहरिए, कहानी शुरू करने से पहले एक गौरचन्द्रिका से परिचय प्राप्त कीजिए।

महाकवि कालिदास ने 'रघुवंशम्' के शुरू में लिखा है, 'क्व सूर्य प्रभवो वंशः क्व चाल्प विषया मति.···। कहां तो ऐसा बृहद् सूर्यवंश और कहां मेरी यह मन्द बुद्धि; मानो मैं अज्ञानतावश एक तिनके के सहारे अथाह समुद्र पार करना चाहता हूं!'

उसी तरह आज कांचन कामिनी के बारे में लिखते हुए मेरी भी वही

दशा हो रही है। वही कांचन कामिनी, जिसने कितने ही राजा-महाराजाओं एव कितने ही जमीदारों के दिलों पर राज किया है। कितने ही राज्यों के उत्थान व पतन का कारण बनी है। क्या मैं उसका विवरण सहित ठीक-ठीक वर्णन कर सकूंगा ? जिसके जीवन का कुछ अन्तिम अंश ही मुझे मालूम हो, जिसका पूर्व-परिचय मेरे लिए बिलकुल अज्ञात हो, जिसे मैंने कभी देखा ही न हो, जिसकी परिणति, वियोगान्त या मिलनान्त कुछ भी मैं आज तक नहीं जान पाया, उसके बारे में कुछ कहना क्या सहज है ?

इसके अलावा एक बात और है।

मुझे याद है कि एक बार मेरा छोटा लड़का एक काबुलीवाले को रोते देखकर हंस पड़ा था। यह भी याद है कि बचपन में मैं भी एक चीनी का गाना सुनकर हंस दिया था। हमारी भाषा और व्यवहार प्रचलित चीनी-जगत् के साथ मेल नहीं खाती, शायद इसीलिए विजातीय दुःख-सुख हमारे रस-बोध को स्पर्श नहीं करता। अगर यह सच नहीं, तो फिर जो बात औरों को रुला देती है, वही हमें हंसाती क्यों है ? किसीको अभिभूत कर देती है और किसीको स्पर्श तक नहीं करती, ऐसा क्यों ? बादल देखकर सभीके मन-मयूर नाच उठते हों, ऐसी बात नहीं है। या सूर्य के उदय होते ही सबका जागना आवश्यक हो, ऐसा नियम भी नहीं है। गर्मियों के मौसम में और लोग जब पसीने से सराबोर हो घबराए-से रहते हैं, तब ऐसे ही मौसम की एक दोपहर को मैंने एक साहब को कोट-पैण्ट पहने हुए बड़े इत्मीनान से टहलते देखा है। मैं चाय कभी नहीं पीता, पर मेरी पत्नी चाय बिना एक दिन भी नहीं रह सकती। यद्यपि हम दोनों एक ही घर में एक साथ रहते हैं। परमहंस देव ने कहा भी है कि, "किसी एक की घड़ी किसी दूसरे की घड़ी से मेल नहीं खाती। पर इससे क्या समय कहीं अटक जाता है ?"

फिर भी मुझे शक होता है, क्योंकि मैं सोचता हूं, जो कुछ मुझे अच्छा लगता है, वह अगर औरों को ठीक न लगा, तो ? जो सुर मेरे सितार में बजते हैं, वे सुर अगर किसीके मन में कोई अनुभूति न जगा सके, तो ? या मैं

जिसको लेकर इस कहानी की रचना करूंगा, आप अगर उसे पहचान ही नहीं सके या उसके सुख-दुःख में आप लोगों के दिल में खुशी या दुःख का कोई भाव जाग्रत् न हो, तब फिर? कितने ही दिनों के सोच-विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज तक कभी किसीने भी इस विषय पर नहीं लिखा है। जिस किसीने भी लिखा है, बस तुम्हारी-मेरी बात, या तुम्हारे-मेरे गुण-दोषों की आलोचना, या तुम्हारे-मेरे पड़ोसी-पड़ोसिनों के गुण-दोषों की ही चर्चा की है। या फिर किसी राजा, महाराजा, राजाधिराज और रानी, पटरानी या महारानी आदि के बारे में, अथवा जनता, पाठक, कर्जदार, किसान, मजदूर, कुली आदि के बारे में ही सबने लिखा है। या फिर लड़की-दामाद, सास-ससुर, घर-बाहर, देश-विदेश के बारे में भी लोगों ने लिखा है, पर किसीने भी ऐसी कहानी कभी नहीं लिखी।

जब बंगला-साहित्य में ही आज तक ऐसी कहानी किसीने नहीं लिखी है, तो फिर मैं ही लिखूं, ऐसा कौन-सा मैं महान् लेखक बन गया हूं, यही सोचकर बहुत बार लिखना चाहकर भी नहीं लिख सका। मैंने सोचा कि जिस देश के व्यक्ति के बारे में मैं लिखना चाहता हूं, उसके बारे में वहां के लोगों को ही लिखने दो। मैं तो अपने देश के लोगों पर ही लिखूंगा। क्या मैं कभी उनके देश गया हूं? और फिर क्या किसी देश में सिर्फ आने-जाने-भर से ही वहां के लोगों पर कहानी लिखना सम्भव है? किसी भी देश से खून या नाड़ी के रिश्ते बिना क्या उस देश को समझ लेने का दावा किया जा सकता है? पचासों बरस तक एकसाथ एक ही सेज पर सोकर भी तो बहुत-से लोग अपनी स्त्री को पूर्णतया नहीं समझ पाते। सिर्फ समझना ही बड़ी बात नहीं है, बल्कि उसके साथ-साथ अपने को किसीसे परिचित कराना, या अपने परिचित से तुम्हारे परिचित को एकाकार कराना भी जुड़ा हुआ है। तुम्हें न पहचानने पर भी ऐसा लगेगा कि पहचान लिया है, तब तुम्हारे परिचित और हमारे परिचित में कोई भेद नहीं रहेगा। और इतना कर पाना क्या मुझसे सम्भव होगा?

मैं अलकेश दा को जानता था और अलकेश दा के पिता को भी।

अलकेश दा की मां को भी जानता था। लेकिन अलकेश दा की पत्नी को? हां, उसी कांचन कामिनी को? वही जो मेमसाव कहलाती है। वह साड़ी पहनकर भी मेमसाव कहलाती है, मांग में सिन्दूर भरकर भी मेमसाव, और पैरों में महावर रचाकर भी मेमसाव। असली विलायती मेमसाव है। जिन मेमसाहिवाओं को हमने ग्रैंड होटल और चौरंगी पर उस दिन देखा था और जिनको देखते ही दूर खिसक गए थे, जिनके विजातीयत्व की हम उपेक्षा करते आए हैं; यह भी उसी जाति की मेमसाहव थी। क्या उसको मैं शब्दों के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत कर सकूंगा?

हमारे स्कूल के मास्टर रोहिणी वावू कहा करते थे, 'अच्छा, वताओ तो, वंगाल के किस जिले में रेलवे-लाइन नहीं है?'

रोहिणी वावू भूगोल के मास्टर थे। वे नक्शे की ओर इशारा करके पूछते, 'वताओ तो, कृष्ण नगर कहां है?' मैं समूचा नक्शा छान मारता, पर नक्शे का कहीं ठौर-ठिकाना भी नहीं मिलता मुझे। लाल, नीले, पीले रंगों की तरंगों से मेरी नजरें धुंधली और कमज़ोर-सी हो जातीं और मैं परेशानी के अथाह सागर में डूबने-उतराने लगता।

लेकिन जव वे यह पूछते, 'अच्छा वताओ, इंग्लैण्ड की राजधानी का नाम क्या है? या लन्दन के किस हिस्से में विन्सेंट स्क्वायर है? या वहां जाड़े की रातों में कितनी वरफ गिरती है? अथवा वहां के लिस्टर स्क्वायर में कौन लोग रहते हैं? लिस्टर स्क्वायर की चौतल्ला विल्डिंग में कौन रहते हैं? उनका नाम क्या है? और वे कितने भाई-वहन हैं? उनकी दीदी नोरा स्मिथ के साथ कलकत्ते के निवासी अलकेश मित्र का क्या सम्पर्क है?' तो इन प्रश्नों का मैं फटा-फट जवाव दे सकता था। विन्सेंट स्क्वायर की वस्ती में जो लड़के-लड़कियां रहते थे वे सव कैसे कपड़े-लत्ते पहनते थे, यह भी मुझे मालूम था। वड़े रास्ते के शो-केश में टंगे मोज़े, गाउन आदि की क्या कीमत है, यह भी मुझे कंठस्थ था। जवकि मैं विन्सेंट स्क्वायर कभी नहीं गया हूं। विन्सेंट स्क्वायर तो दूर, मैं तो वंगाल से ही वाहर कहीं नहीं गया हूं। हमारे दूर के रिश्ते में ताऊ के लड़के अलकेश दा

को छोड़कर विलायत भी कभी कोई नहीं गया। फिर भी मैं वहां के बारे में सब-कुछ जानता था और यह सब मुझे मुंहज़बानी याद था।

पर उम्र बढ़ने के साथ-साथ सब कुछ बदल जाता है। इतने दिनों में मैं अलकेश दा की पत्नी की बात भी प्रायः भूल ही बैठा था। इस बीच कांग्रेस, पाकिस्तान और हड़तालों से सम्बन्धित कितनी ही घटनाएं इस पृथ्वी पर घट चुकी। इन बड़ी-बड़ी घटनाओं के दबाव से दुनिया की छोटी-मोटी घटनाएं न जाने कहां दब-चिपकर गायब हो गईं, किसीके पास इसका कोई हिसाब नहीं है। मेरे पास भी नहीं। और लोगों की तरह मैं भी इस दुनिया के पंच तत्त्वों द्वारा बदल दिया गया। मैं भी बड़ा हुआ। मेरी भी गृहस्थी हुई।

और उसके बाद एक दिन…।

एक दिन मैं राजस्थान की ओर घूमने गया था।

अजमेर से आबू रोड का एक रात का सफर है। रात को खा-पीकर ट्रेन में बैठो और रात-भर बड़े आराम से सोओ। सुबह आठ-नौ बजते न बजते आबू रोड स्टेशन पहुंच जाओगे। ऐसा लगेगा, जैसे हम सफर में आनेवाले मरुभूमि के पहाड़ आदि सबको पीछे छोड़कर बिलकुल हरियाली के कुंज में पहुंच गए हैं।

कहां जाऊंगा या कहां ठहरूंगा, कुछ भी तय नहीं था। इसीलिए आबू रोड स्टेशन पर उतरने से पहले मैंने इस बारे में तय कर लिया था। लेकिन जब ट्रेन से उतरा तो सब गड़बड़ हो गया। लगा, किसी राजा-महाराजा के बड़े-बड़े माल-असबाब उसी गाड़ी से उतारे जा रहे हैं। प्लेटफार्म के सारे कुली उसीमें व्यस्त थे। आखिर मैंने अपना सूटकेस और बिछौने का बंडल स्वयं ही घसीटकर प्लेटफॉर्म पर उतारा, और फिर बड़े असहाय भाव से एक कुली की उम्मीद में इधर-उधर चारों ओर नज़रें

दौड़ाई। पर मेरी ओर किसीका ध्यान ही नहीं था। तब तक उधर सोने-चांदी से जड़ित एक पालकी आ चुकी थी। इसके अलावा, बहुत-सा लाव-लश्कर और सिपाही-प्यादे भी थे। सबके हाथ में मोटे-मोटे लट्ठ थे। लाल-नीले, रंग-बिरंगे धोती-घाघरे की अनोखी राजपूती पोशाकों से सज्जित स्त्री-पुरुषों से पूरा प्लेटफॉर्म भरा पड़ा था। पीछे के लगेज-वैन से बड़े-बड़े सन्दूक उतारे जा रहे थे। और उनकी साइज़? तौबा! लोग ट्रेन में सफर करने के लिए हल्की चीजें साथ लेना पसन्द करते हैं। पर इनका ढंग अनोखा ही था। पीतल के चार पिंजरों में पक्षी, तीन में बिल्ली तथा दो में कुत्ते थे।

मैंने एक टिकट-चेकर को पुकारा, 'सुनिए, चेकर जी! ...'

पर उस वक्त किसको मेरी बात सुनने की फुरसत थी! स्टेशन-मास्टर स्वयं वहां खड़े होकर यह सारा नजारा देख रहे थे। उधर गार्ड लाल झंडी ऊंची किए खड़ा था। मुझे लगा कि यहां किसीसे सहायता चाहना एक बहुत बड़ी विडम्बना है। कलकत्ते में एक मित्र ने कहा था, 'आबू रोड पहुंचकर स्टेशन के बाहर बस की टिकट ले लेना। उसके बाद तुम होटल या धर्मशाला जहां जाना चाहोगे वे तुमको वहां पहुंचा देंगे। एक अच्छा-सा गाइड साथ ले लेना; बस, फिर कोई चिन्ता नहीं।'

मैं सोच रहा था, कहीं ऐसा न हो कि आखिर में बस भी यथासमय छूट जाए, और मुझे दिन-भर यहीं रहना पड़े।

अचानक हाथ में लट्ठ लिए एक पगड़ीधारी व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा हुआ और बहुत ही सम्मान सहित मुझे सलाम किया। फिर एक मुड़ा हुआ कागज़ मेरी ओर बढ़ाकर बोला, 'मुझे हुजूराइन ने भेजा है।'

'हुज़ूराइन?' मैं एकदम हक्का-बक्का-सा हो गया। यह हुज़ूराइन भला कौन है? किस बात को उसने चिट्ठी भेजी है? आखिर मैंने पूछ ही लिया, 'हुज़ूराइन कौन है, भाई?'

पत्र पढ़कर मेरी समस्या का समाधान हो गया।

पत्र में लिखा था, 'देवर जी, तुम यहां आए हो, यह मैं देख चुकी हूं।

मैं भी अभी इसी गाड़ी से यहां पहुंची हूं। तुम्हें होटल में रहने की जरूरत नहीं है। मेरी गाड़ी आई है। इस आदमी के साथ चले आओ। उसके बाद मेरे हवामहल में रहने का इन्तज़ाम हो जाएगा। वहीं मुलाकात होगी। तुम्हारी मेम भाभी।'

उस व्यक्ति ने कहा, 'राजा साहब नहीं आ सके, हुजूर।'

मैंने पूछा, 'अच्छा, पर राजा साहब हैं कहां ?'

'फतेहगढ़ में।'

उसके बाद फिर बोला, 'चलिए हुजूर, हुजूराइन की गाड़ी बाहर तैयार खड़ी है।'

फिर न जाने कहां से दो व्यक्तियों को बुलाकर उनके सिर पर मेरा सामान उठवा दिया। मैंने प्लेटफॉर्म पर चारों ओर नज़र दौड़ाई तो देखा कि इस बीच बड़े-बड़े बक्स-सन्दूक, कुत्ते-बिल्ली सब नदारद हो गए हैं। पालकी के चारों तरफ झालरें पड़ चुकी थीं और उसे आठ मज़दूर अपने कंधे पर रखकर चल पड़े थे।

बाहर बस, मोटर और तांगे का अड्डा था। वहां की सारी भीड़ से बच-बचाकर उस व्यक्ति ने मुझे एक बहुत बड़ी मोटर में बैठा दिया। सामान कहां रखा गया, यह सब मुझे देखने की जरूरत नहीं थी। मैंने देखा कि कुछ दूर पर एक और बड़ी गाड़ी खड़ी है। उसीके सामने बड़े-बड़े पर्दों की ओट में सलमे-सितारों का ओढ़ना ओढ़े एक नारी-मूर्ति पालकी से उतरी। उसके पांवों में सुनहरी चप्पलें थीं। बारीक ओढ़नी पर धूप पड़ने से हीरे पन्ने के गहने चमचमा रहे थे। एक के बाद एक करके चार गाड़ियां स्टार्ट हुईं। आगे-पीछे अन्य दो गाड़ियां, और बीच में हुजूराइन की गाड़ी; फिर मेरी गाड़ी।

मैं सोच भी नहीं सकता था कि इतने दिनों बाद, करीब एक साल के बाद, अचानक इस तरह मेम भाभी से मुलाकात हो जाएगी।

वह दृश्य आज भी मेरी आंखों के सामने स्पष्ट झिलमिला उठता है और इसके साथ ही मेम भाभी का वह चेहरा भी तैर जाता है। लम्बाई

साढ़े पांच फुट। दूध की तरह उजला वदन। गाल पर कहीं कोई फुंसी या निन्न तक भी नहीं। मोटे फूले-फूले-से होंठ। आंखों की कमल सदृश पंखुड़ियां और हाथों की वे नरम-नाजुक अंगुलियां! और उन अंगुलियों के छोरों पर पॉलिश किए हुए लम्बे-लम्बे नाखून। मक्खन सरीखे हसीन चेहरे पर एक छोटा-सा सिर। सिर पर सुनहरे वालों का एक गुच्छा, जिनमें बंगाली लड़कियों जैसी मांग निकाली गई थी। मांग में छोटी-सी सिंदूर की रेखा। यह चेहरा और यह रूप, मेरे मन-प्राण में इस कदर घुल-मिल गया है कि इसे मैं कभी भूल सकूंगा, ऐसी वात मैं सोच भी नहीं सकता।

कालिदास सौन्दर्य-वर्णन में इतने पटु थे, लेकिन 'रघुवंशम्' के पन्नों में जनकदुलारी के रूप का वर्णन करने में इतने कृपण क्यों बन गए, पता नहीं। हो सकता है, सीता के चरित्र में ही इतना सौन्दर्य भरा पड़ा था कि उनका शारीरिक सौन्दर्य वहां गौण हो जाता हो। अगर ऐसा न होता तो 'वराहरूपी भगवान विष्णु द्वारा प्रलय पयोधि से उद्‌भूत धरित्री देवी की तरह' या 'फिर वर्षा ऋतु के अन्त में मेघपुंज से मुक्त शरत् की ज्योत्स्ना-सी' बस, इतना ही कहकर क्यों अन्त कर दिया? मानो अधिक न कहने से भी उनके सौन्दर्य का वर्णन हो गया हो। मानो अधिक कहना ही अनुपयुक्त हो जाता।

जब अलकेश दा मेम भाभी से शादी करने के पश्चात् सर्वप्रथम घर लौटे थे, तब मेम भाभी को देखकर मुझे भी ऐसा ही लगा था। इससे पहले मैंने किसी भी मेमसाहब को हमारे घर की बहुओं जैसी पोशाक पहने नहीं देखा था। बल्कि वह भी उस समय तक ठीक तरह से साड़ी पहनना नहीं सीख पाई थी। उसे ठीक तरह से घूंघट भी निकालना नहीं आता था।

पर उस दिन तो एक और ही पोशाक में देखा था उसे। सचमुच बिलकुल अनोखी पोशाक थी उसकी। भाभी को मैंने कितनी बार कितनी पोशाकों में देखा है, इसका कोई हिसाब नहीं। और पोशाक बदलने के साथ-साथ मनुष्य में भी कितना आमूल परिवर्तन आ जाता है, इसका भी

कोई हिसाब नहीं।

तो अब असली घटना की चर्चा करूं।

मुझे याद है, मेम भाभी कहा करती थी, 'लन्दन में मेरे पिताजी के पास दो-दो कारें हैं। पिताजी रोज सुबह मुझे कार में बैठाकर घुमाने ले जाते। मेरी एक बगल पिताजी बैठते और दूसरी बगल मां।'

'और तुम?'

मेम भाभी से विन्सेंट स्क्वायर की और भी बहुत-सी कहानियां मैंने सुनी थी, जैसे जिस दिन बहुत बरफ गिरती, उस दिन घर से बाहर निकलना नहीं होता था। उस दिन तो बस घर में बैठकर कॉफी पीना और मां से कहानियां सुनना ही होता। मां का शरीर स्थूल था। अतः सारे भाई-बहन मिलकर भी मां को चारों ओर से घेरकर पकड़ नहीं सकते थे। मेम भाभी के घर पर कितने ही लड़के आते थे। बहुत दूर-दूर से आते वे सब। सभी कहते कि अगर मेम भाभी से उनकी शादी नहीं हुई, तो वे आत्म-हत्या कर लेंगे। आदि-आदि।

मैं पूछता, 'तो फिर भैया से तुम्हारी मुलाकात किस तरह हुई, भाभी?'

तब मैं बहुत छोटा था। अलकेश भैया की बहू को देखकर मेरी छोटी मौसी की आखें विस्मय से फैल गई थीं। वे बोली थीं, 'छोटी दीदी, गाल उसके ऐसे गोरे हैं कि क्या बताऊं; बिलकुल जैसे आपेल। देखते ही मन करता है, टीप दें।'

बड़ी ताई कहतीं, 'बहू देख आए भई; आहा! ...'

मां ने तब तक मेम भाभी को नहीं देखा था। अत: पूछ बैठीं, 'देखने में कैसी है, बड़ी दीदी? मांग में सिंदूर लगाती है?'

रंगा चाची ने कहा, 'उड़ दैया! उसके हाथ में तो शंख की चूड़ियां भी थीं। जैसा बदन का रंग है, वैसे ही गहने पहनती है। कच्चे केले के रंग की बनारसी साड़ी में वह ऐसी फब रही थी कि बस, पूछो मत। और सुनो, सबका चरण-स्पर्श करके प्रणाम भी किया!'

बड़ी ताई ने कहा, 'ठीक ऐसी लग रही थी मानो अन्नपूर्णा की तस्वीर हो। ओह क्या रूप था! ठीक वैसी ही, जिसे कांचन कामिनी कहते हैं।'

मा ने कहा, 'है भी तो सचमुच में मेमसाहब ही न! फिर गोरी नहीं तो क्या काली होगी?'

रंगा चाची ने कहा, 'पर मेमसाहब होने से ही क्या कोई इतना गोरा होता है? मेरे घर के बगलवाले मकान में रहने वाले एक व्यक्ति का छोटा लड़का विलायत से मेम ब्याह लाया है। वाह, जैसा रंग है, वैसी ही शरीर की गढ़न है। एक पैर पर दूसरा पैर रखकर चाय पीती है। अन्त में सास की हालत इतनी खराब हुई, पर बहू के हाथों से सेवा करवाना तकदीर में नहीं लिखा था। एक साल पूरा होते न होते बेचारी चल बसी।'

रंगा चाची के पिता के घर के बगलवाले मकान के छोटे लड़के की बहू के बारे में न जाने मुझे क्यों उत्सुकता पैदा हो गई! मैं भी मां के पास ही बैठा सारी बातें ध्यान से सुन रहा था। मैंने पूछा, 'फिर क्या हुआ, रंगा चाची?'

मेरी ओर अब तक किसीका ध्यान नहीं था। अब मेरी ओर देखकर रंगा चाची ने कहा, 'हाय अम्मां, तू शायद सब बातें सुन रहा था। शैतान कहीं का, सारी बातों में कान देता है!'

अब तो मेरी उत्सुकता और भी बढ़ गई। मैंने कहा, 'बताओ न रंगा चाची, उसके बाद क्या हुआ?'

पर तब तक रंगा चाची यह प्रसंग भूल चुकी थी। बोली, 'किसका क्या हुआ, रे?'

मैंने कहा, 'तुम्हारे पिता के घर के बगलवाली उस मेम बहू का?'

बड़ी ताई ने कहा, 'तो तू वही बात मन ही मन सोच रहा है अब तक? देख रही हो न अपने लड़के की बुद्धि! यह बड़ा होकर सचमुच ही मेम ब्याहकर लाएगा। देख लेना तुम?'

मां ने कहा, 'हुंह, मेम लाएगा! अगर मेम-वेम लाया तो झोंटा पकड़ बाहर न निकाल दूंगी? मैं अपने चौके में भला मुरगी-गाय का गोश्त

लाने दूंगी ?'

'अगर लड़के को वही पसन्द हो, तो तुम क्या करोगी ?'

मां ने कहा, 'ऐसे लड़के को चीरकर नहीं रख दूंगी ? सात जन्म तक बांझ होना मंजूर है, पर विलायती बहू की जी-हुजूरी करना मेरे वश का रोग नहीं। देवी दुर्गे, रक्षा करना मां!'

रंगा चाची कहने लगी, 'और फिर विलायती बहू का वह सिंगार-पटार, बाप रे बाप! अपनी उस पड़ोसिन विलायती बहू के बारे में मैं क्या बताऊं? अब तो वे सब अलग हो गए हैं। विलायती बहू के प्यार में डूबकर, उसकी ख्वाहिशें पूरी करते-करते उस लड़के ने मकान भी गिरवी रख दिया। मैं पिछले दिनों अपनी मां के यहां गई थी तो सुना कि मेम साहिबा भर्तार के मुंह पर लात मारकर विलायत चली गई है।'

मां ने कहा, 'देख लेना, अलकेश की बहू भी एक दिन विलायत चली जाएगी। मेरी आज की कही बात याद रखना। काला सांप भी भला कहीं दूध-केले खिलाकर पाला जाता है?'

बड़ी ताई ने कहा, 'अच्छा तो अब चलूं। साड़ी-ब्लाउज धोकर सुखा दूं। उसने चरण-स्पर्श करके प्रणाम जो किया है! बहुत घृणा हो रही है। चाहे जो भी हो, है तो वह आखिर मलेच्छ ही न!'

लेकिन अलकेश भैया की तकदीर अच्छी थी।

मझले ताऊजी तब जिंदा थे। किसी जमाने में वे बहुत शौकीन व्यक्ति थे। नुकीली मूंछें रखते थे। यह भी सुना है कि जब वह जवान थे, तब तबला बहुत अच्छा बजा लेते थे। फिर बड़े बाजार की ओर अपनी बैठक जमाते-जमाते न जाने कैसे रूई के कारोबार की ओर नजर पड़ गई। बस, रूई के व्यापार में थोड़े-से रुपये लगाकर प्रथम महायुद्ध के समय उन्होंने बहुत रुपये कमा लिए। फिर तो अपना मकान बनवा लिया, कार खरीद ली। चूंकि रूई ने उनको उन्नति की ओर अग्रसर किया था, इसलिए उन्हें अधिक सम्मान नहीं मिला। रूई के व्यापार की बात सुनकर लोग-बाग नाक-भौं सिकोड़ने लगते। कोई अगर पूछे, 'आप क्या काम करते हैं?' तो

यहीं न बताना पड़ेगा कि रूई का व्यापार !

वे बेटे से कहा करते, 'सारी ज़िन्दगी रूई का कारोबार करना पड़ेगा, ऐसा कोई आवश्यक तो नहीं है।'

लोग-बाग कहते, 'देखो, रूई इतनी तुच्छ वस्तु है; लेकिन उसीमें इनके पास इतना अधिक पैसा हो गया !'

स्कूल में पीठ पीछे से अलकेश को दिखाकर लड़के आपस में कहते, 'वह देखो, वह रहा रूईवाले का लड़का !'

ऊपर से मंझले चाचा, पिताजी और चाचाजी आदि से वे कहा करते, 'तुम लोग सिर्फ नौकरी ही करते रह गए, पर व्यापार का मर्म नहीं समझ सके। अरे, चाहे रूई हो या और कोई चीज़, पैसा होने से ही प्रेस्टिज बढ़ती है।'

मंझले ताऊजी कहते, 'तुम्हारी इन बातों में आकर मैं अपने लड़के को इस रूई के कारोबार में नहीं घुसने दूंगा।'

मंझली ताई के बस एक ही लड़का था—अलकेश। उन्होंने अपने पति को बेटे का नाम रखने की आज़ादी नहीं दी। उन्होंने कहा था, 'अगर तुम नाम रखोगे तो लोग नाम सुनकर ही समझ जाएंगे कि यह रूईवाले का बेटा है।'

अपने पिता के घर जाकर मंझली ताई ने किसी साहित्यिक या कवि को पत्र देकर बुलाया था, तब जाकर लड़के का नामकरण किया गया था। वही लड़का बड़ा हुआ। हां, वही अलकेश ! एक दिन आई० ए०, बी० ए० पास भी हो गया। फिर मंझली ताई ने उसे बैरिस्टरी पढ़ने के लिए विलायत भेज दिया। अगर सच कहा जाए तो यह सब जो कुछ हुआ, मंझली ताई के कहने-सुनने से ही हुआ।

एक साल निकल गया, फिर दूसरा भी निकल गया; लेकिन लड़का नहीं लौटा।

रास्ते में किसीसे मुलाकात होने पर वह पूछ लेता, 'मित्तर साहब, अलकेश कब लौट रहा है ?'

मंझले ताऊजी जवाब देते, 'यही, इसी जनवरी महीने में।'

फिर भी एक के बाद एक कई जनवरी महीने निकल गए।

तब ताऊजी यों कहने लगे, 'जितने दिन वहां रहेगा उतना अच्छा ही तो है। कुछ सीखेगा। समझेगा। आदमी बन जाएगा। यहां आते ही तो घर-गृहस्थी का चक्कर लग जाएगा। मैं स्वयं भी तो शादी करके अनुभव कर चुका हूं। शादी हुई और बाल-बच्चे हुए; उसके बाद तो बहुत-से झमेले हैं ही।'

फिर न जाने रूई के कारोबार में कुछ ऐसी बात हुई या उनके शरीर ने इतनी मेहनत करने से इकार कर दिया कि अचानक उन्होंने रूई की दूकान उठा दी। गाड़ी भी बेच दी। दिन-भर तो घर के भीतर रहते और शाम को लाठी टेकते हुए घूमने निकल जाते। रात दस बजते न बजते घर की सारी बत्तियां बन्द हो जातीं। स्वास्थ्य भी दिन पर दिन खराब होता गया। मूछों के सूई जैसे दोनो नुकीले छोर झूल आए। रात को कभी नींद खुल जाती तो आहें भरते। अगर बाहर निकलना बहुत ही आवश्यक हो जाता तो हांफते हुए-से पोस्ट ऑफिस की तरफ चले जाते, और लड़के के नाम लन्दन मनीआर्डर लगा आते।

सतीविलास बाबू नाक पर चश्मा चढ़ाकर प्रश्न करते, 'लड़का कब लौट रहा है, मित्तर साहब?'

मंझले ताऊजी कहते, 'यही अगस्त के अन्त तक।'

और आखिर लड़का लौट भी आया, पर अगस्त के अन्त में नहीं। जनवरी में भी नहीं। एकदम से तीन साल बाद, और वह भी बहू लेकर। बिलकुल मेम पत्नी!

पर तब तक मझले ताउजी गुजर चुके थे। हां, ताई अवश्य जीवित थी, पर मर जाना ही उनके हक में शायद बेहतर होता।

मुहल्ले की लड़कियां कहती, 'लो, अब बहू आकर तुम्हारी सेवा करेगी।'

मंझली ताई कहती, 'अब क्या हमारा जमाना रहा है, बेटा! अब

ही देखो कि वहू मेरी सेवा करती है, या वहू की सेवा कोई करता है।'

बात वड़े ही मान के साथ कही गई थी, पर मेम वहू को देखते ही ने जितने से प्राण बचे थे, वे भी डूव गए।

अलकेश भैया समझदार व्यक्ति थे। हावड़ा स्टेशन से वाहर निकल होंने एक वनारसी साड़ी, शंख की चूड़ियां, सिंदूर आदि सव खरीद ए। विलकुल वंगाली परम्परा के अनुसार पत्नी को सजा-संवारकर घर हुंचे। वहू-वेटियों का दल एकदम से अकचका गया। इस घर, उस घर, स मुहल्ले, उस मुहल्ले, सव जगह यह खवर फैल गई। सव मुंह वाए म वहू की ओर देख रहे थे। वंगला वोली ही नहीं समझती तो वात कोई कैसे करे ?

मेम भाभी ने विलकुल हतप्रभ होकर जव सास के पांव छूकर प्रणाम किया, तो देखती है कि सभी की हंसी रोके नहीं रुक रही है।

मंझली ताई आंसू वहातीं और कहतीं, 'मेरी सेवा क्या करेगी, वह तो मेरी वात ही नहीं समझती। पानी का लोटा मांगू तो चाय का कप ला देती है। मेरी अच्छी मौत है।'

मंझली ताई का तो मरण था, पर पड़ोसियों को चर्चा की अच्छी खुराक मिल गई थी।

कोई कहता, 'उनकी मेम वहू की नई खवर क्या है, भई ?'

कोई कहता, 'सुना है, मेमसाहिवा वंगला सीख रही हैं ?'

एक कहता, 'रंगा दीदी से सुना है कि मेमसाहिवा छिप-छिपकर सिगरेट पीती हैं ?'

तो दूसरा कहता, 'मैंने सुना है कि अलकेश भैया वाजार से गुप-चुप टिन के डिव्वे में गाय का गोश्त लाकर खिलाता है।'

कोई कहता, 'तो करे भी क्या, भई ? अगर किसीको सिगरेट पीने की आदत हो, तो क्या नहीं पीएगी ? यही, जैसे हमें चाय पीने का नशा है।'

एक दिन मेरे वड़े भाई अलकेश भैया के घर गए थे। वापस आए तं

बोले, 'यह देख, चॉकलेट !'

मैंने पूछा, 'किसने दी ?'

भैया ने कहा, 'मेम भाभी ने।'

मेम भाभी ने ? मेरी भी बहुत इच्छा हुई मेम भाभी को देखने की। सबके मुंह से मेम भाभी के बारे में सुन-सुनकर अपनी नजरों में स्वयं ही मैंने उनका खाका खींच रखा था। मुझे ऐसा लगता, मखमल-सा मुलायम शरीर, दूध-सा उजला रंग, बनारसी साड़ी पहने हुए, माथे पर सिंदूर की बिन्दी ! और ताई का दिया हुआ नाम, कांचन कामिनी ! यानी सोने के रंग की देहवाली !

पर मुझे बहुत शर्म आती मेम भाभी के पास जाने में।

जिस दिन मंझली ताई मरी थीं, उस दिन सिर्फ दूर से देखा था मैंने मेम भाभी को।

अलकेश भैया ने तो रो-रोकर समुन्दर भर दिया। देखा, मेम भाभी भी स्तब्ध, काठ के पुतले-सी एक कोने में खड़ी हैं। ऐसी घटना उसने आज तक तो कभी देखी नहीं थी न ! एक महीने तक शोक मनाया गया। अलकेश भैया का कोर्ट जाना भी बन्द हो गया।

पर लोगों का ध्यान उस ओर नहीं था। सबको मेम भाभी के प्रति उत्सुकता थी। सब कहते, 'शायद मेमसाहिबा भी अलकेश के साथ शोक मना रही हैं !'

बड़ी ताई कहतीं, 'हां भई, दिखता तो यही है। स्वयं बनाकर मिट्टी के सकोरे में मटर की दाल, भात और उबला हुआ कच्चा केला खाती है। नौकर-चाकर को भी नहीं छूने देती।'

बहुत लोग इस बात का विश्वास नहीं करते। कहते, 'यह सब लोक-दिखावा है। सच बात तो यह है कि कमरे में भीतर से सांकल लगाकर टिन में से मांस निकालकर खाती है।'

रंगा चाची कहती, 'अगर यह सच नहीं, तो शाम को मोटर में बैठकर कहां जाती है, जरा मैं भी तो सुनूं ? अवश्य ही होटल में मांस निगलकर

आती है।'

पिताजी कहते, 'कहा नहीं जा सकता, कोई-कोई मेमसाहव भली भी होती है। हमारे ऑफिस के डिकिन्सन साहव की पत्नी काली-पूजा का प्रसाद खाया करती थी।'

मां कहती, 'तव तो लड़की के रूप में यह मेम प्रह्लाद का ही अवतार है, दैत्य-कुल में प्रह्लाद ने ही लड़की के रूप में जन्म लिया है।'

अलकेश भैया तव कोर्ट गए हुए थे। मेरे स्कूल की छुट्टी थी। मां को भी किताव पढ़ते-पढ़ते नींद आ गई थी। खिड़की की राह वाहर निकलकर मैं सीधा मेम भाभी के घर जा पहुंचा। सदर दरवाजा खुला ही था। सीढ़ियों से होकर मैं सीधा ऊपर पहुंच गया। कहीं कोई नहीं था। अलकेश भैया के कमरे का दरवाजा उढ़काया हुआ था। मुझे न जाने कैसा डर-सा लगने लगा। धीरे-धीरे दरवाज़े में फांक करके भीतर झांकने ही जा रहा था कि अचानक पीछे से न जाने किसने पकड़ लिया। वोली, 'व्हाट? नाऊ?'

पीछे मुड़कर चेहरा देखते ही मेरा समूचा वदन ठण्डा पड़ गया। मेम भाभी सामने खड़ी थी।

वही फिर मुझसे वोली, 'कम इन!'

मैंने कहा, 'मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता।'

लेकिन मेम भाभी मेरा हाथ पकड़कर सीधे कमरे में ले गई। स्वयं एक चेयर पर वैठ गई, और मुझे भी अपने सामने एक चेयर पर वैठा लिया।

मेम भाभी ने कहा, 'अच्छा, तो मैं वंगला वोलूं, सुनोगे?'

मैंने कहा, 'शायद अलकेश भैया ने तुम्हें वंगला सिखा दी है?'

मेम भाभी ने कहा, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

मेरा नाम सुनकर भाभी ने कहा, 'वेरी गुड, बहुत अच्छा!' फिर बोली, 'तुम भी मित्र, मैं भी मित्र। मेरा नाम है श्रीमती नोरा मित्र।'

इतना कहकर वह उठी और एक इज़ी-चेयर से पीठ टिकाकर बैठ गई। फिर मुझसे बोली, 'भई, तुम्हारी चेयर मेरी चेयर के नज़दीक खिसका लो।'

मैंने कहा, 'मुझे चॉकलेट नहीं दोगी, मेम भाभी? मेरे मंझले भाई को तो दी थी?'

मेम भाभी ने कहा, 'चॉकलेट तो सारी खत्म हो गई, भाई। न्यू मार्केट से और चॉकलेट खरीदकर लाऊंगी। तुम कल फिर आना।'

उसके बाद मेम भाभी ने कहा, 'मैं तो तुम्हें चॉकलेट दूंगी, और तुम मुझे क्या दोगे, ज़रा मैं भी तो सुनूं?'

मैं मेम भाभी से बहुत ही सटकर बैठा था। मेम भाभी की देह से एक विचित्र-सी महक निकल रही थी। आहा, कितनी मीठी महक थी वह! चॉकलेट से भी ज्यादा मीठी। हाथों की चमड़ी कितनी मुलायम थी! उस समय उसने एक फ्राक पहन रखी थी, जो घुटनों तक झूल रही थी। फ्राक तो मझली दीदी भी पहनती है, पर वह तो देखने में इतनी अच्छी नहीं लगती।

मेम भाभी ने कहा, 'इस तरह क्या देख रहा है, रे?'

शर्म से मैं धरती में गड़ गया; मैंने नज़र झुका ली।

मेम भाभी ने फिर पूछा, 'बोल न, क्या देख रहा था?'

मैंने कहा, 'सभी मेमसाहिबाएं शायद तुम्हारी तरह ही सुन्दर होती हैं, भाभी?'

मेरी बात सुनकर मेम भाभी खूब हंसने लगी। फिर बोली, 'तुमने कितनी मेमों को देखा है, रे?'

मैंने कहा, 'एक को भी नहीं; सिर्फ तुम्हें ही देखा है। क्या सभी मेम इसी तरह फ्राक पहनती हैं?'

मेम भाभी और ज्यादा हंसने लगी। बोली, 'फ्राक पहनकर शायद मैं

सुन्दर दीखती हूं ?'

मैंने कहा, 'तुम मां की तरह साड़ी मत पहना करो, मेम भाभी ! हरदम फ्राक ही पहना करो।'

मेम भाभी ने जवाब दिया, 'वाह रे, पहनूं कैसे नहीं; अलक जो मुझे साड़ी पहनने को कहता है। वह कहता है कि इस देश में लड़कियां बड़ी होकर फ्राक नहीं पहनतीं।'

मैंने कहा, 'लेकिन साड़ी पहनकर तुम मां की तरह भद्दी जो लगोगी।'

मेम भाभी ने कहा, 'शायद तुम्हारी मां देखने में भद्दी लगती है ?'

मैंने कहा, 'मां तुम जैसी गोरी जो नहीं है। वह बस मामूली-सी गोरी है।'

मेम भाभी ने कहा, 'मां के बारे में कहीं ऐसी बात कही जाती है, पगले ? छी: !' फिर बोली, 'यह देख, क्या मेरी मां की फोटो देखेगा ?'

कहकर उठी और टेबिल से दो फोटो निकाल लाई। बोली, 'यह देख, यह मेरे मां-पिताजी की फोटो है। जब मैंने अलक से शादी की थी, तो मेरे पिताजी नाराज़ हो गए थे; क्योंकि हमारी फैमिली में किसीने भी इण्डियन से शादी नहीं की थी। पर मेरी मां ने मेरा चुम्बन लेकर मुझे बहुत प्यार किया था। इण्डिया आने के समय मैं बहुत रोई थी, भई। क्योंकि मां मुझे बहुत चाहती थी न।'

मैंने पूछा, 'मां के लिए तुम्हारा जी कैसा-कैसा नहीं होता, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'करे भी तो जोर क्या ? अलक ने कहा, उसके मां-बाप उसे इण्डिया लौट आने के लिए बार-बार पत्र लिख रहे हैं। अलक वहां आखिर कितने दिन रहता ? और वहां रहने के लिए उसे भला रुपये भी कौन भेजता ?'

मैंने कहा, 'अलकेश भैया तुम्हें शायद बहुत चाहते थे ?'

मेम भाभी ने जवाब दिया, 'बहुत। मैं भी अलक को बहुत चाहती थी। अलक शैतान जो था।'

मैंने पूछा, 'मेम भाभी, शैतान लड़के क्या अच्छे होते हैं? पर मैं जब शैतानी करता हूं, तो मां मुझे बहुत डांटती है?'

मेम भाभी ने कहा, 'शैतान लड़के मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।'

मैंने कहा, 'मैं इतनी शैतानी करता हूं, इसीलिए तो मां मुझे शैतान कहकर पुकारती है। तब तो मुझे भी तुम प्यार करोगी?'

मेम भाभी ने कहा, 'हां, देख, मैं तुम्हें इस प्रकार स्नेह किया करूंगी। यह देख!'

कहकर मेम भाभी ने मुझे पास खींच लिया और मेरे गाल पर एक दीर्घ चुम्बन कस दिया। आहा, क्या ही आश्चर्यजनक लगा था मुझे! मेम भाभी के होंठ बहुत कोमल थे। लाल-लाल होंठ। बगल के शीशे में देखा कि मेरे गाल पर मेम भाभी के होंठों पर लगे रंग का निशान पड़ गया था।

मुझे याद है, सुबह कोर्ट जाने से पहले अलकेश भैया रोज मेम भाभी का चुम्बन लेते थे। मैं सामने रहता तब भी शर्म नहीं आती थी उन्हें।

अलकेश भैया कहते, 'अरे, यह तो बच्चा है अभी; यह कुछ नहीं समझता।'

मंझली ताई के मरने पर उसी अलकेश भैया ने शोक मनाया। गले में कोरा कपड़ा, खाली पांव, हाथ में आसन। विलायत-रिटर्न होने के बावजूद इस अनुष्ठान में उन्होंने कोई त्रुटि नहीं आने दी। बड़े ताऊजी, रंगा चाचा, पिताजी सभी दंग रह गए। यहां तक कि घर के पुरोहित ने भी कहा, 'मेम ब्याह लाए तो क्या हुआ, लालाजी के मन में देवी-देवताओं के प्रति आस्था और भले-बुरे का ज्ञान है, भैया! पांच सौ रुपये तो सिर्फ ब्राह्मण-दक्षिणा में खर्च किए हैं।'

सब जगह अलकेश भैया के गुण-गान की चर्चा फैल गई।

फिर भी किसी-किसीने कहा, 'चाहे जो भी हो पंडितजी, आप घर जाकर कपड़े बदल डालिए। म्लेच्छ को छुआ है न! तीन जन्म धारण करेंगे तब भी शुद्ध नहीं होंगे।'

पंडितजी ने कहा, 'हां, कपड़े तो अवश्य बदलूंगा। घर जाते ही ये कपड़े धो डालूंगा।'

पंडितजी ने यह भी कहा, 'मैंने भी क्या सहज ही में हाथ फैलाकर दक्षिणा ली है, भैया ? पहले गाय का गोबर खिलाकर मेमसाहिबा को जात में मिलाया, तब जाकर पैर छूने दिया है।'

मैंने एक दिन भाभी से पूछा भी, 'क्या तुमने गोबर खाया था, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने पूछा, 'क्यों रे ? किसने कहा तुमसे ?'

मैंने कहा, 'रंगा चाची ने।'

मेम भाभी ने हंसकर कहा, 'खा लिया तो क्या हुआ ? अगर गोबर खाने से ही कोई मुझे छूने दे, तो गोबर भी खा लूंगी। मुझे कोई भी छूना जो नहीं चाहता, क्योंकि मैं मेमसाब हूं न।'

फिर कुछ रुककर बोली, 'हां रे, यहां से जाने के बाद तू अपने पैण्ट-कमीज़ तो धो लेता है न ?'

मैंने पूछा, 'क्यों ? पैण्ट-कमीज़ क्यों धोऊं ?'

'बिना धोए तेरी मां तुझे घर में घुसने देती है ?'

मैंने कहा, 'मां को तो मालूम ही नहीं है कि मैं तुम्हारे घर आता हूं। मैं पार्क जाने का नाम लेकर तुम्हारे यहां चला आता हूं।'

मेम भाभी ने पूछा, 'अगर तेरी मां को पता चल गया, तो ?'

'मां को कैसे पता चलेगा ?'

मांग में सिन्दूर भरते हुए मेम भाभी बोली, 'मैं तुम्हें इतनी अच्छी क्यों लगती हूं रे ? मैं चॉकलेट देती हूं, इसलिए ?'

मैंने कहा, 'चॉकलेट तो तुम सभीको देती हो, लेकिन क्या सभीको तुम इतनी अच्छी लगती हो ?'

मेम भाभी ने पूछा, 'तब फिर क्या बात है ?'

मैं चुप रहा। मुझे सच्ची बात बताने में शर्म महसूस हुई।

मेम भाभी ने कहा, 'जब मैं अलक के साथ इण्डिया में आई थी, तो

पहले-पहल मुझे कैसा डर लगा था, जानते हो ?'

मैंने पूछा, 'कैसा डर लगा था ?'

मेम भाभी ने बताया, 'यह देश मैंने पहले कभी देखा तो था नहीं; इसलिए विन्सेंट स्क्वायर में सबने मुझे डराना शुरू किया कि इण्डियन लोग बहुत गन्दे होते हैं। चार-पांच शादियां करते हैं। रास्तों में ही शेर-चीतें आदि घूमते रहते हैं। और बहू को सब नौकर-चाकर की तरह खटाते हैं।'

फिर बोली, 'अलक ने मुझे सब कुछ समझा-बुझा दिया था, पर मेरा डर कम नहीं हुआ। फिर जहाज में एक बंगाली बहू से मेरी मुलाकात हुई। उसने मुझे सिखाया कि किस तरह प्रणाम करना चाहिए। किस तरह सास का कहना मानना पड़ता है। सब कुछ सिखाकर वह बोली, वहां किसीके सामने सिगरेट नहीं पीना। लोग बुराई करेंगे।

'फिर उसी बहू ने बताया, सास की चरण-धूलि लेकर माथे से हाथ छुआना। सास-ससुर के सामने पति से बात मत करना, और रात को जब सब खा-पी चुकें, तब कमरे में सोने जाना।'

मेम भाभी ने अपनी पतली-लम्बी अंगुलियों की ओर देखते हुए कहा, 'उसीसे तो मैंने हाथ से खाना सीखा। उसीसे दाल-भात और मछली रांधना सीखा। बहुत ही अच्छी लड़की थी भई, सब कुछ सिखा दिया मुझे।'

फिर माथे पर सिंदूर की एक बिन्दी लगाकर बोली, 'पर यहां आकर तो मैंने देखा कि सब कुछ उससे उल्टा निकला।'

'उल्टा कैसे ?'

'और नहीं तो क्या ? पैर छूकर प्रणाम करने जाओ, तो सभी पांव पीछे खींच लेते हैं। छू देती हूं, तो सब अपने कपड़े धोते हैं। मेरे हाथ का बनाया खाना कोई नहीं खाता। घर में मेरे लिए रसोइया नहीं रहना चाहता। कोई भी हिन्दू नौकर मेरे घर में काम करने को तैयार नहीं।'

मेम भाभी ने फिर कहा, 'इसीलिए जिस दिन रसोइया भाग जाता है,

उस दिन हम लोग होटल जाकर खाना खा आते हैं।'

मैंने पूछा, 'अच्छा मेम भाभी, तुम तो गाय का मांस खाती हो न ?'

प्रश्न सुनकर मानो मेम भाभी हतवाक्-सी हो गई। बोली, 'शायद किसीने यह पूछने को कहा है तुम्हें ?'

मैंने कहा, 'तुम खाती हो कि नहीं, यह बताओ न ?'

'किसने पूछा है, बताओ तो ? तुम्हारी मां ने ?'

मैंने कहा, 'गाय तो भगवती का रूप होती है। गाय खाना क्या अच्छी बात है ? तुम्हीं बताओ।'

मेम भाभी की आंखें छलछला आईं।

मैंने कहा, 'मेम भाभी, अब कभी गाय मत खाना। भैया कहते हैं कि जो गाय खाते हैं, उन्हें बहुत पाप लगता है।'

मेम भाभी ने कहा, 'अच्छा, मुझे पाप ही लगने दो। इससे अगर तकलीफ होगी तो मुझे, तुम्हें क्या ?'

पता नहीं, मुझे उस समय क्या सूझी, मैंने कह दिया, 'अगर तुम्हें तकलीफ हुई, तो मुझे भी तो होगी न !'

सहसा ही मेम भाभी ने मुझे बांहों में भींचते हुए मेरे दोनों गालों का चुम्बन ले लिया और बोली, 'अय-हय, शैतान लड़के ! अच्छा, अब मैं गाय नहीं खाऊंगी, बस न ?'

फिर बोली, 'पर अब तो मैं गोबर खा चुकी हूं, क्या उससे भी शुद्ध नहीं हुई ?'

इसके बाद तो, पता नहीं क्यों, नशा जैसे और भी तेज़ हो उठा। मेम भाभी को जब तक रोज एक बार देख नहीं लेता, तब तक मुझे नींद ही नहीं आती थी। सुबह जब आंखें खोलता, तो सबसे पहले मेम भाभी की याद आती और पढ़ने बैठता तो सिर्फ मेम भाभी की ही तस्वीर आंखों के

सामने नाचती रहती।

स्वप्न में भी मेम भाभी ही दिखाई देती रहती। मेम भाभी अगर मुझसे प्यार से बात नहीं करती, तो मुझे रोना आ जाता। मैं अपना खेल-कूद सब भूल गया। अपने यार-दोस्तों को भी भूल गया।

इसके पहले खेलने के लिए मैंने कितने ही लड़कों के घर जा-जाकर उनकी खुशामद की है। उनके मां-बाप से कितनी फटकारें सुनी हैं। वे लोग कहते, 'जा, जा, अपने घर जा। दोपहर को भी खेल ही सूझता है! तुम्हें लिखना-पढ़ना कुछ नहीं है क्या रे? तेरी मां क्या तुम्हें कुछ नहीं कहती?'

मैं डरकर वहां से भाग आता। फिर दूसरे लड़के के घर जाकर उसे बुलाता। पर वहां भी वही डांट-फटकार सुनकर अपने घर लौट आता। उसके बाद दोपहर के समय अकेले-अकेले ही छत पर आकर मिट्टी लाता, उसे भिगोकर किसी देवता की मूर्ति बनाता और फिर मन ही मन अपने से ही उसकी पूजा करता। रास्ते में खेलने-खेलते कितनी ही बार साथियों से झगड़ा हो जाने पर वे मार-मारकर मेरी पीठ टेढ़ी कर देते, पर घर आकर मैं रोता नहीं था, इसलिए कि किसीको मालूम न पड़ जाए।

जहां-जहां भी जाता, यही परिणाम निकलता। बिलासपुर, जबलपुर, कलकत्ता, सभी जगह एक ही बात। सभीने मुझे अकेला छोड़ दिया। इसीलिए मैं अपने मन से ही मिट्टी और कीचड़ से देवता की मूर्ति बनाता। लाल, नीली पेंसिल से तस्वीरें बनाता और जब अकेला होता, पास कोई नहीं होता, तो चुपचाप सिनेमा के गाने गाता।

मां को सुनाई पड़ जाता तो वह कहती, 'छोकरे को पढ़ना-लिखना तो कुछ है नहीं। बस, गाने गाता रहता है।'

शाम को मास्टरजी आ पकड़ते पढ़ने के लिए, और कहते, 'इसे कभी कुछ नहीं आएगा। घर में ज़रा भी नहीं पढ़ता।'

मां कहती, 'मेरा तो यही एक लड़का बेवकूफ निकल गया। हाथ की पांचों अंगुलियां बराबर भी तो नहीं होतीं। खैर, जैसा मेरी किस्मत में

लिखा है, वही तो होगा।'

चारों तरफ से जब इसी प्रकार के इल्ज़ाम और सितम मुझ पर ढाए जा रहे थे और प्यार व दिलासा की कोई किरण भी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी, ठीक उसी समय मेम भाभी मेरे जीवन में आई। मेम भाभी भी मेरी ही तरह बिल्कुल अकेली थी। अलकेश भैया सुबह ही हाईकोर्ट चले जाते। उसके बाद घर में बिलकुल सूनापन छा जाता। तब मेम भाभी को कोई काम नहीं रहता। शुरू-शुरू में तो मुहल्ले की बहू-बेटियों के मन में उसके प्रति उत्सुकता थी कि किस तरह वह गाऊन पहनती है, किस तरह साड़ी पहनती है, हाथ से किस तरह खाना खाती है, और किस तरह बात करती है?

बड़ी ताई कहतीं, 'तुम्हारे देश में चम्मच से किस तरह खाते हैं, ज़रा खाकर दिखाओ न?'

और जब खाते हुए देखतीं, तो देखकर दंग रह जातीं। कहतीं, 'अरे तुम्हारा बायां हाथ भी जूठा हो गया! अब इसी जूठे हाथ से चौके की सब चीज़ें छूओगी? ओह, कितनी गन्दी हो तुम, हमें तो घृणा होती है!'

रंगा चाची पूछती, 'अच्छा बहन, यह छोटी लड़कियों की तरह फ्राक पहनने में शर्म नहीं आती तुम्हें?'

मेम भाभी कहती, 'शर्म क्यों आएगी? वहां सभी तो फ्राक पहनते हैं।'

'किस उम्र तक फ्राक पहनते हैं, तुम्हारे वहां?'

'उम्र चाहे जो हो, वहां तो सभी फ्राक ही पहनते हैं और फ्राक पहनकर ही बाहर भी निकलते हैं।'

रंगा चाची का चेहरा घृणा एवं शर्म से लाल हो उठता। फिर वह खिलखिलाकर हंस पड़ती और कहती, 'जवान लड़कियां भी पहनती हैं? हे भगवान, बड़ी-बूढ़ी औरतें फ्राक पहनकर भला सड़क पर कैसे निकल पाती होंगी? एक हम लोग भी हैं, जो ग्यारह हाथ की साड़ी में भी अपनी शर्म नहीं ढंक पातीं, और तुम लोग? म्लेच्छों के देश में सारे काम ही म्लेच्छता से भरे होते हैं।'

मैं देखता, तब भी मेम भाभी के चेहरे पर शिकन नहीं आती। किसी भी आक्षेप का उनपर असर नहीं होता था। सबके प्रश्नों का उत्तर देती रहती वह।

पर मुझे बड़ा क्रोध आता।

जब सब चले जाते, तब मेरी आंखों से टप-टप आंसू गिरने शुरू हो जाते। मैं कहता, 'तुम उन लोगों से क्यों बात करती हो, मेम भाभी? तुम उन लोगों से कुट्टी क्यों नहीं कर लेती?'

मेम भाभी रूमाल से मेरी आंखें पोंछ देतीं। कहती, 'बोलने दो, मेरा तो इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं।'

मैं कहता, 'वे सब तुम्हें ऐसी बातें कहते ही क्यों हैं?'

मेम भाभी कहती, 'उनके कहने से मेरा क्या बिगड़ता है, भइया? मैं उन लोगों से जितनी बातें सीख सकूं, उतना ही अच्छा है।'

क्षण-भर बाद वह फिर कहने लगती, 'उन्हीं लोगों से तो मैंने गोबर से घर लीपना सीखा है, खाना खाकर जूठे हाथ धोना सीखा है, पैरों में महावर रचाना सीखा है। अगर वे लोग नहीं होते, तो मुझे कौन सिखाता यह सब; बताओ तो?'

मैं जवाब देता, 'यह सब मैं भी सिखा सकता हूं तुम्हें।'

'तुम सिखा सकते हो, यह मैं जानती हूं। पर जब तुम बड़े हो जाओगे, तब देखूंगी कि कैसे गुण भरे हैं तुममें?'

मैं कहता, 'तुम अलकेश भैया को क्यों नहीं कह देती यह सब?'

मेम भाभी कहती, 'जो व्यक्ति दिन-भर ऑफिस में इतना खटकर थका-मांदा घर आता है, उसे यह सब अगर कहने बैठ जाऊं, तो क्या उसे बुरा नहीं लगेगा?'

फिर कहती, 'मेम से शादी करने की वजह से एक तो यों ही अलक को कोई सहन नहीं कर पाता है, उसपर अगर मैं भी यह सब कहना-सुनना शुरू कर दूं, तो फिर कोई आंख उठाकर भी हमारे घर की तरफ नहीं देखेगा।'

मैं कहता, 'फिर तुमने अलकेश भैया से शादी क्यों की ? यह शादी नहीं होती, तो तुम्हारी यह दुर्दशा तो न होती। तुम कितने बड़े आदमी की बेटी हो, विलायत में ही किसी बड़े आदमी से तुम्हारी शादी हो जाती।'

मेरी बातें सुनते-सुनते मेम भाभी अचानक उदास हो जाती, मानो सहसा ही उसे सब कुछ याद हो आया हो। और मैं देखता, पलंग पर लेटी हुई मेम भाभी विन्सेंट स्क्वायर के एक आलीशान मकान में निर्निमेष नज़रों से आसमान की ओर देख रही है। मानो वे सारे दृश्य मेम भाभी की आंखों के सामने तैर उठे हों। वे पाइन और पॉपलर के पेड़ ! ठण्डी बर्फ पर सुनहरी धूप-सी फिसलनेवाली स्लेज गाड़ी और नाइटिंगल ! विन्सेंट स्क्वायर के मकानों की खपरैल की ढालू छत पर सफेद-सफेद धुनी हुई रूई के ढेर ! बर्फ और ओक के पेड़ों की पत्तियों की सरसराहट और सुबह डाइनिंग-हॉल से आती ब्रेकफास्ट की महक से नींद का टूटना, ब्रेकफास्ट-टेबिल पर फूलों का गुलदस्ता और फिर सामने लॉन से लेकर मकान के दरवाजे तक फूलों के पौधों की पंक्तियां ! वहां का टहलना ! आदि सब कुछ मानो साक्षात् हो उठा हो।

मैं स्वयं कभी विलायत नहीं गया। कभी वहां जाने की इच्छा भी नहीं हुई। पर मेम भाभी की आंखों की ओर देखकर मैं अपने मन में विलायत के विन्सेंट स्क्वायर की एक मनगढ़ंत तस्वीर बना लेता था।

मैं पूछता, 'तुम्हारे पिताजी बहुत बड़े आदमी हैं न, मेम भाभी ?'

इसी तरह एक ही बिछौने पर लेटे-लेटे हम देवर-भाभी कभी खत्म न होनेवाली बहुत-सी बातें करते रहते।

जब मेम भाभी उत्तर नहीं देती, तो मैं दुबारा पूछता, 'तुम्हारे पिताजी क्या बहुत बड़े आदमी हैं, मेम भाभी ?'

मेम भाभी अन्यमनस्कता से कहती, 'हां, बहुत बड़े।'

मैं पूछता, 'तुम्हारे यहां मोटरगाड़ी थी ?'

मेम भाभी कहती, 'हां।'

मैं फिर पूछता, 'कितनी ?'

मेम भाभी कहती, 'दो। एक पुरानी और एक नई।'

'तुम हमेशा कार में बैठकर घूमने जाती थीं ?'

'हां।'

मैं पूछता, 'कहां घूमने जाया करती थीं तुम ?'

मेम भाभी कहती, 'कितनी ही जगह घूमने जातीं।'

फिर भी मैं पूछता, 'किस-किस जगह जाती ?'

मेम भाभी कितनी ही जगहों के नाम गिनातीं। वे नाम कितने सुन्दर होते थे! आज वे सब नाम मुझे याद नहीं हैं। पर वे नाम सुनकर ऐसा लगता था, मानो वे सब स्थान बहुत ही खूबसूरत होंगे। हमारे मुहल्ले से बहुत अधिक सुन्दर। वहां ऐसी धूल, धुआं, बालू वगैरह नहीं होगी। सभी लड़के-लड़कियां उजले-गोरे चेहरेवाले होंगे, जो साफ-सुथरे कपड़े पहनते होंगे। चारों ओर फूल और पक्षी, खेलना और गाना ही होता होगा। कोई किसीको डांटता नहीं, कोई किसीको मारता नहीं, कोई किसीको रुलाता नहीं। स्कूल के मास्टर बच्चों को बहुत प्यार करते हैं और हिसाब गलत होने की वजह से बच्चों को बेंच पर खड़ा नहीं कराते।

मैं पूछता, 'तुम दोपहर के वक्त क्या करती थीं, मेम-भाभी ?'

मेम भाभी जवाब देती, 'स्कूल जाती थी।'

मैं फिर पूछता, 'क्या तुम स्कूल में सवाल भी बना पाती थीं ?'

मेम भाभी कहती, 'हां।'

'और जिस दिन सवाल नहीं बना पाती थीं…?'

मेम भाभी मेरा प्रश्न सुनकर हंस देतीं। कहतीं, 'मैं रोज सवाल बनाती थी, और मेरा सवाल कभी गलत नहीं होता था।'

मैं पूछता, 'क्या तुम्हें घर पर मास्टर पढ़ाता था ?'

मेम भाभी कहती, 'हां।'

मैं फिर पूछता, 'क्या मास्टर भी अंग्रेज था ?'

मेम भाभी कहती, 'हां।'

तब मैं बहुत छोटा था और मेरे प्रश्न बहुत ही विचित्र होते थे। पर

नवरत जवाब देते रहने पर भी मेम भाभी ऊबती नहीं थी। कहती, 'मेरे दिन कितने सुख में गुज़रे, इसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। सिर्फ मेरे लिए घर में अलग से आया थी, जो मुझे खिलाया करती, मेरे साथ खेलती, मुझे कपड़ा पहना देती, जूते-मोजे पहना देती तथा रात को लोरी गाकर मुझे सुला देती। मुझ अकेली के पास सात जोड़े जूते-चप्पल थे। हमारा घर इस मकान से चार गुना बड़ा था, जिसमें सामने बहुत बड़ा लॉन और पिछवाड़े फल-फूलों का बगीचा था।'

पता नहीं, इतनी हसीन जिन्दगी को छोड़कर ऐसा दुःख उठाने के लिए क्यों मेम भाभी ने अलकेश भैया के साथ शादी की?

मैं कहता, 'अच्छा, अलकेश भैया से अगर तुम शादी नहीं करतीं, तब तो तुम्हें यह नरक भोगना नहीं पड़ता।'

मेम भाभी कहती, 'कहां, मुझे तो कोई तकलीफ नहीं है यहां। तुमने कौन-सी कमी देखी यहां, जिसकी मुझे तकलीफ होती?'

मैं कहता, 'अरे वाह, तुम कितने बड़े बाप की बेटी हो! कितने लाड़-प्यार से पाली हुई! भला यहां आकर तुम्हें तकलीफ नहीं होगी? सारा काम तुम्हें स्वयं करना पड़ता है यहां।'

मेम भाभी कहती, 'तो क्या हुआ? अलक मुझे चाहता भी तो है।'

मैं कहता, 'पर मैं तुम्हें बता दूं मेम भाभी, कि मैं भी तुम्हें बहु[त] चाहता हूं।'

मेरी बात सुनकर मेम भाभी ने मुझे बांहों में जकड़ लिया था अ[ौर] बोली थी, 'इसीलिए तो तुम्हारा नाम शैतान बाबू रखा है!'

पर अलकेश भैया के कोर्ट से लौटने के कुछ देर पहले से मेम भा[भी] बहुत व्यस्त हो जाती। बाथरूम में जाकर नहाती, फिर सिल्क की साड़ी पहनती; चेहरे पर पाउडर-स्नो लगाकर तैयार होती।

मुझसे कहती, 'अपनी अनामिका से ज़रा मेरे माथे पर गोल बिन्दी लगा दे। दोनों भौंहों के बिलकुल बीच में।'

मेम भाभी ने बंगालिनों की तरह अपने बाल लम्बे बढ़ा लिए थे

अपने-आप जूड़ा ठीक से नहीं बना पाती थी। कभी-कभी मैं कहता, 'लाओ मेम भाभी, मैं तुम्हारी चोटी गूंथ दूं।'

मेम भाभी क्षण-भर सोचकर कहती, 'तू बना सकेगा मेरी चोटी?'

मैं कहता, 'जिस प्रकार रंगा चाची मां का जूड़ा बना देती है, उसी तरह मैं भी बना दूंगा; तुम देखो तो सही।'

पर जूड़ा बनाना इतना आसान नहीं था। फिर भी मेम भाभी के रेशम-से बालों में मैं बहुत देर तक उलझता रहता। बहुत देर तक मेरी ओर पीठ किए-किए वह कहती, 'क्यों, बना कि नहीं?'

मैं कहता, 'बस, जरा-सा बाकी है।'

पर मेम भाभी के रेशम जैसे लम्बे-लम्बे बालों को लाख कोशिशों के बावजूद मैं अपनी गिरफ्त में नहीं कर पाता था। जैसे ही चोटी बनाकर गांठ लगाने की कोशिश करता वैसे ही मेरे हाथों से सारे बाल फिसल जाते। पर फिर भी छोड़ने की इच्छा नहीं होती थी। मेम भाभी के बालों से अकारण ही मैं खेलता रहता।

जब मेम भाभी का धीरज टूट जाता तब वह कहती, 'अरे, बना कि नहीं तुम्हारा जूड़ा?'

मैं कहता, 'बस, जरा-सा और ठहर जाओ, मेम भाभी।'

और मेरा फिर वही केश-विन्यास का दौर चालू हो जाता। मेम भाभी के बालों को मैं बार-बार मुट्ठी में भर लेता, और फिर छोड़ देता। छोड़ते ही रेशम के गुच्छे की तरह वे सारी पीठ पर बिखर जाते। मेम भाभी के बाल थे भी कितने लम्बे-लम्बे! मेरी मां से भी ज्यादा लम्बे थे मेम भाभी के बाल। रंगा चाची से भी अधिक लम्बे। अगर खुला छोड़ दें, तो पीठ से झूलते हुए जमीन पर लोट जाते। मेम भाभी के गोरे पावों की एड़ियों तक।

जब मेम भाभी का धीरज जवाब दे जाता, तब वह कहती, 'चल हट, बस बहुत हो चुका! तुझे जूड़ा बनाना आता ही नहीं। मेरी तो गर्दन भी दुखने लगी।'

पर महावर रचाने में मैं बहुत पटु था। मेम भाभी को ज़मीन पर बैठने की आदत नहीं थी। अगर काफी देर उसे ज़मीन पर बैठना पड़ता, तो बाद में उसे बहुत तकलीफ होती थी। इसीलिए मेम भाभी चेयर पर बैठ जाती और घुटनों तक साड़ी ऊंची कर लेती। मैं ज़मीन पर उसके पैरों के नज़दीक बैठकर दोनों पांव अपनी गोद में रख लेता। फिर तूलिका ले, मोम-से उजले उसके पांवों के किनारे-किनारे महावर लगा देता।

कभी-कभी मेम भाभी अपने पैर बीच में ही हटा लेने का प्रयत्न करती।

मैं कहता, 'यह क्या, ऐसे क्यों करती हो ? सारा महावर घुल-मिल जाएगा।'

मेम भाभी खिलखिलाकर हंस पड़ती। कहती, 'मुझे गुदगुदी लग रही है।'

मैं गुस्सा हो जाता और कहता, 'ऐसे करोगी तो मैं तुम्हारे महावर नहीं लगा सकता।'

मेम भाभी कहती, 'अच्छा-अच्छा, अब पैर नहीं हिलाऊंगी।' और स्थिर होकर बैठने की कोशिश करती। पर फिर भी पांव बार-बार हिल ही जाते। मेम भाभी के उन कमल जैसे चरणों का भी क्या कहना था ! दोनों पांवों को पकड़कर महावर रचाने के बहाने कितनी ही बार मैं टीप देता। मैं चाहता कि मेरा यह महावर रचाना कभी खत्म न हो। मैं चाहता कि इसी तरह दोनों पैर गोद में रखे ज़िन्दगी-भर मेम भाभी के पैरों में महावर रचाता रहूं।

अलकेश भैया जब कोर्ट से लौटते तो पूछते, 'अरे, तुम्हारे महावर किसने लगा दी ?'

मेम भाभी मुस्कराते हुए कहती, 'और, कौन ? इन्हीं नटखट देवरजी ने।'

मैं डर के मारे काठ हो जाता। अगर अलकेश भैया बिगड़ उठें, और आने को ही मना कर दें !

मेम भाभी फिर कहती, 'जानते हो यह हिन्दी भी इन्होंने सिखा दी है!'

बस, इसके बाद मेरा वहां टिकना सम्भव नहीं होता। अलकेश भैया मेम भाभी के साथ कार में बैठकर घूमने चले जाते और मैं धीरे-धीरे कदम बढ़ाता अपने घर चला आता और घर आकर मेम भाभी की बात सोचते-सोचते ही सो जाता।

मेम भाभी पूछती, 'एक दिन तू भी चलेगा हमारे साथ घूमने?'

मैं पूछता, 'कहां?'

'जहां हम जाते हैं। किसी दिन तुम्हें भी ले चलेंगे। तुम्हें आइसक्रीम खिलाएंगे। तुम अपनी मां से बोल आना, हां?'

मैं कहता, 'मां तुम्हारे साथ थोड़े ही जाने देंगी। तुमको छूने से तो कपड़े बदलने और धोने को कहती हैं।'

पर आखिर मैं अपना लालच नहीं रोक पाया। मेम भाभी और अलकेश भैया उस समय सज-संवरकर एकदम तैयार थे। मेम भाभी ने पूछा, 'क्यों रे नटखट, चलेगा हमारे साथ?'

मैंने कहा, 'हां, चलूंगा।'

फिर अलकेश भैया तो सामने बैठकर कार चलाने लगे और मेम भाभी उनके बगल में बैठ गई। मैं बैठा पीछे की सीट पर। मुझे यह अच्छा नहीं लगा। भला मेम भाभी बगल में न बैठी हो, तो अच्छा लगे भी कैसे! मेम भाभी ने मुझसे बात भी नहीं की। पूरे रास्ते सिर्फ अलकेश भैया से ही बात करती रहीं। दोनों बिलकुल सटकर बैठ गए थे और न जाने यहां-वहां की कितनी बातें कर रहे थे! मेम भाभी को बंगला सिखाने के उद्देश्य से अलकेश भैया हरदम बंगला में ही बोलते और मेम भाभी भी बंगला में ही बात करती। इस समय दोनों अपने में ही मग्न थे और मेरी ओर किसीका भी ध्यान नहीं था।

इसके बाद मैं फिर कभी उनके साथ नहीं गया। घर में बैठे-बैठे मेम भाभी पर मान करके मुंह फुलाए रहा।

मनुष्य की उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसके मन में भी बुजुर्गी आने लगती है। कभी जिस मेम भाभी को मैंने सिर्फ अपना बना लेना चाहा था और जब अलकेश भैया उसमें हिस्सा बंटा लेते थे, तो मेरा मन उदास हो जाया करता था; आज उन दिनों की बातें याद आने पर हंसी आती है। स्कूल से लौटते समय कितनी बार सोचा कि आज जाकर जरूर देख आऊंगा कि मेम भाभी कैसी है? लेकिन तब तक अपने मन में आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपराध-बोध महसूस करने लगा था। मैंने मन में समझना सीख लिया था कि मैं मेम भाभी का कोई सगा नहीं, बल्कि पराया हूं और मेम भाभी मेरी परायी है। अब पहले की तरह एक ही बिस्तर पर मेम भाभी के पास सोकर लाड़ करवाने की उम्र नहीं रही मेरी। इसके अलावा, अब मेम भाभी के दोनों पैरों को गोद में रखकर महावर लगाना न तो सम्भव है और न ही यह सब उचित है।

यह सब समझते हुए भी अपना लोभ संवरण नहीं कर पाता।

अचानक किसी दिन जा पहुंचता तो मेम भाभी दंग रह जाती। कहती, 'इतने दिन कहां था रे?

उसके बाद अपने शयन-कक्ष में ले जाकर चाय पिलाती। पिछली रात को होटल से लाए केक-पेस्ट्री खाने को देती। मेम भाभी और अधिक बंगालिन बनती जा रही थी। साड़ी के पल्लू में चाबी का गुच्छा बांध रखा था। भीगे बालों को पीठ पर फैला रखा था। लेकिन खुले बालों को यों ही नहीं रखना चाहिए, इसलिए बीच के कुछ बाल लेकर एक गिरह बांधी हुई थी। माथे पर सिंदूर की एक बिंदी लगा रखी थी और पैरों में महावर।

मैंने पूछा, 'मेम भाभी, तुम्हारे पांवों में महावर कौन रचा देता है?'

मेम भाभी ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुम क्या समझते हो कि तुम्हारे

सिवाय मुझे और कोई महावर लगानेवाला है ही नहीं ?'

मैंने कहा, 'मैं तो अब बड़ा हो गया हूं न, इसलिए नहीं लगा पाता। क्या अब भी मुझसे महावर लगवाना पसन्द करोगी ?'

'ओह, यह बात है ! जरा मैं भी तो देखूं, तुम कितने बड़े हो गए हो ?'

कहकर हंसते-हंसते मेरे सामने आ खड़ी हुई। फिर बोली, 'जरा खड़े हो तो नापकर देखूं कि कितना बड़ा हो गया है ?'

मेम भाभी की छाती से सटकर बिलकुल उसके सामने खड़ा हो गया मैं।

मेम भाभी ने कहा, 'और पास खिसक आओ।'

फिर मुझे हाथ से नापते हुए कहा, 'यह देख, तू अभी मेरे सीने तक भी नहीं पहुंचा है।'

पर मुझे उस वक्त ऐसा लग रहा था, मानो तेज ज्वर आ गया हो। मेरे आंख, कान, नाक, मुंह मानो उत्तेजनावश गरम हो उठे हों। मैं सिर झुकाकर वापस चेयर पर आ बैठा।

मेम भाभी ने मेरे पास आकर पूछा, 'क्यों रे, इतना हांफ क्यों रहा है ? प्यास लगी है क्या ? पानी लाऊं ?'

मेम भाभी पानी ले आई।

फिर बोली, 'कल अमल को क्या हुआ, जानते हो ?'

मैंने पूछा, 'क्या हुआ ?'

मेम भाभी ने कहा ऐक्सीडेण्ट को बंगला में क्या कहते हैं, रे ?

मैंने कहा, 'दुर्घटना।'

मेम भाभी ने कहा, 'दुर्घटना ? इसका मतलब ?'

'इसका मतलब ऐक्सीडेण्ट।'

और दोनों एक साथ हंस पड़े।

मेम भाभी ने कहा, 'चल हट, ऐक्सीडेण्ट का मतलब दुर्घटना नहीं होता। मेरा मतलब यह था कि जैसे आज अचानक दोपहर को तू मेरे घर

आया तथा मैंने तुम्हें नापकर देखा और तुम्हें पानी की प्यास लग आई
इसे भी तो ऐक्सीडेण्ट ही कहते हैं।'

मैंने कहा, 'यह भला क्यों ऐक्सीडेण्ट होने लगा? और अगर है भी तो इसका पर्यायवाची बंगला शब्द कुछ नहीं होता।'

मेम भाभी ने कहा, 'पर कल का ऐक्सीडेण्ट तो सचमुच ही दुर्घटना थी, भई! अलक कार चला रहा था और उसी हालत में मैं उसका चुम्बन लेने लगी थी। ठीक उसी वक्त सामने एक कार आ पहुंची।'

मैंने कहा, 'ओह, गजब हो गया! फिर क्या हुआ?'

समसामयिक साधारण घटनाओं से ही मनुष्य का जीवन बनता बिगड़ता रहता है। मैं बहुत बार सोचता रहा हूं कि आदमी शादी क्यों करता है? एकदम अकेला रहने में उसे आराम ही तो है। किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं रहती। इसी तरह अगर अलकेश भैया शादी नहीं करते तो किसका क्या बिगड़ जाता? मंझली ताई इस तरह बेमौत नहीं मरतीं और मंझले ताऊजी भी कुछ और दिन जिन्दा रह सकते थे। कहां की कौन तो मेम भाभी! और किस देश की बेटी!! जहां पैदा हुई, बड़ी हुई वहीं अपना बाकी जीवन भी बिता सकती थी। क्यों वह सात समुन्दर पार करके इस समस्या की सृष्टि करने आई यहां? यह समस्या और यह परेशानी सिर्फ मेम भाभी और अलकेश भैया के लिए ही नहीं थी, बल्कि मेरे लिए भी थी। वह नहीं आती तो मुझे भी लड़कियों के चरित्र का एक और पहलू देखने को नहीं मिलता!

मैंने कितने ही तरह के चरित्र की लड़कियां देखी हैं। पर सभी एक-दूसरी से भिन्न थीं। किसीसे भी किसीका सामंजस्य नहीं था। पर क्या एक ही नियम के अन्तर्गत सभीको आबद्ध करना संभव है? क्या एक ही सांचे में सभीको ढाला जा सकता है? जो लड़कियां पत्र-व्यवहार

द्वारा अपने-अपने जीवन की समस्या से मुझे परिचित करवाती हैं, जो मुझसे अपने जीवन की कहानी सुनाने को मिलना चाहती हैं; उनमें से कोई यादवपुर रहती है, तो कोई बेलघड़िया, तो कोई शिवपुर। लेकिन अन्दर से सभी तो एक-दूसरी से भिन्न होती हैं, यद्यपि बाहर से सभी महज लड़कियां रहती हैं। साड़ी और गहनों से सजी-संवरी, पर भीतर से सब मनुष्य ही हैं न। मैं सभीका सम्मान करता हूं। उन सबको प्यार भी करता हूं तथा मन ही मन यह कामना भी करता हूं कि सभी सुखी रहें, सबके मन को शान्ति मिले। सब मानो अपने मन की बात अपने-अपने अन्तर्यामी को खुलकर कह सकें कि, 'मैं बहुत सुखी हूं, बहुत शान्ति मिली है मुझे जीवन में; मुझे किसी प्रकार का अभाव नहीं, न किसीसे किसी प्रकार की शिकायत ही है।'

आज मैं अपने कमरे के एक कोने में बैठा लिखता हूं और अपने अतीत की घटनाओं की सिर्फ जुगाली करता हूं। जीवन-पथ पर चलते-चलते जिन-जिन से मेरा साक्षात्कार हुआ था; किसीसे कुछ समय के लिए या किसीसे लम्बे अरसे के लिए; उन सभीको मन ही मन प्रणाम करता हूं। कहता हूं 'तुममे से जो जहां रहे, सुखी रहे।' इससे बड़ी प्रार्थना और इससे बड़ी कामना मेरे पास नही है।

मेरे बचपन के समय जब मेम भाभी और अलकेश भैया के जीवन में चरम दुर्घटना आई थी, तब भी मैंने उन दोनों की मंगल-कामना ही की थी।

मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारे स्कूल के गेट के पास दरबान का घर था, जहां पीपल के पेड़ के नीचे एक शिवलिंग था। स्कूल से लौटते समय उसकी सीमेंट से बनी पक्की वेदी पर बहुत देर तक माथा टेककर प्रणाम किया था मैंने और कहा था, 'हे शिवजी, अगर आप सच्चे हैं तो मेरी मेम भाभी के मन को शान्ति दें!' उसके बाद कहा था, 'हे शिवजी, मेरी मेम भाभी हिन्दू नहीं है, इसलिए आप विचार मत करिएगा। मेम भाभी ने गाय का मांस खाना छोड़ दिया है। वह गोबर खाकर शुद्ध हो चुकी है। एक अलकेश भैया को छोड़कर मेम भाभी का अपना और कोई

भी इस देश में नहीं है, अतः उसे शान्ति देना, भगवान् !'

पर आखिर उससे भी कुछ नहीं हुआ।

कालीघाट के ट्राम-डिपो के पास एक क्रिश्चियन गिर्जाघर था। एक दिन पैदल चलते-चलते वहां गया और चर्च के खंभों के सामने हाथ जोड़कर मैंने प्रार्थना की थी, 'मेम भाभी के मन को शान्ति दो, ईशू ! मेम भाभी का मंगल करना। तुम्हारे देश की लड़की इस देश में वहू वनकर बहुत मुसीवतें झेल रही है प्रभु, उसे अब और मुसीवत में मत डालना।'

लौटते समय कालीघाट के मन्दिर में सवा पांच आने का प्रसाद चढ़ाकर मैंने मिट्टी के चपटे सकोरे में प्रसाद और जवा फूल लाकर मेम भाभी को दिया था और कहा था, 'यह फूल लेकर माथे से छुआओ और प्रसाद खा लो।'

और सावधान भी कर दिया था कि, 'प्रसाद खाकर हाथ धो डालना मेम भाभी, नहीं तो पाप लगेगा।'

मेम भाभी ने पूछा, 'क्या हिन्दू भगवान् का प्रसाद मैं खा लूं ?'

मैंने कहा, 'तो क्या हुआ ? फिर तुम तो गोवर खाकर शुद्ध भी हो चुकी हो।'

पर मेरी इतनी प्रार्थना, इतनी पूजा, इतनी मन्नत आदि से भी कुछ फायदा नहीं हुआ। मैं रात-दिन प्रार्थना करता कि मेम भाभी का कुछ भी अनिष्ट न हो, लेकिन अन्त में अलकेश भैया के चचेरे भाइयों ने मामला-मुकदमा दायर कर ही दिया।

पर उस वात को अभी रहने ही दूं।

अभी तो अलकेश भैया की और दूसरी वातें कहूं।

अलकेश भैया सुवह कोर्ट चले जाते और एकदम शाम को ही लौटते। इसके वाद एटर्नी और मुवक्किल घर पर आने शुरू हो जाते। अलकेश भैया की प्रैक्टिस दिन पर दिन वढ़ने लगी थी। यहां तक कि खाने और सोने का वक्त भी नहीं मिलता उन्हें। रात को भी कागज-पत्र लिए वैठे रहते।

यहां तक कि रविवार को भी मेम भाभी को अकेली छोड़कर कार्यवश कलकत्ते से बाहर चले जाते।

मैं पूछता, 'अलकेश भैया कहां गए हैं, भाभी ?'

उस वक्त मेम भाभी सज-संवरकर माथे पर बिन्दी, पांवों में महावर लगाए दालान में बैठी रहती। कहती, 'अलक नगर से बाहर गया है।'

कभी-कभी देखता कि हमारे घर के सामने से मेम भाभी की कार सर्र से निकल जाती। क्षण-भर के लिए अलकेश भैया की एक झलक दिखलाई पड़ती कि वे स्टीयरिंग पर हाथ रखे कार चला रहे हैं। मुंह में सिगरेट और बगल में छोटा-सा घूंघट काढ़े मेम भाभी बैठी होतीं। जाते शाम को और लौटते बहुत रात गए।

दूसरे दिन मैं पूछता, 'कल तुम लोग कितनी रात गए लौटे, मेम भाभी ?

मेम भाभी चकित होकर पूछती, 'हाय राम ! तुमने देखा था क्या हमें ? कहां था तू ?'

मैं पूछता, 'तुम लोगों ने खाना-पीना कब किया ?'

मेम भाभी कहती, 'होटल में खा लिया था।'

महीने में प्रायः पन्द्रह दिन मेम भाभी और अलकेश भैया होटल में ही खाना खाते थे।

मैं पूछता, 'क्या खाया है ?'

मेम भाभी हंस देती। कहती, 'गाय नहीं खाई है, रे ! तू डर मत। अब तो मैं सौ प्रतिशत हिन्दू हो गई हूं, रे ! बिलकुल तुम लोगों की तरह। यह देख न, घर में खाना खाने के बाद जूठे बरतन मांज लेती हूं। कांटे-चम्मच सब छोड़कर हाथ से ही भात खाती हूं, और खाने के बाद साबुन से जूठे हाथ धो लेती हूं।'

सचमुच, मेम भाभी जी-जान से हिन्दू बनने की कोशिश कर रही थी, ताकि किसी भी तरह वह आत्मीय स्वजनों की सहानुभूति प्राप्त कर सके। हरदम यही सोचती रहती कि क्या करे जिससे वे मेम भाभी से

जलना शुरू कर दें। रात-दिन इसी चिन्ता में रहती, तब भी किसीका दिल नहीं जीत पाती।

मैं कहता, 'तुम्हें क्या ज़रूरत है, मेम भाभी? अगर वे लोग न मिलना चाहें, तो अच्छा ही है। झंझट मिटा! तुम अकेली ही अलकेश भैया के साथ मौज से कार में घूमो। और फिर मैं तो आता ही हूं तुम्हारे पास।'

मेम भाभी हंस देती। कहती, 'अलक तो मर्द है न। किसी मर्द का चौबीस घंटे पत्नी के ही पास बैठे रहना क्या अच्छा लगता है!'

मैं कहता, 'पर मेरा तो चौबीस घंटे क्या दिन के अड़तालीस घंटे हों, तब भी तुमसे जुदा होने का मन नहीं करता।'

मेम भाभी मुस्करा देती। कहती, 'अभी ऐसा कहते हो, पर जब बड़े हो जाओगे तब तुम्हारी भी ऐसी इच्छा नहीं होगी।'

मैं कहता, 'क्यों नहीं होगी? ज़रूर होगी। मुझे तुम चिरकाल तक अच्छी लगोगी। मेरे लिए तुम कभी पुरानी नहीं होगी।'

मेम भाभी तब भी सिर्फ मुस्कराकर रह जाती। कहती, 'अच्छा, तेरी शादी होने दे। फिर देखूंगी कि पत्नी के पास चौबीस घंटे बैठे रहते हो क्या? फिर तुम्हें भी अच्छा नहीं लगेगा।'

फिर क्षण-भर चुप रहकर मेम भाभी कहती, 'जैसे कि शादी से पहले यह अलक भी मुझसे इसी तरह कहता था, नोरा, तुमसे एक पल भी जुदा होना मुझे बहुत नागवार गुज़रता है। एक घण्टा भी तुम मेरी नज़रों से ओझल रहती हो, तो मैं पागल हो जाता हूं।'

मैं पूछता, 'और तुम?'

'मैं?'

मेम भाभी न जाने क्यों अन्यमनस्क हो उठती। मेम भाभी की आंखों को ध्यान से देखता तो लगता मानो वह यहां से कहीं बहुत दूर किसी अदृश्य लोक में विचरण कर रही हो। मानो मेम भाभी की मन-धारा किसी अतल गहराई में डूबकर दब गई हो।

मैं पूछता, 'क्या सोच रही हो, मेम भाभी ?'

मेम भाभी कहती, 'कुछ नहीं रे, तू बात कर। हां, क्या कह रहा था तू ?'

पर मैं यही कहता, 'नहीं, पहले तुम बताओ, तुम क्या सोच रही थीं ?'

क्योंकि मेम भाभी की भावना को न समझ पाकर भी, पता नहीं क्यों, मेरा मन एकदम से फँसा हो गया था। मानो मेम भाभी की भावना पर भी मेरा अस्वीकृत अधिकार हो। मेम भाभी की भावना, स्वप्न, चिन्ता, भविष्य आदि समस्त चीज़ों के साथ उन दिनों मैंने स्वयं को जोड़ लिया था। मैंने मेम भाभी को अपनी कल्पना, अपने स्थान और अपने मानस के साथ आख़िर कुछ दिनों तक तो अविच्छेद्य भाव से एकाकार कर ही लिया था, क्योंकि मेरा स्वभाव ही ऐसा है। मैं जिसके पास रहा, उसे यही लगता कि मुझपर सिर्फ़ उसीका अधिकार है। नितान्त ऐकान्तिक प्यार ! ऐसा प्यार कि उसमें किसीका भी हिस्सा बंटाना मुझे सह्य नहीं होता था। इसलिए जब अलकेश भैया मेम भाभी का चुम्बन लेते, तो मुझे एक प्रकार की ईर्ष्या-सी होती थी।

आज मैं बड़ा हो गया हूं और इन बातों के सम्बन्ध में सोचते हुए मुझे शर्म आती है। साथ ही हंसी भी आती है। पर उन दिनों तो यही सोचता था कि लोग आख़िर शादी करते ही क्यों हैं ? ऐसी कौन-सी अनिवार्यता है शादी करने के पीछे ? अकेला आदमी तो और भी मज़े में रह सकता है। जिसको चाहे प्यार कर सकता है। तब मुझे यह नहीं मालूम था कि स्त्री और पुरुष दोनों को ज़िन्दगी-भर के लिए एक बन्धन में बंधकर एक होना ज़रूरी होता है। मुझे नहीं मालूम था कि एक हाथ से दी हुई पुष्पांजलि देवता भी ग्रहण नहीं करते। मुझे नहीं मालूम था कि नारायण और ब्रह्मा ने सर्वप्रथम अपने शरीर के दो खण्ड करके स्त्री-पुरुष की सृष्टि की थी और यही दोनों शरीर शादी के बाद पुनः एक हो जाते हैं। अंग्रेज़ों का जो एकत्व लिरिक है, हमारा वही एकत्व ड्रामेटिक है। नाटक में गाने रहते हैं पर गानों में नाटक नहीं होता। हम लोगों में दूल्हे को मन्त्र

पढ़ाकर कन्या को आकाश में अरुन्धती नक्षत्र दिखाने की परम्परा है। फिर यह कहा जाता है, 'ओम् अरुन्धत्यसि रुद्धहमस्मि।' हे अरुन्धति, मैं भी तुम्हारी तरह हरदम अपने पति में निमग्न रहूं।

उसके बाद दूल्हा दुल्हन की ओर देखकर कहता है, 'यह आकाश ध्रुव है, यह विश्व-ब्रह्माण्ड ध्रुव है, समस्त पर्वत ध्रुव हैं, इसी तरह मेरी यह पत्नी भी ध्रुव है।'

हम हिन्दू कहते हैं, 'हम पति-पत्नी में अगर कभी वैमनस्य उत्पन्न हो जाए, जो आज हो या कल, तो हम फिर से आपस में प्रेम कर सकें। हे सर्वदोष हरण करनेवाले अग्निदेव, आप देवलोक तक के दोष हरण करते हैं, इसीलिए हम आपकी शरण आए हैं। आप इस कन्या के पति-विरोधक अंश को विनष्ट कीजिए। हे सर्वदोष हरण करनेवाले सूर्य देवता, आप भी देवलोक के दोष हरण करते हैं, इसलिए हम आपकी शरण में आए हैं। आप इस कन्या के गृह-धर्म-विरोधक अंश का विनाश कीथिए।'

पर मेम भाभी जिस देश की है, उस देश के लोग कहते हैं, 'आज हमलोगों में प्रेम है यह सच है, पर कल को अगर आपस में वैमनस्य स्थापित हो जाए, तो हम इस दाम्पत्य बन्धन से मुक्त हो सकें, कानून में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।'

कहां तो हम सृजन और पालन के पक्षपाती और कहां मेम भाभी के देश के लोग प्रलय के पक्षपाती! हम दूल्हे-दुल्हन के आपसी विरोधाभास को मिटाकर उन्हें दाम्पत्य-प्रेम की डोरी में गूंथ देना चाहते हैं, और मेम भाभी के देशवाले वर-कन्या के विरोधाभास को और बढ़ाकर उन्हें दाम्पत्य-डोरी से अलग कर देना चाहते हैं।

पर यह सब बातें तो अब, जब मैं बड़ा हो गया हूं तब, समझ में आई हैं।

इसीलिए उस दिन जब आबू पहाड़ के हवा-महल में बैठे-बैठे मैंने मेम भाभी से पूछा था, 'तो वह सब क्या झूठ था, मेम भाभी? तुम्हारा वह मांग में सिन्दूर लगाना, पैरों से महावर रचाना, पांवों से हाथ लगाकर प्रणाम करना, तुम्हारा वह निरामिष भोजन करना; क्या सब

दिखाया ही था ?'

मलमे-सितारोंवाली चुनरी से अपना चेहरा ढंककर मेम भाभी रोने लगी। आसुओं से उसकी चुनरी भीग गई। इस तरह से आज तक मैंने किसी मेम को रोते नहीं देखा। मेम भी रोती है तो इतनी करुण लगती है, यह बात मेम भाभी का रोना देखने से पहले मुझे मालूम नहीं थी।

मेम भाभी ने कहा, 'मैं झूठ नहीं कहती, मेरे नटखट देवर! यह सचमुच एक एक्सीडेण्ट ही हुआ है।'

मैं और भी हैरान हुआ, 'एक्सीडेण्ट ?'

मुझे अच्छी तरह याद है कि एक दिन मेम भाभी ने मुझसे एक्सीडेण्ट का अर्थ पूछा था। इस शब्द का बंगला पर्यायवाची नहीं होता। उस दिन इसलिए मैं इस शब्द का अर्थ नहीं बता पाया था। और आज भी मानो यह बात सुनकर मैं सुन्न हो गया।

मेम भाभी ने कहा, 'क्या मेरी तरह कभी कोई मेम बंगालिन बन सकी है ? क्या कोई भी मेम कभी हिन्दू घर की बहू बन सकी है ?'

मैंने कहा, 'यह मैंने तो नहीं देखा है, मेम भाभी।'

'कभी नहीं, ऐसा हो ही नहीं सकता। मन में उबलती घृणा को दबाकर सास के गन्दे पैरों की धूल लेकर अपने साफ-सुथरे बालों में कोई मेम नहीं लगा सकती। पर क्यों नहीं लगा सकती, जानते हो ?'

मैंने कहा, 'नहीं।'

मेम भाभी ने कहा, 'यह भी वही एक्सीडेण्ट ही है।'

मैंने पूछा, 'इसका मतलब ?'

मेम भाभी ने कहा, 'तो फिर सुन।'

और जरा-सा रुककर फिर बोली, 'मेरे पिताजी एक सुबह पश्चिम के एक बड़े रास्ते से आ रहे थे और मेरी मां ठीक उसी समय उत्तर दिशा की एक गली के मोड़ पर खड़ी हुई थी। दोनों की वहीं प्रथम भेंट हुई, और भेंट के परिणामस्वरूप एक एक्सीडेण्ट हो गया।'

मेरी कुछ समझ में नहीं आया, अतः पूछ बैठा, 'वह कैसे ?'

मेम भाभी ने चूनर का घूंघट सरकाकर कहा, 'अगर वह मुलाकात नहीं हुई होती, तो मेरा जन्म भी नहीं होता।'

मैंने पूछा, 'उसके वाद ?'

मेम भाभी ने कहा, 'वस, उसके बाद और कुछ नहीं। उसके वाद मैं वड़ी हुई। मुहल्ले के लड़कों के साथ खेलती रहती। धीरे-धीरे उम्र वढ़ती गई। उस वक्त मैं अपने ही यौवन के भार से झुकी रहती थी। दुनिया में किसीकी भी मैं केयर नहीं करती थी। मेरे लिए सारी चीजें मात्र खेल थीं। ज़िन्दगी भी खिलवाड़, मौत भी खिलवाड़, यौवन भी खिलवाड़, प्रेम भी खिलवाड़। उस वक्त खिलवाड़ के अलावा मैं और कुछ सोच भी नहीं सकती थी।'

मैंने पूछा, 'फिर ?'

मेम भाभी कहने लगी, 'फिर एक दिन विन्सेंट स्क्वायर की सड़क पर मैं और मेरी सहेली डोरा दोनों दूकानों के सामने से जा रही थीं। हम दोनों में वहुत अधिक प्रेम था। मेरा नाम नोरा था और उसका नाम डोरा। दोनों ही हमउम्र थीं। हमें देख-देखकर मुहल्ले के लड़के ताने कसते। वे व्यंग्य और ताने कितनी ही तरह के होते थे। लेकिन हमें देखकर अगर लड़के ताने नहीं कसते तो शायद हमें बुरा ही लगता। दरअसल, हमें लड़कों का वह अत्याचार अच्छा ही लगता था। उस वक्त मेरे लिए अपना यौवन संभालना एक मुसीबत ही थी। न रात को सोते समय चैन था, न दिन में जागते समय; न खाकर चैन था, न भूखे रहकर। किसी तरह भी चैन और सुख नहीं मिलता था मुझे। रास्ते में उछलती-कूदती हुई चलती। कपड़ों की दूकानों में शो-केश में लगी सुन्दर-सुन्दर सिल्क की फ्राकों का वारीकी से मुआयना करती। उनकी कीमत लिखी रहती, वह भी पढ़ती। एक दिन अचानक मेरी सहेली डोरा ने एक खूवसूरत चेहरेवाले इटालियन युवक को दिखाकर कहा, 'उस व्यक्ति का अचानक एक चुम्बन लेकर क्या तुम उसे चौंका सकती हो ?'

मेम भाभी रुक गई।

मैंने पूछा, 'उसके बाद ?'

मेम भाभी ने कहा, 'तुमसे तो मैंने पहले ही बता दिया था न, मेरे नटखट देवर, कि उस वक्त मेरे लिए सब कुछ खिलवाड़ था। जिन्दगी और मौत, यौवन और प्रेम सब कुछ। सब मेरे लड़कपन के खेल मात्र थे। मैं मर्द को मन मे मर्द नहीं समझती थी और औरत को औरत नहीं। हमारा देश तुम्हारे देश की तरह तो है नही। जवान हो जाने पर भी हम लड़के-लड़कियां एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं तथा साथ खेलते हैं। एक साथ डांस करते हैं। एक साथ पढ़ते हैं। एक लड़की एक साथ दस लड़कों से प्रेम कर सकती है, और दूसरी ओर एक ही लड़के को दस लड़कियां भी एक साथ प्यार कर सकती हैं।'

मैंने पूछा, 'फिर ?'

मेम भाभी ने कहा, 'एक दूकान से एक इटालियन युवक को निकलते देखकर डोरा ने मुझसे कहा, अगर तुम उस इटालियन युवक का चुम्बन लेकर भाग आओ, तो…'

मैंने बीच में ही पूछा, 'कितने की शर्त लगाई उसने ?'

डोरा ने कहा, 'एक शिलिंग की।'

मैंने पूछा, 'तो क्या तुमने शर्त पूरी की थी, मेम भाभी ?'

'हां ! ऐसी शर्तें तो हम प्रायः ही लगाया करती थीं। हमारा मुख्य खेल ही यही था।'

मैंने फिर पूछा, 'उसके बाद क्या हुआ ?'

मेम भाभी ने फिर कहना शुरू किया, 'इटालियन युवक का वह खूबसूरत चेहरा और जॉन गिलबर्ट टाइप की मूछें, सुनहरे घुंघराले बाल और साढ़े छह फुट लम्बाई !…अब अगर मैं उसका चुम्बन लेने जाऊं, तो उछलकर उसकी गर्दन से लटकना पड़ता मुझे। पर उससे क्या हुआ, शर्त तो आखिर शर्त ही थी। और उसी बाजी को जीतने की कोशिश में एक भयानक एक्सीडेण्ट हो गया।'

मैं अवाक् रह गया, 'क्या कहा, एक्सीडेण्ट ?'

मेम भाभी ने कहा, 'हां, उस शर्त को जीतने में एक दुर्घटना घट गई। वरना न तो मुझे तुम्हारी इस इण्डिया में आना पड़ता और न ही आज राजपुतानी वेश-भूषा में इस आबू पहाड़ पर तुम मुझे पाते।'

मैंने पूछा, 'पर उस शर्त का क्या हुआ? वह बाजी क्या तुमने जीत ली थी, मेम भाभी?'

मेम भाभी की आंखों में फिर झर-झर आंसू बहने लगे। आंसुओं की चमक से उसके गले में पहने हुए हीरे के गहने झिलमिला उठे। जरी के काम की बनारसी चुनरी आंसुओं मे भीग गई। और आंखों से निकले आंसू टप-टप करके ह्विस्की के पेग पर गिरने लगे।

आंखें पोंछकर मेम भाभी ने कहा, 'तू सुनना ही चाहता है तो ले, सुन। जब कहने ही बैठी हूं तो आज सब कुछ कह ही डालूं।'

पर मेम भाभी की कहानी लिखने बैठा हूं तो लगता है कि सब कुछ गड़बड़ हो गया है। शुरू की पंक्ति पढ़ने लगा तो देखता हूं गलती से अन्त की बात पहले ही कह डाली है। कहानी को शुरू से अन्त तक नियम के अनुसार सिलसिलेवार लिखूंगा, तभी तो आप कहानी ठीक से समझ पाएंगे।

अच्छा तो अब शुरू से ही शुरू करता हूं।

अलकेश भैया कोर्ट जाते और अपने काम में डूब जाते। इधर घर में मेम भाभी भी हिन्दू घरों की बहुओं की तरह काम-काज में व्यस्त रहती।

इसी ढर्रे से सब कुछ चल रहा था कि एक दिन अचानक हमारे घर में हो-हल्ला मच गया।

रंगा चाची ने कहा, 'हाय! यह कैसे हो गया?'

बड़ी ताई ने कहा, 'पता नहीं, शायद शराब-वराब पी होगी।'

मां ने कहा, 'लेकिन अलकेश शराब पीता ही कहां है, बड़ी जीजी?'

बड़ी ताई ने कहा, 'पीता है, तुझे क्या मालूम? मेमसाब ही जब

सिगरेट और शराब पीती है तो फिर उसकी भली कहो तुमने ! देवी पीती है और देवा नहीं पीता, यह भला मुमकिन है ? छिप-छिपकर ये लोग क्या-क्या खाते हैं, यह किसे मालूम है ? बताओ भला, जो गाय तक खाते हैं उनकी कैसी तो जाति और कैसा धर्म ?'

दूसरे दिन मुझे खबर मिली कि अलकेश भैया की तबियत ठीक नहीं है।

बीमारी कोई साधारण नहीं थी। डॉक्टरों से घर भर गया। रास्ते में मोटरों की कतार लग गई। पिताजी, रमा भाभी, बड़े ताऊजी सब उसे देखने गए थे। धीरे-धीरे मैं भी गया। पता नहीं क्यों, मुझे कुछ डर-सा लग रहा था। समूचे घर में एक निःशब्द आतंक अपने पैर जमा-जमाकर घूम रहा था। लग रहा था, मानो लोग अच्छी तरह पैर रखने में डरते हों या अच्छी तरह बात करने में भी डरते हों।

सिर्फ दूर से ही मैंने देखा कि मेम भाभी अलकेश भैया के सिरहाने एक चेयर पर बैठी थी। उसकी नजरें किसी ओर भी नहीं भटकती थीं। सावित्री-सत्यवान की फोटो देखी थी मैंने, उस समय मेम भाभी भी बिलकुल सती सावित्री-सी लग रही थी। हैंडलूम की लाल किनारीवाली सफेद साड़ी पहने हुए और बालों को पीठ पर फैलाए हुए ! मांग में सुर्ख लाल सिंदूर और माथे पर बड़ी-सी बिन्दी ! क्या ही ज्योतिर्मयी प्रतिमा-सी लग रही थी वह ! एक के बाद एक कितने ही दिनों से वह उपवास किए हुए अलकेश भैया के पास बैठी थी। पल-भर को भी उसका सामीप्य नहीं छोड़ती। उसको खाने के लिए कहनेवाला भी घर में कोई नहीं था। सेवा-सुश्रुषा करने वाला भी कोई नहीं था। फिर भी उसके चेहरे पर उद्वेग की परछाई तक नहीं थी। धीरज एवं स्थिरता की मूर्ति बनी हुई बैठी थी वह। डॉक्टर आते थे, चले जाते थे। मरीज का निरीक्षण होता था। दवाइयों की गंध, पेनिसिलिन, बरफ आदि कुछ भी बाकी नहीं रहा। पर मेम भाभी का किसी ओर भी ध्यान नहीं बटता था। मानो मेम भाभी मन ही मन अलकेश भैया का ध्यान लगाए बैठी हो। मुझे देखकर भी

मानो उसने नहीं देखा।

मुझे याद है कि हमारे स्कूल के दरवान के घर के पास पीपल के पेड़ के नीचे शिवजी के चबूतरे पर सिर टेककर मैंने प्रणाम किया था और प्रार्थना की थी। मैंने भगवान् से प्रार्थना की थी कि, 'हे प्रभु! मेरी मेम भाभी को हिन्दू मान लो, प्रभु! वह हमारे देश की लड़की नहीं है, इसलिए तुम्हें उसकी चिन्ता नहीं है, यह मैं मानता हूं; लेकिन फिर भी कृपा करके उसको शान्ति दो, प्रभु! अलकेश भैया को ठीक कर दो।'

उसके बाद कालीघाट के ट्राम-डिपो के सामनेवाले गिर्जाघर के पास भी सड़क पर खड़े होकर प्रार्थना की थी मैंने। मुझे पता नहीं कि भीतर मूर्ति थी या नहीं, फिर भी उस अदृश्य देवता को सम्वोधित कर मैंने कहा था, 'मेम भाभी तुम्हारे ही देश की लड़की है, प्रभु! वह यहां आकर मुसीवत में फंस गई है। उसका पति वहुत वीमार होकर अचेत पड़ा है और अब गया, तब गया की-सी हालत हो रही है। उसको आप अवश्य ठीक कर दीजिए, जिससे मेरी मेम भाभी को राहत मिले, हे ईश्वर!'

और लौटते वक्त कालीघाट के मन्दिर में काली मैया से भी प्रार्थना की थी। एक मिट्टी के सकोरे में प्रसाद ले आया था, जिसको मेम भाभी ने वड़े ही भक्ति-भाव के साथ खाया था और खाकर हाथ धो लिए थे। पत्ते पर लगे कालीजी के सिन्दूर से माथे पर विन्दी भी लगाई थी।

इतने कष्ट में भी मेम भाभी के धैर्य और सहनशीलता को देखकर मैं दंग रह गया। मेरी मां, रंगा चाची या वड़ी ताई किसीमें भी मैंने ऐसी भक्ति नहीं देखी थी। अलकेश भैया के लिए क्या नहीं कर सकती थी मेम भाभी! मंत्रित जल पिलाने से अगर अलकेश भैया की वीमारी ठीक हो सके तो वह भी पिलाने को तैयार! काली मैया का प्रसाद खाने से अगर ठीक हो तो वह भी खा लेगी! दिन पर दिन मेम भाभी की सिर्फ सेवा और उत्कंठा ही वढ़ती जा रही थी। पर ऊपर से किसीको भी उसकी उत्कंठा का आभास नहीं मिलता था।

आखिर वड़ी ताई को मजवूर होकर यह कहना ही पड़ा, 'अलकेश

तो मेम से शादी करके निहाल हो गया !'

रंगा चाची ने कहा, 'हां री, अलकेश के बिस्तर से लगी रहती है वह। पल-भर के लिए भी नहीं उठती। भला कोई मेम भी इतना कर सकती है, बहन !'

पिताजी ने कहा, 'क्यों नहीं, जरूर कर सकती है। हमारे ऑफिस के डिकिन्सन साहब की पत्नी भी काली-पूजा का प्रसाद खाती थीं।'

मेम भाभी को लड़की के रूप में प्रह्लाद का अवतार कहकर कोई अतिशयोक्ति नहीं की थी।

मुझे ऐसा लगा कि इतने दिनों में आज पहली बार मेम भाभी का असली रूप देखा है मैंने। सिर्फ मेम नहीं, सिर्फ हिन्दू भी नहीं, सिर्फ मुसलमान भी नहीं। नारी और पुरुष के बाहरी रूप की ओट में छिपा असली व्यक्तित्व तो हरदम सामने आता नहीं। ड्राइंग-रूम का व्यक्तित्व ही तो व्यक्ति का असली रूप नहीं होता। मुझे महसूस हुआ कि इतने दिनों तक मैंने मेम भाभी के जिस रूप को देखा था या उससे सम्बन्धित जैसी भावनाएं मन में रखी थीं, वही सब कुछ नहीं थीं; बल्कि अलकेश भैया की बीमारी के दौर में ही असली रूप पहचान पाया हूं। पर हाय री किस्मत ! मनुष्य को पहचान पाना क्या इतना सहज है ? मैंने कपड़े और गोरे रंग से ही क्या व्यक्ति के बारे में सही राय बनाई जा सकती है ?

दरअसल मेरे लिए उस वक्त तक और भी बहुत कुछ जानना बाकी था।

जिस दिन अलकेश भैया की मृत्यु हुई थी, उस दिन भी मैंने मेम भाभी का अपूर्व सौन्दर्य देखा था। जिस मेम भाभी की आंखों में इतने दिनों तक इतना पानी देखा था, उस दिन मानो शोकवश उनकी आंखों का वह पानी भी सूख गया था। किसीके शोक में मनुष्य इतना खूबसूरत लग

सकता है, इतना पवित्र दिख सकता है, इतना स्निग्ध लग सकता है; यह उस दिन पहली बार जाना था मैंने। मैंने जाना कि दुनिया में किसीका शोक सुनने का किसीके पास समय नहीं है। यह दुनिया कहती है, जो गया उसको जाने दो; जो बचा है उसकी बात करो। जो गया, वह तो गया ही। पर तुम तो मौजूद हो। अतः मै तुम्हें ही स्वीकार करता हूं। मेरा विवाद, प्रणय, परिणय, प्रतियोगिता आदि जो भी है, वह सिर्फ तुमसे ही है। मुझे याद है कि इस निर्जन घर में चुपचाप अकेला गया था कि मेम भाभी को धीरज बंधाऊंगा। पर मैं उसे क्या धीरज बंधाता, बल्कि मेम भाभी को मुझे ही धीरज बंधाना पड़ा।

मेम भाभी ने कहा, 'छीः, छीः, यह क्या ? चुप हो जाओ। ऐसे भी कहीं रोया जाता है !'

मेम भाभी के इस ढाढ़स बंधाने से मेरा रोना और भी बढ़ गया।

मेम भाभी ने मेरे बालों में हाथ फिराते हुए कहा, 'सभी क्या हमेशा जीवित रहते हैं, पगले ? एक न एक दिन तो सभीको मरना होगा। तुम, मैं या कोई भी दुनिया में हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रहेगा। सभी-को जाना है। किसीको पहले और किसीको पीछे।'

मेम भाभी की बातें कौन नहीं जानता और भला किसने नहीं सुनीं, फिर भी अद्भुत आश्चर्य-सा हुआ मुझे। मेम भाभी के मुंह से ये सब बातें सुनकर सचमुच बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

मैंने कहा, 'इतने दिनों बाद मैंने आज समझा है तुम्हें ! तुम बिलकुल पाखण्डी हो, मेम भाभी। तुम अलकेश भैया को बिलकुल प्यार नहीं करती थीं।'

इतने शोक में भी मेम भाभी हंसने लगी थी। बहुत ही मधुर लगी थी वह हंसी। बोली, 'प्यार और चाहत को तू भला क्या जानता है, रे ! बित्ते-भर के छोकरे हो तुम अभी !'

मैंने कहा, 'मैं सब जानता हूं। तुम मेम सहिबाएं प्यार कर ही नहीं सकतीं।'

मेम भाभी वही मधुर हंसी हंसती रही। बोली, 'एकदम से सम्पूर्ण
पर ही लांछन लगा दिया, रे?'

मैंने कहा, 'तो फिर यह क्या बात हुई कि अनकेश भैया मर गए
र तुम रोयीं भी नहीं?'

मेम भाभी ने कहा, 'शायद रोने से ही प्रेम का पता चलता है?'

मैंने कहा, 'जो प्यार करती है, वह भला रोए बिना रह सकती है?'

मेम भाभी पता नहीं क्या कहने जा रही थीं, पर एकाएक खुद को
संभाल लिया और बोली, 'खैर, जाने भी दो; मैं तुमसे इस विषय पर
तर्क नहीं करूंगी। तुम कुछ समझने तो हो नहीं।'

'यह कहकर तुमने तो किनारा कर लिया, पर लोग तो तुम्हारी
निन्दा कर रहे हैं; उसका क्या करोगी?'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरी निन्दा करते हैं तो तेरा क्या जाता है, जरा
सुनूं तो?'

मैंने कहा, 'अरे वाह, तुम्हारी बुराई करने का क्या अधिकार है
उनको?'

मेम भाभी ने कहा, 'करने दो, भली तो मैं पहले भी नहीं कही गई थी
और अब भी नहीं कही जाती हूं। इसके अलावा...!' कहते-कहते पल-भर
को वह चुप रहकर फिर बोली, 'इसके अलावा, जिसके कारण इतनी
दूर आई, इतनी मुश्किल से अपने देश को भुलाया, साड़ी पहनना शु
किया, बिन्दी, सिन्दूर, महावर आदि को कितनी तकलीफ सहकर स्वीक
किया था, जब वही नहीं रहा तो अब कौन क्या कहता है, यह सोच
मैं अपना दिमाग क्यों खराब करूं?'

मैंने कहा, 'वे सब कहते हैं कि तुम वापस विलायत चली जाओगी।'

मेम भाभी उसी तरह मुस्कराकर बोली, 'सच?'

मैंने कहा, 'सच, सभी यही कहते हैं। तुम्हें क्या चिन्ता है, मेम भ
तुम लोग कितने पैसेवाले हो। अगर तुम अपने देश लौट गईं, तो
कितना आनन्द मिलेगा! तुम अपने मां-बाप से फिर मिल सकोगी

पटरा

मेम भाभी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। मेरी बात सुनकर न जाने वह क्या सोचने लगी। लगा, वह अधिक गंभीर हो गई है।

कुछ देर चुप रहकर मैंने कहा, 'क्या सचमुच तुम चली जाओगी, मेम भाभी ?'

अचानक मेम भाभी बोली, 'तू घर जा, पगले ! इस वक्त मुझे एकदम अकेले रहने की इच्छा हो रही है। मैं हाथ जोड़कर तुमसे विनती करती हूं, अभी तू घर चला जा।'

मैं अचंभित-सा रह गया। बोला, 'क्यों, मेम भाभी ? मैंने क्या किया है ?'

मेम भाभी ने कहा, 'यह सब बाद में बताऊंगी। अभी तू जा, भाई।' कहकर उसने बाहर की ओर आहिस्ता से धकेल दिया और मेरे खड़े-खड़े ही दरवाज़ा बन्द कर लिया।

लेकिन दिन पर दिन मेम भाभी का रूप मेरे लिए अबूझ होता गया। अब मेम भाभी को पहचानना भी दूभर हो गया था।

अलकेश भैया के घर में मेम भाभी का जो रूप मैंने देखा था, चाहे वह अलकेश भैया के साथ कार में घूमने जाते समय का हो या किसी आत्मीय-स्वजन से मेल-मुलाकात करते समय का हो, अब लगता है, उससे इसका मानो कोई सम्बन्ध ही न हो। हम सभीको यह उम्मीद थी कि अब मेम-भाभी सीधी विलायत चली जाएगी। क्योंकि कितनी ही मेम साहिबाएं पति के मरने के पहले ही सब छोड़-छाड़कर विलायत चली गई थीं। फिर इसका तो पति ही मर गया है, इसलिए इसमें शक की गुंजाइश ही नहीं थी।

अलकेश के अलावा मंझली ताई के और कोई नहीं था। पर अलकेश भैया के मरने के बाद एक चचेरा भाई पता नहीं कहां से आ टपका !

मेम भाभी तब तक पूर्ण रूप से हिन्दू विधवा बन चुकी थी। सिर के बाल उसने फिर से छोटे-छोटे छंटवा डाले। सिंदूर पोंछ डाला। कोरे सफेद वस्त्र पहनने शुरू कर दिए। एक टाइम उपवास शुरू कर दिया। निरामिष भोजन खाने लगी। प्याज, लहसून की तो बात ही दूर रही, उसने मसूर

ाल भी खानी छोड़ दी। एकादशी, पूर्णिमा आदि सभी व्रत भी करने
ा थी यह।
रंगा चाची ने कहा, 'भई, मेम तो बहुत देखी, पर ऐसी नहीं देखी।'
बड़ी ताई ने कहा, 'मैंने तो सुना है कि वह पत्थर की थाली में खाना
ाती है।'
माँ ने कहा, 'पहले तो सबने यह कहकर उसकी बुराई शुरू कर दी थी
कि वह सिगरेट पीती है, अब कहो?'
पिताजी ने कहा, 'देख लेना, अब मेम बहू दीक्षा लेगी। प्रायः ऐसा ही
होता है। हमारे डिकिन्सन साहब की बहू ने भी अंत में मांस-मछली खाना
छोड़ दिया था।'
सचमुच मेम भाभी को अब पहचानना भी मुश्किल था। एक तो मोटी
उसके बाल सुनहरे थे, अब विधवा होने के बाद वे और भी रूखे हो गए
थे। सुबह उठकर पूजा करने बैठ जाती। फिर अपने लिए चावल की दो
मुट्ठियों का भात स्वयं ही राध लेती। बस, उसके बाद और उसे कोई काम
नहीं रहता। अलकेश भैया का मकान सुनसान पड़ा रहता। कहीं किसी
प्राणी मात्र की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ती। कहीं कोई भी आहट नहीं।
सिर्फ एक नौकर था, जो बाजार का सौदा-सुलुफ खरीद लाता या घर का
कोई काम कर देना।
उस दिन मेम भाभी के पास गया तो देखा कि वहां पूजा की तैयारि
हो रही थी।
मुझे देखकर वह बोली, 'तू आ गया? अच्छा ही हुआ। आज पुरोहि
जी भागवत की कथा पढ़ने आएंगे।'
मैंने पूछा, 'तुम इन सबमें विश्वास करती हो, मेम भाभी?'
मेम भाभी मुस्कराई। बोली, 'क्यों, इनमें विश्वास रखना भी
किसी एक का ही एकमात्र अधिकार है?'
मैंने कहा, 'हां, यह भी ठीक है; अविश्वास से तो विश्वास का वि
करना ही बेहतर है।'

मेम भाभी ने कहा, 'अगर मेरा किया सब कुछ ढोंग और दिखावा ही लगता है, तो मैं क्या करूं ? मेरी किस्मत ही ऐसी है।'

मैंने पूछा, 'तो क्या तुम्हारे इन सब ढकोसलों पर मैं विश्वास करूं ? यही चाहती हो न तुम ?'

मेम भाभी ने कहा, 'तुम्हें विश्वास करने को कहता ही कौन है ? और किसीके विश्वास करने न करने से भला मेरा क्या बनता-बिगड़ता है, यह भी तो सुनूं जरा ?'

मैंने कहा, 'पर मेरे दिल पर चोट लगती है, मेम भाभी। शायद तुम्हें याद नहीं होगा, पर कभी मैंने ही कितने प्रयत्नों से तुम्हारे पैरों में महावर रचाया है, माथे पर बिन्दी लगाई है। वह मैं कभी नहीं भूल सकता।'

मेम भाभी हौले से हंसी। बोली, 'अलक कहा करता था कि उससे शादी करके मैंने बहुत-सी मुसीबतें झेली हैं, जब कि तुम्हीं बताओ, भला किसीको मुसीबत में डाल सकना क्या किसीके हाथ की बात है ? उस पर भी अगर कोई दुःख उठाए या आफत में फंस जाए, तो उसकी जिम्मेदारी किसी पर नहीं होती; न अलक पर, न तुम पर, और न मुझ पर ही।'

कहते-कहते मेम भाभी फिर मुझे उतनी ही खूबसूरत लगी। लगा, जैसे बाहरी वैधव्य के अन्तराल में फिर से मानो मन का वही रंग प्रस्फुटित हो उठा हो।

मेम भाभी ने फिर कहना शुरू किया, 'मां कहा करती थी, तुम्हारा यह खिलवाड़ किसी दिन तुम्हारा काल साबित होगा। पर तब तो मुझे यही लगता था कि जिन्दगी में खेल के सिवाय और कुछ है ही नहीं। मैं सोचती थी, सब कुछ एक फूंक मारकर उड़ा सकती हूं। जीवन, जवानी, स्वास्थ्य, सम्मान सभी कुछ मेरे लिए खिलवाड़ की सामग्री-भर थे। सो सचमुच भई, आखिर यह खिलवाड़ मेरे लिए काल ही सिद्ध हो गया।'

मैंने पूछा, 'सो कैसे ?'

मेम भाभी ने कहा, 'उस समय मैं किसीका भी कहना सुनती थी भला ? जो मन में ठीक जंचता, वही करती। मुहल्ले के लोग हम दोनों

...वानों की आंच में झुलसकर बेचैन रहते। हम दोनों से मतलब है मैं
...र ढोंग। पर हम दोनों में भूल मैंने की।'

मैंने पूछा, 'कैसी भूल ?'

मेम भाभी ने कहा, 'यह तो तुम्हें मालूम ही है कि एक भूल को छिपाने ...के लिए व्यक्ति दस भूलें और करता है। उन दस भूलों द्वारा अपनी एक ...भूल को ढकना चाहता है। एक छोटी-सी भूल के एवज में दस भूलों का ब्याज देकर मूल को मुक्त करवाना पड़ता है, अतः मैंने भी यही किया।'

मैंने पूछा, 'पर तुम्हारी भूल क्या थी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'दरअसल उसे भूल नहीं कह सकते।'

मैंने पूछा, 'भूल नहीं तो फिर और क्या कह सकते हैं।'

मेम भाभी ने कहा, 'एक्सीडेण्ट, यानी दुर्घटना।'

फिर कुछ देर चुप रहकर बोली, 'सारी बातें तुम्हारे सुनने की नहीं हैं, अगर सुन भी लोगे तो समझोगे नहीं। थोड़े और बड़े हो जाओ, तब बताऊंगी।'

मैंने कहा, 'उस समय तक क्या तुमसे मेरी मुलाकात फिर होगी? तब तक क्या तुम यहीं रहोगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'मैं यहां नहीं रहूंगी तो जाऊंगी कहां ?'

यह बात सुनकर मानो मैंने राहत की सांस ली। फिर भी इतनी देर से...
जो बात लाख कोशिशों के बावजूद मुंह से नहीं निकल रही थी, अब सहम...
ही कह बैठा। मैंने मेम भाभी से पूछा, 'क्या इन लोगों ने तुम्हारे ना...
मुकदमा दायर कर दिया है, मेम भाभी ?'

इस बात को सुनकर भी मेम भाभी के चेहरे पर कोई भाव-परिव...
नहीं हुआ। जिस ढंग से वह पहले बैठी थी, अब भी उसी तरह बैठी र...
बोली, 'तो तुम्हारे कानों तक भी खबर पहुंच ही गई ?'

मैंने कहा, 'अनकेल भैया तो रहे नहीं। उनके अलावा इस ...
तुम्हारा और था ही कौन ? अब मामले-मुकदमे के लिए दौड़-धूप ...
भाल कौन करेगा ?'

पटरा...

क्षण-भर मेम भाभी चुप बैठी रही। कोई जवाब नहीं दिया।

उसके बाद बोली, 'देख, अलक तो बहुत भला और सीधे-सरल स्वभाव का था। हम जिस देश की लड़कियां हैं, उस देश में बचपन से ही हमारा कई पुरुषों से साबका पड़ता रहता है। उनके होंठों एवं अंगुलियों की हर-कत देखकर ही हम बता सकती हैं कि वे क्या चाहते हैं। इस देश की लड़कियों की तरह प्रायः हम मर्दों को समझने-पहचानने में गलती नहीं करतीं। मैं अनगिनत लोगों से घर में, घर के बाहर, डांस में, समाज में, गिर्जाघर आदि में मिलती रही हूं; इस आधार पर यह मानना पड़ेगा कि अलक बहुत अच्छा आदमी था।'

मैं चुपचाप सुनता रहा।

मेम भाभी बोली, 'यहां के कितने ही छोकरे हमारे देश में जाकर अपनी स्थिति बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं। जिसकी आर्थिक अवस्था यहां बहुत ही संगीन है, वह भी वहां जाकर अपने को प्रिंस बनकर दिखाने की कोशिश करता है और रुपये-मोहरों का प्रलोभन दिखाता है; पर अलक ने यह सब कुछ नहीं किया।'

मैंने पूछा, 'अलकेश भैया के साथ तुम्हारा परिचय किस तरह हुआ, मेम भाभी ?'

मेम भाभी इस बात का कोई जवाब न देकर दूसरी ही बात कहने लगी, 'जितने दिनों तक मैं लड़कों के साथ प्रेम या यारी किए घूमती-फिरती रही, उतने दिनों तक मुझे यही लगता रहा कि यही सब कुछ है, यही ठीक है। जिन्दगी में यारी-दोस्ती के अलावा और कुछ भी नहीं है। मैं सोचती, पति रुपये कमाकर लाएगा और मुझे अच्छे ढंग से खिला-पहनाकर सुख से रखेगा। मुझे सुख से रखने की जिम्मेदारी मानो उस अकेले की ही हो और मेरा उसके प्रति कोई कर्तव्य ही नहीं हो। जैसे मेरा काम सिर्फ खिल-वाड़ करना ही हो।'

मेम भाभी चुप हो गई। थोड़ा समय यों ही मौन वातावरण में बीत गया। फिर उसने कहना शुरू किया, 'मैं सोचती, जो मुझे चाहत-भरी

नज़रों से देखेगा, मैं उसीके लिए शृंगार करूंगी। जो मेरा गीत सुनकर प्रशंसा करेगा, उसके लिए गीत गाऊंगी। जो मेरे साथ डांस करके अपने को धन्य मानेगा, उत्तेजित होगा; उसके साथ डांस करूंगी। बस, इसके अलावा मानो मेरा कोई काम ही न था।'

थोड़ी देर चुप्पी साधकर मेम भाभी ने फिर कहना शुरू किया, 'पर मेरा यह भ्रम टूट गया, भई! जब अलक से शादी करके यहां आई, तब मेरा यह भ्रम टूट गया। अलक से शादी न करके किसी और से शादी करती, तब भी मेरा यह भ्रम अवश्य टूटता। और यह ज़रूरी भी था कि मेरा वह भ्रम टूटे।

मैंने पूछा, 'क्यों?'

मेम भाभी ने जवाब दिया, 'तुम्हारे देश के लड़के-लड़कियों की तो शादी की जाती है, पर हमलोग खुद करते हैं।'

मेम भाभी ने कहना जारी रखा, 'भई, हमारे समाज की लड़कियों में संयम की आवश्यकता है। हम अपनी पसन्द में ज़रा भी चूके कि बस मारे गए। प्रेम में ज़रा-सी भूल हुई कि सब खतम। हमलोगों में कानून माना जाता है और तुमलोगों में नियम। कानून बदला जा सकता है यानी पति को छोड़कर भी जाया जा सकता है। पर पूर्व दिशा में सूर्य उदय होने जैसे नियम को नहीं बदला जा सकता।'

मैंने कहा, 'यह तो ठीक है, पर तुमने अलकेश भैया से कानून-बद्ध होकर शादी की थी। इसलिए उसे छोड़कर भी तो जा सकती थीं तुम?'

मेम भाभी ने कहा, 'कहां जाती?'

मैंने कहा, 'तुम्हारे लिए जाने की जगह का भी अभाव है क्या? अलकेश भैया के सारे रुपये तो तुम्हें ही मिले हैं न? फिर तुम इतनी मुसीबतें क्यों झेल रही हो?'

मेम भाभी ने पूछा, 'सभीको बहुत आश्चर्य हो रहा है न?'

मैंने कहा, 'आश्चर्य होने की तो बात ही है। इस देश में जितनी भी मेमें ब्याहकर आईं, उनमें से पति के मरने के बाद इस देश में

कोई नहीं टिकी।'

पता नहीं मेम भाभी क्या सोचने लगी। पल-भर बाद बोली, 'पर मेरे जैसी दुर्घटना भी तो किसीके जीवन में नहीं घटी।'

मैंने पूछा, 'एक्सीडेण्ट ?'

'हां, एक्सीडेण्ट।'

जो लोग लड़कियों को रहस्यमयी समझते हैं, मैं उनमें से नहीं हूं। अगर लड़कियां रहस्यमयी हैं, तो पुरुष भी रहस्यमय होते हैं। मनुष्य मात्र ही रहस्यमय है। जितनी देर तक हम किसी दूसरे के मन की बात न जान लें, उतनी देर तक वह हमारे लिए रहस्य ही बना रहता है।

पर मेम भाभी मुझे किसी दिन भी रहस्यमयी नहीं लगी। हम दोनों की उम्र में काफी अन्तर था। मैं मेम भाभी के बेटे की उम्र का था। यद्यपि मेम भाभी के कोई लड़का नहीं हुआ, पर उसे लड़का होता तो वह मेरा हमउम्र ही होता। मेम भाभी लगभग अलकेश भैया की हमउम्र थी। इसलिए मैंने सोचा, उक्त दुर्घटना शायद ऐसी कोई बात होगी जो मुझे बताने लायक नहीं है; या वह इतनी दुःखपूर्ण होगी, जिसे सुनकर मैं रोना-धोना न शुरू कर दूं, इसलिए वह नहीं बताना चाहती।

बाद में ज्यों-ज्यों मेरी उम्र बढ़नी शुरू हुई, त्यों-त्यों हर चीज़ बहुत ही हृदयस्पर्शी ढंग से मुझे ज्ञात होने लगी। जैसे-जैसे मुझपर से शासन का दबाव कम होता गया और आज़ादी की मात्रा बढ़ती गई, वैसे-वैसे सभी परिचित और घनिष्ठ व्यक्ति मुझसे दूर खिसकते गए। पहले जो लड़कियां बिल्कुल मुझे पास बुलाकर मेरे साथ बात करती थीं, वे अब मुझे देखते ही कुछ सतर्क हो जातीं। मंझले भैया ने दाढ़ी बनानी शुरू कर दी तथा धोती के नीचे अण्डर वीयर भी पहनने लगे थे।

मौसेरी बहन ने मुझे बहुत दिनों बाद देखा था, अतः बोली, 'तेरी आवाज़ इतनी मोटी क्यों हो गई है, रे?'

मैं छिपा-छिपाकर कई तरह की किताबें पढ़ता, फलस्वरूप मुझे बहुत-सी बातों का पता चल गया था। कॉलेज के मित्र कोर्स की किताबों में

दबाकर अन्य तरह की किताबें भी साथ लाया करते और अपने जीवन की बहुत-सी कहानियां सुनाते। मैं सबसे छिपकर पिक्चर भी देख आता।

पिताजी पूछते, 'इतना दुबला क्यों हुआ जा रहा है, रे?'

मेरे पास जब करने को कोई काम नहीं होता, तब मैं मेम भाभी के पास जाता। यद्यपि पहले का-सा वह सान्निध्य मुझे नहीं मिलता था, पर अपने मन की नई अभिज्ञता के साथ मेम भाभी को मैं मिला-जुला लेता। मैं और भी पैनी नजरों से मेम भाभी को घूरता। जिन पावों को बचपन में अपनी गोद में रखकर अपने हाथों से महावर लगाया था, उन्हीं पैरों को बड़ी ललचाई नजरों से देखा करता। अब मैं बड़ा हो गया तो मेरा वह अधिकार भी छिन गया। अब मुझे मेम भाभी के नजदीक बैठने को भी नहीं मिलता। अगर मैं कभी पास बैठने की कोशिश भी करता तो मेम भाभी दूर खिसक जाती थी। हमलोग पहले की तरह बातचीत अवश्य करते, पर पहले का-सा वह अपनत्व अब नहीं मिलता था मुझे। सिर्फ मेम-भाभी ही नहीं, बल्कि समूची पृथ्वी ही मानो मुझसे दूर खिसक गई और मैं अकेला रह गया था। अब पहले की तरह घड़ी-घड़ी मां व पिताजी के पास भी नहीं जाता था। इसके अलावा मेम भाभी के पास भी हरदम नहीं जा पाता। अब तो भीतर से दरवाजा बन्द किए कमरे में अकेले पड़े रहना ही मुझे अधिक अच्छा लगता था।

इसी बीच एक दिन मैंने सुना कि मेम भाभी मुकदमा हार गई।

यह खबर कानों में पड़ते ही मैं भागा-दौड़ा मेम भाभी के यहां पहुंचा।

मेम भाभी कुछ काम कर रही थी। मैंने कहा, 'अब तुम कहां जाओगी, मेम भाभी?'

मेम भाभी ने उसी मधुर मुस्कराहट के साथ मेरी ओर देखा और बोली, 'मेरे कारण शायद तुम्हें रात को नींद भी नहीं आती होगी?'

मैंने कहा, 'मजाक छोड़ो। मुझे सचमुच ही नींद नहीं आती, मेम भाभी।'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे पास नींद की दवाई है।'

मैंने पूछा, 'क्या तुम्हें भी नींद नहीं आती, मेम भाभी ?'

ओह, कितने अचरज की बात है ! सचमुच मुझे सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि मेम भाभी कोर्ट में जाकर बोल आई है कि वह मकान छोड़ देगी। वह सिर्फ दो-एक महीने का समय चाहती है। दो-एक महीने में कोई न कोई इन्तजाम कर ही लेगी। और अगर न भी कर सकी तो घर यकीनन खाली कर देगी।

मैंने कहा, 'तुमने अपील क्यों नहीं की, मेम भाभी ! यह तुम्हारा ही तो मकान है। अलकेश भैया का चचेरा भाई कहां से बीच में आ टपका इस मकान पर अपना हक जमाने के लिए ! तुमने हामी भरी ही क्यों मकान छोड़ने की !'

मेम भाभी फिर मुस्कराई। बोली, 'उन्होंने यह अच्छा ही किया है, रे।'

मैंने कहा, 'अब शायद तुम विलायत चली जाओगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'जिस देश से एक बार चेहरे पर कालिख पोतकर चली आई, वहां अब दुबारा लौटकर नहीं जाऊंगी।'

मैंने पूछा, 'क्या अलकेश भैया से शादी करने से सचमुच ही तुम्हारे चेहरे पर कालिख पुत गई ?'

मेम भाभी ने कहा, 'क्या सिर्फ चेहरे पर ही ? सच तो यह है कि अब बाकी ही क्या रह गया है ? अब अगर अपना यह जला मुंह लेकर वहां जाऊंगी तो सब मेरे चेहरे पर थूकेंगे, क्योंकि उस वक्त सभीने मुझे मना किया था।'

मैंने कहा, 'तब फिर क्यों तुमने अलकेश भैया से शादी की ? इसके अलावा इस भारत के और भी तो बहुत-से लोगों ने मेमों से शादी की है, पर उनमें से तो किसी मेम को अपने पर इस कदर शर्म नहीं आई; उनके तो चेहरों पर कालिख नहीं पुती। वे तो जरा-सी अनबन होते ही अपने बच्चों को लेकर वापस अपने देश लौट जाती हैं।'

मेम भाभी ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

मैंने कहा, 'तुम्हारे पास इतना रुपया है। तुम्हारा खुद का मकान है। तुम्हें क्या चिन्ता है, मेम भाभी ? तुम यहां रहकर क्यों यह कोरा थान पहनकर विधवा का जीवन व्यतीत कर रही हो ? तुम्हें किसकी गरज पड़ी है ?'

पल-भर चुप रहकर मैंने फिर कहा, 'इसके अलावा अलकेश भैया भी तो बहुत रुपया कमाते थे, हजारों रुपये की मासिक आमदनी थी उनकी; अतः इतने दिनों में तो तुमने काफी रुपये इकट्ठे कर लिए होंगे, उन्हीं रुपयों में यह मकान क्यों नहीं खरीद लेती ? जबकि वे लोग तुम्हारे हाथों इसे बेचने को तैयार भी हैं।'

मेम भाभी उसी तरह मुस्कराती रही। बोली, 'अरे नहीं भई, मेरे पास अब कुछ भी नहीं है। कल के लिए खाने तक को पैसे नहीं हैं।'

मेम भाभी ने आगे कहना शुरू किया, 'रुपये नहीं हैं, इसीलिए तो एटर्नी वकील को ज्यादा रुपये नहीं दे पाई। विदेशी लड़की हूं, इसीलिए यहां किसीने मेरी सहायता भी नहीं की। कितने ही दिनों तक कोर्ट की दौड़-धूप कर चुकी, पर कोई फायदा नहीं निकला।'

सुनकर मैं स्तंभित हो गया, क्योंकि मैंने सुन रखा था कि अलकेश भैया की एक महीने की आमदनी पांच हजार रुपये थी। इतने सालों में तो कितने ही रुपये इकट्ठे हो जाने चाहिए थे ! सब कहां गए ? किस तरह उड़ गए ? मेम भाभी तो इतनी खर्चीली भी नहीं है। अब मेरी समझ में आया कि क्यों मेम भाभी ने कार बेच दी। क्यों नौकरों की छुट्टी कर दी। क्यों एक टाइम खाना खाती है। इन सभी बातों की ओर मेरा ध्यान गया और सहसा मेम भाभी की दरिद्रता मेरी नजरों के सामने प्रखर होकर मेरे दिल को कचोटने लगी। जिसको मैं इतने दिनों से मेम भाभी का शोक प्रतीक समझता था, जिस बात को श्रद्धा से देखता था; आज उस सबको दरिद्रता महसूस कर मन करुणा से भर उठा। मुझे लगा कि मैंने आज मेम भाभी का आत्मीय बनकर सचमुच ही फिर से उनका सान्निध्य पा लिया है। जिस नि:संगता को मन ही मन इतने दिनों से मैंने पाल रखा

था, वह आज विलकुल खत्म हो गई। मेम भाभी मानो चन्द लमहों में ही मुझे अपनी अत्यन्त आत्मीय महसूस हुई।

मैंने कहा, 'तुम चिन्ता मत करो, मेम भाभी। एक चीज तुम्हें मुझसे लेनी ही पड़ेगी।' कहकर पॉकेट में पड़े दो रुपये निकालकर मैंने मेम भाभी के हाथ में ठूंस देने चाहे। साथ ही साथ मैंने कहा, 'मेरे पास और कुछ तो है नहीं...'

लेकिन कुछ और कह पाता, इससे पहले ही मेम भाभी खिलखिलाकर हंस पड़ी। उस हंसी से मेम भाभी का सर्वांग नाच उठा। वोली, 'पगला कहीं का! मैंने तुम्हें सव कुछ झूठ कहा और तुमने इतनी जल्दी विश्वास भी कर लिया! चल हट, मेरे पिताजी के पास वहुत रुपये हैं।'

मैं चकित-सा रह गया। मेम भाभी की यह कैसी रसिकता है, यही सोचकर मैं गूंगा-सा मेम भाभी के चेहरे को एकटक देखता रहा।

मेम भाभी उसी तरह हंसते-हंसते वोली, 'मैं अपने माता-पिता की एकलौती दुलारी लड़की हूं। आज अगर मैं एक खत लिख दूं, तो उसी क्षण यहां के वैंकों में मेरे नाम हजारों रुपये आ सकते हैं, मालूम है तुझे?'

मैंने कहा, 'तो फिर तुम पत्र लिख दो न, मेम भाभी! रुपये देकर यह मकान खरीद लो न!'

मेम भाभी ने कहा, 'अरे, वस रहने भी दे। ऐसा करने से अलक की स्मृति का अपमान होगा। अलक स्वर्ग गया है और वहां वैठा सव देख रहा है।'

मैं पहले ही कह चुका हूं कि जो लोग लड़कियों को रहस्यमयी मानते हैं, मैं उनमें से नहीं हूं। अगर लड़कियां रहस्यमयी होती हैं, तो पुरुप भी कम रहस्यमय नहीं होते। फिर भी वहुत लोग यह प्रश्न करते हैं कि मैं पुरुपों पर न लिखकर लड़कियों पर ही क्यों लिखता हूं? उनका कहना

है कि लड़कियों पर व्यंग्य-भरे आक्षेप लगाकर मुझे क्या मिलता है ? इसका जवाब मैंने किसीको दिया है, तो किसीको नहीं। मेरा जैसा स्वभाव था, वह लड़कियों से घनिष्टता करने के अनुकूल था। लजीली प्रकृति का होने के फलस्वरूप लड़कियां भी मुझसे स्नेह करती थीं। और रही कटाक्ष की बात ? सो अगर मैं कटाक्ष करता हूं तो उनके लिए आंसू भी बहाता हूं। जो कुछ आंसुओं में मैंने पाया है, उसे ऊपरी व्यंग्यों से हमेशा ढक देना चाहा है।

उदाहरण के तौर पर मेम भाभी को लीजिए। उक्त घटना के बाद मेम भाभी ने दो महीने उसी मकान में व्यतीत किए, पर कभी भी उसके मुखड़े की मुस्कराहट लुप्त नहीं होती थी।

उस वक्त युद्ध का समय था। कलकत्ता महानगर में चावल, कपड़े, किरासिन तेल सभी चीजें दुर्लभ थीं। साधारण लोगों की तो बात ही छोड़िए, बड़े-बड़े पैसेवाले भी इसकी चपेट में आए बिना नहीं रहे। मैं कभी-कभार मेम भाभी के घर भी गया था, पर देखा कि ताला बन्द है। वह कब कहां निकल पड़ती, कोई नहीं जानता। थककर अपने-आप वापस घर लौट आता और सोचता, मेम भाभी किसके पास किस तरह आश्रय लेंगी ? सिर्फ दो महीने तो हाथ में बचे हैं। एक-एक करके कितने दिन तो निकल भी गए।

सुबह गया तो मेम भाभी नहीं थी; दोपहर गया तो देखा, नहीं है; शाम को गया तो भी नहीं थी और रात को गया तब भी नहीं थी। तो फिर मेम भाभी आखिर जाती कहां है ? कौन राशन खरीदकर लाता है, कौन तेल वगैरह लाता है और कौन खाना बनाता है ? काफी सोचने के बाद भी कुछ परिणाम नहीं निकाल पाया।

रंगा चाची कहती, 'अब देखूंगी, सतवती का सतीपना कहां रहता है ?''

बड़ी ताई कहती, 'अब देख लेना, भीतर ही भीतर इन्तजाम करके बिलायत चली जाएगी !'

मां कहती, 'ओह, सचमुच बेचारी मेमसाब को बहुत तकलीफ है !'

एक दिन जब किसी तरह भी मन को वश में नहीं रख सका तो मैं रात-भर जागता रहा। घर में सब सो गए थे और मैं खिड़की की राह से सड़क की ओर देखता रहा। अगर मेम भाभी घर लौटेगी तो हमारे घर के सामने से ही गुज़रेगी। धीरे-धीरे रात और गहरी हुई। दस बज गए, ग्यारह बज गए, घर के सभी प्राणी सो गए। एक-एक कर दूर और आस-पास के घरों की सारी बत्तियां गुल हो गईं। रास्ते में लोगों का आवा-गमन कम हो गया। रास्ता सुनसान हो गया। सड़क का यह स्वरूप मैंने आज तक नहीं देखा था। पल-भर बाद ही मुझे ऐसा लगा मानो एक विधवा रास्ते से गुजर रही है। चेहरे पर घूंघट डाल रखा था। पास आने पर देखा, मैले कपड़े पहने और हाथ में गमछे से ढका खाने का बरतन लिए वह कोई नौकरानी थी, जो अपना काम-काज खत्म करके अपने घर जा रही थी। उसके बाद एक पर्दा लगा रिक्शा टुनटुनाते हुए गुज़रने लगा। शायद मेम भाभी के घर के सामने वह रुकेगा।

उत्सुकता से मैंने सोचा, देखूं, कौन उतरता है ? पर नहीं, वह रिक्शा तो मेम भाभी का घर छोड़कर गली में मुड़कर आगे निकल गया।

उसके बाद बहुत रात बीती। धीरे-धीरे रात के बाहर बज गए। गली के उस पार सड़क के कुत्ते बीच-बीच में भौंक-भौंककर रात के शांत वाता-वरण को चीरकर टुकड़े-टुकड़े किए देते थे। आंखें नींद से भारी हो गईं और आंखों में पानी-सा भर आया, जिससे प्रायः सब कुछ धुंधला हो आया।

मुझे चिन्ता हुई कि इतने बड़े शहर में मेम भाभी को रहने का ठौर-ठिकाना कहां मिलेगा ? उसका यहां कोई है भी नहीं। इस शहर में जब सभी निश्चिन्त होकर आराम से बिछौने पर शरीर को ढीला छोड़कर सोए हैं, उस वक्त शायद मेम-भाभी जिन्दा रहने की आप्राण चेष्टा में क्षत-विक्षत हो छटपटाती हुई कहीं भटक रही होगी। मेम भाभी के लिए कहीं भी कोई आश्वासन या आश्रय नहीं है। एक विदेशी लड़की के लिए

यहां सभी के दरवाजे बन्द हो चुके हैं। अलकेश भैया की मौत के साथ-साथ मेम भाभी भी मानो खत्म हो गईं।

पिताजी, चाचाजी भी चकित-से हो गए थे।

पिताजी बोले, 'हमारे डिकिन्सन साहब की वाइफ ने भी आखिर पार्क स्ट्रीट में बाल बनाने की दूकान खोल ली थी; क्योंकि डिकिन्सन साहब के बहुत रुपये मिले थे उसे।'

चाचाजी ने कहा, 'अलकेश ने लाइफ इन्स्योरेन्स भी नहीं करवाया था क्या ?'

बड़े ताऊजी ने कहा 'उन्होंने क्या कभी कुछ इकट्ठा किया भी था ? मेम पत्नी को पालना क्या इतना सहज है ? इससे तो हाथी पालना अधिक सरल है।'

मैं सबकी बातें और आलोचनाएं सुनता और मन ही मन बहुत-सी बातें सोचता रहता।

युद्ध के धक्के से उन दिनों समूचे शहर का ढांचा ही बदल गया था। रात के समय ब्लैक-आउट रहता। दिन के समय सबके ऊपर दहशत-सी सवार रहती। शहर छोड़ने की तैयारियां हो रही थीं। मिलिट्री की झुण्ड की झुण्ड गाड़ियां सड़क को दहलाकर सर्राटे से निकल जातीं। रास्ते में जगह-जगह मिलिट्री के सैनिक घूमते-फिरते थे। उनकी पोशाकें भी कई तरह की होती थीं। और उनके चेहरे कितने विचित्र थे ! पहले के कलकत्ते को उस समय पहचानना मुश्किल था। किसी भी रेस्तरां में जाओ, सबमें सारी टेबिल-कुर्सियों पर वही दखल किए बैठे मिलते। गाने गाते हुए तथा सीटी बजाते हुए वे हुड़दंग मचाते घूमते रहते। लड़कियों की इज्जत लूटते और भिखारिनों की झोली में रुपये डाल जाते। दूकानों के शीशे तोड़कर, शराब पीकर, वे पागलपन करते और नशे में धुत हो रिक्शेवाले को रिक्शे में बैठाकर खुद रिक्शा चलाने लगते।

सारे कलकत्ते में बिल्कुल अराजकता का साम्राज्य था।

इस हालत में मेम भाभी कहां मिलतीं मुझे ? पता नहीं मेम भाभी

कहां दब-चिथकर खत्म हो गई होगी, यह किसे खबर है? इतना वक्त ही भला किसके पास है और एक विदेशी लड़की के लिए इतना सिर-दर्द होगा भी किसे? किसी दिन जिसके पांव में महावर लगाया था, किसी दिन जिसके पास जाकर अपने मन की निस्संगता दूर की थी और जिसके सामीप्य के लिए सुबह से लेकर शाम तक क्षण गिनता रहता था; उस मेम भाभी को मेरी तरह किसने इतना चाहा था? किसने उसे इस तरह अपना बना लिया था? एक पोस्ट-कार्ड लिखते ही विलायत के विन्सेंट स्क्वायर से जिसके नाम हजारों रुपये यहां आ सकते हैं, उसीको यहां शायद पैसों के अभाव में उपवास करना पड़ता होगा। या हो सकता है, कहीं आत्म-हत्या करके उसने मुक्ति पा ली हो। यह विचार मन में आते ही न जाने क्यों कंपकंपी-सी छूटती है। शायद अलकेश भैया के लिए ही मेम भाभी ऐसी शोकाकुल तपस्या कर रही है। अलकेश भैया की स्मृति के भार से वह लाचार है, इसीलिए ऐसी कठिन तपस्या कर रही है। यह सफेद परिधान और विधवा का वेश तथा विलासविहीन जीवन-यात्रा की यह कष्टदायक तपस्या, ओह!

पर अंग्रेज बहू के इस वैधव्य की कहानी क्या किसीने भी कभी सुनी है? इससे पहले मैंने भी नहीं सुनी थी। मैंने कभी नहीं सुना था कि किसी मेम बहू ने अपना देश छोड़कर और इस देश में रहकर अपने पति के लिए जीवन न्योछावर किया हो; पति और ससुर की जमीन-जायदाद के लिए इतनी अधिक दौड़-धूप की हो।

यह बात किसीके यकीन करने लायक थी भी नहीं। अच्छी तरह जानता हूं कि इस बात पर किसीको विश्वास होगा भी नहीं, लेकिन लोगों के विश्वास-अविश्वास के चक्कर में पड़ने से कहानी लिखना संभव नहीं होता।

पर इसके बाद जो बात मेरी आंखों के आगे आई, वह तो और भी अविश्वसनीय और करुण थी।

सुना है कि वाल्मीकि रामायण में कहीं भी रत्नाकर का जिक्र नहीं

है। लगता है, ग्रंथकार ने रत्नाकर की कहानी की कल्पना करके या कहीं से लेकर इसमें जोड़ दी है। चाहे जो भी हो, पर रत्नाकर की कहानी में हमारा विश्वास पक्का है। इसके अलावा, राम, सीता और रावण में भी हम विश्वास रखते हैं।

पर यह तब की बात है, जब युद्ध जोरों पर था। दिन में जिस आतंक से लोगों के दिलों पर दहशत-सी छाई रहती, वही आतंक और दहशत शाम होते-होते और भी भयानक हो जाती। जिगरी दोस्त पर यकीन करने में डर लगता था। आसपास के लोगों पर दुश्मनों का जासूस समझकर शक होता। यहां तक कि मां अपनी बेटी पर अविश्वास करने लगी थी। अनाज के लिए चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था। एक-एक दाने अनाज के लिए दोस्त-दोस्त में, आत्मीय-आत्मीय में गहरी दुश्मनी ठन गई थी इस कलकत्ते शहर में।

यह सब अधिक दिनों की बातें नहीं हैं। सब हमारी-आपकी आंखों देखी घटना है।

उन दिनों मेम भाभी के घर के सामने से अकेले आने-जाते मन में एक टीस-सी उठती। घर रात-दिन वीरान पड़ा रहता। खिड़की-दरवाजे सब बन्द। घर के सामने लगा लेटर-बॉक्स खाली पड़ा रहता, मानो वहां जीवन का कोई नामो-निशान ही न हो। अलकेश भैया जिन्दा थे, तब मकान में रंग करवाया गया था। सामने लोहे का गेट लगवाया गया था। वर्दी पहने चपरासी, खानसामा, दरवान, नौकर-चाकर सब थे। शाम के वक्त रोशनी से मकान जगमगाता रहता। गेट पर पर्दे लगे रहते, रेडियो बजता रहता, मोटर एवं मुवक्किलों का मजमा लगा रहता। अलकेश भैया की मौत के कुछ दिनों बाद तक बाहर की शान-शौकत कायम रही। मेम भाभी ने नौकर-चाकर किसीको भी नहीं छोड़ा था। पर अचानक ही मेम भाभी के वैधव्य की तरह एक दिन सब कुछ मरणासन्न हो चला। सबसे पहले एक दिन कार बिकी। उसके बाद धीरे-धीरे नौकर-चाकर सब बरखास्त होने गए। बाहर की दीवारें सीलन से मैली हो गईं, भीतर की दीवारें भी बिलकुल सफेद हो गईं। ठीक मेम भाभी के उदास सफेद कपड़ों की तरह।

कभी-कभी दोपहर के वक्त उधर जाता, तो देखता कि मेम भाभी पूजा कर रही है। फिर पूजा खत्म कर मुझे देखकर मुस्कराती। वोलती, 'वैठ नटखट, मैं गंगाजल से हाथ धोकर आती हूं।'

वह सफेद पत्थर की थाली में खाना लेकर आती तो मैं दूर खिसककर वैठ जाता।

मेम भाभी पूछती, 'तुम्हारा खाना-पीना हो गया?'

मैं पूछता, 'तुमने खाना खाने में इतनी देर क्यों कर दी?'

उसी दौरान अदालत में मुकदमा शुरू हो गया। तव रिक्शे में वैठकर मेम भाभी वकील के यहां जाने लगी।

मैं कहता, 'जव भी तुम्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, मुझसे कह देना, मेम भाभी!'

मेम भाभी तपती धूप में झुलसकर काफी देर से घर लौटती और शाम को फिर निकल जाती। पहले जव अलकेश भैया के साथ कार में वैठकर वह न्यू मार्केट घूमने जाती या मैदान में हवा खाने जाती, तव का रूप भी मुहल्ले के लोगों ने देखा था; और अव जव वह विल्कुल निस्संग हालत में मामले-मुकद्दमे में जकड़कर पर्दे से ढंके रिक्शे में वैठती, वह रूप भी देखा। सव कुछ देख-सुनकर मेरी तरह वे भी दंग रह गए। अचरज, उत्सुकता एवं विचित्रता से मानो वे विमूढ़-से हो गए थे। जिस-जिसने अलकेश भैया की मेम पत्नी को देखकर कटु व्यंग्य-वाण छोड़े थे, अव वे सभी अपनी आंखों से यह सव देखकर मेम भाभी के व्यक्तित्व से दिग्भ्रमित एवं विमूढ़ हो गए थे। मेम भाभी के साथ मुहल्ले के लोगों की वोल-चाल नहीं थी तो वैसी कोई असद्भावना भी नहीं थी। जैसे कोई भी यह पूछने नहीं आता था कि मेम भाभी के पास खाने को है या नहीं, उसी तरह मेम भाभी भी खुद जाकर अपनी दुर्दशा से किसीको परिचित नहीं करवाती थी।

सिर्फ उस दिन पहली वार वह मेरे सामने वोली थी, 'कल क्या खाऊंगी, खाना भी नसीव होगा या नहीं; कौन जाने!' यह भी उसने मुझसे किसी प्रकार की सहायता की उम्मीद से नहीं कहा था।

मेरे देखते ही देखते मेम भाभी का नरम-नाजुक चेहरा इन कुछ दिनों में ही कैसा कठोर और कर्कश होता जा रहा था! मैं देख रहा था कि सिर्फ चेहरा ही नहीं, बल्कि धीरे-धीरे उसकी पोशाक-पहनावे में भी दरिद्रता की छाप पड़ने लगी थी। बल्कि आंखों पर, चेहरे पर, यहां तक कि शरीर की प्रत्येक रेखा पर छाप पड़ चुकी थी। विधवा होते ही शरीर के समूचे गहने खोलकर उसने बक्स में रख दिए थे। धीरे-धीरे वे गहने बक्से से भी हमेशा के लिए गायब होते जा रहे हैं, यह मुझे पता नहीं चला।

एक दिन अपनी घड़ी उसने मुझे ही दी थी, 'यह तू ले ले।'

पर मैंने ली नहीं। मुझे याद है उसे बेचकर मैंने तीन सौ रुपये ले जाकर मेम भाभी के हाथ में रख दिए थे। मेम भाभी नाराज नहीं हुई, सिर्फ एक म्लान-सी हंसी उसके होंठों तक आई थी। मुझे सब कुछ मालूम है; मुझसे उसकी हालत छिपी नहीं, यह सोचकर शायद उसके चेहरे पर उस दिन फीकी मुस्कराहट तैर गई थी।

पर इतना सब होने के बावजूद मन की कोई ऐसी गुप्त बात थी, जो मेम भाभी ने मुझे भी कभी नहीं बताई। और यहीं पर मैं मात खा बैठता।

कई दिन तक केस चलता रहा। महीने पर महीने बीतते रहे; शायद इसी तरह कई सालों तक यह केस चलता, पर एक दिन अचानक मेम भाभी के वकील ने अदालत में जाकर कहा, 'मेरी मुवक्किल श्रीमती नोरा मित्र इस केस को चलाने में असमर्थ होने के कारण मकान स्वयं ही छोड़ने को तैयार है। वह अपने प्रतियोगी से आगे मुकदमा लड़ने को राजी नहीं है।'

हमें दृढ़ निश्चय हो गया कि अन्ततः मेम भाभी जरूर विलायत चली जाएगी। लेकिन वास्तविकता क्या है; इसका मुझे पता नहीं था। मुझे यह भी नहीं मालूम था कि आबू रोड जाने पर मेम भाभी से दुबारा भेंट होगी। उस समय तक मैं यह भी नहीं जानता था कि फतेहगढ़ के बड़े महाराजा के साथ मेम भाभी का क्या सम्बन्ध है?

सिर्फ यही नहीं, मेम भाभी के कोई भाई-बहन भी है, यह भी नहीं मालूम

था। मुझे नहीं मालूम था कि मेम भाभी के मंझले भाई का नाम विली है। अभी तक विली के साथ मेरी भेंट नहीं हो पाई थी। युद्ध के समय अगर सेना में भर्ती होकर वह कलकत्ते न आया होता, तो उसके बारे में यह सब मुझे मालूम ही नहीं चलता।

मेम भाभी लापता थी। चौरंगी पर चलते-चलते बहुत-से विचित्र विदेशी चेहरे और अनोखी पोशाकें देख-देखकर मैंने उनमें अपनी मेम भाभी को ढूंढ़ने की कोशिश की थी। जब बहुत ढूढ़ने पर भी उसका कोई अता-पता नहीं मिला, तो मैंने आखिर यही सोचा कि किसी प्लेन या जहाज पर आश्रय पाकर वह स्वदेश लौट गई होगी। मैं सोचता, एक विदेशी बंगाली से शादी करके उसने जो बड़ी भूल की थी, उसीका प्रायश्चित करने वह अपने पैसे-वाले मां-बाप के पास लौट गई होगी और वहां बरफ से ढकी अपने देश की मिट्टी में पांव रखते ही उसकी सारी जलन और पीड़ा शान्त हो गई होगी।

···और तभी अचानक एक अनोखे परिवेश और पोशाक में मेम भाभी के साथ मेरी मुलाकात हो गई। सच कहूं तो यह मुलाकात मेरी कल्पना के बिलकुल परे की चीज थी।

यह तब की बात है, जब अपने कॉलेज के एक मिशनरी प्रोफेसर से पत्र लेकर मुझे स्ट्रैण्ड होटल में एक व्यक्ति से नौकरी के सिलसिले में मिलना पड़ा। पहले कभी भी मुझे इस होटल में जाने का मौका नहीं मिला था। सिर्फ बाहर से ही होटल को ताक-झांककर देख लेता था। इधर-उधर गोरी चमड़ीवाले लड़के-लड़कियां आते-जाते दिखाई देते थे। होटल केआगे से गुजरते वक्त पता नहीं कैसी एक मीठी खुशबू रंध्रों में भर जाती! पता नहीं, कैसा एक रोमांच-सा हो आता! ब्रिटिश शासन के समय उस होटल में हमलोगों का प्रवेश प्रायः निषिद्ध ही था। खासकर देशी धोती-कुर्त्ता तो पहनकर एकदम ही नहीं। उस समय गोरी चमड़ी का शासन था और उसपर युद्ध का सुअवसर! होटल के मालिक होटल में पूरा खाना देने का इन्तजाम कर पाने में असमर्थ थे और न ही इस ओर वे ध्यान देते थे; क्यों कि दिन में अगर वे पचास हजार रुपयों की शराब खरीदकर रख लेते तो

ं-रात उसमे तीन लाख रुपयो का फायदा उठा लेते थे। सोना, रुपया,
ाव, लड़कियां, सम्मान, मर्यादा और मौन सभी में उस समय एक प्रति-
गिता-सी चल रही थी। पता नहीं, कहां-कहां से दूर-दूर के अनजाने देशों
लोग जल-पथ और वायु-पथ से हजारो की संख्या में इस देश से उस देश
ा-जा रहे थे। यहां आकर दो मिनट के लिए होटल में आते, पर होटल
में जगह मिलनी मुश्किल होती। कलकत्ता के सभी मैदानों में सैनिकों के
तम्बू बंध गए थे। वे झुण्ड बनाकर आते और पल-भर में छू-मन्तर हो
जाते। धूल और आंधी की तरह मनुष्य का जीवन भी एक पल में उड़
जाता। एक फूंक में रातो-रात मानव का समूचे का समूचा यौवन खत्म
हो जाता। मान-मर्यादा निष्ठुर पावों के तले पिसकर धूल में मिल जाती।
पर अचरज की बात तो यह थी कि होटल के एकान्त कोनों में न कहीं रुपयों
का अभाव था और न शराब की कमी।

ऐसे वक्त मे पढ़ाई खत्म करने के बाद नौकरी के सिलसिले में मेरा
भी उस होटल मे जाना अनिवार्य हो गया। यद्यपि नौकरियों का कहीं
अभाव नहीं था, लेकिन अपनी पसन्द की नौकरी मिलनी मुश्किल थी।

होटल पहुंचा तो मेरे अचरज का ठिकाना न रहा। वहीं शराब के एक
काउटर पर मेम भाभी से मेरी भेंट हो गई!

चौरंगी की सड़क से होटल के गेट मे घुसते समय मैं बहुत ही डर-ड
कर कदम बढ़ा रहा था। चारो ओर संगमरमर की सजावट थी। अ
गिनत लोगों का आना-जाना चालू था। कार्पेट बिछे फर्श पर हौले-ह
कदम रखता हुआ मैं आगे बढ़ा जा रहा था। जरा-सी दूर चलते ही मैं
नये वातावरण में पहुंच गया। एक तरफ सीढ़ी थी और दूसरी तरफ
कमरे थे, जिनमे कोच-सोफा वगैरह सजे हुए थे। चारो ओर गलिय
अचरज की राहें बनी हुई थीं। किस रास्ते से जाने पर मैं कहां पहुंचूंग
पता नहीं था। पृथ्वी पर मनुष्यों मे जो आपसी कालरूपी युद्ध छिड़
था, उसकी इस वातावरण में बात तक याद रहनी असम्भव थी।
के दोनों बगल मे लाल रेक्सिन लगी नीची-नीची चेयरें पड़ी थीं

पटर

और मर्दों का झुंड का झुंड जाम पी रहा था। बीच-बीच में खानसामे इधर-उधर दौड़ रहे थे। बोतल से सजी ट्रे! पीठ खुली मेम साहिबाएं! डिनर सूट में सजे तथा हाथ में सिगरेट लिए गोरे साहब! इसके अलावा नाक में टकराती हुई एक रहस्यमय मीठी-मधुर खुशबू का असर!

मेरा पहला और बिल्कुल नया-नया आना हुआ था यहां। चारों ओर एकटक देखते रहने पर भी जैसे मेरा मन नहीं भर रहा था। एक साथ इतनी सारी सुन्दरियों का एक जगह समावेश अपनी जिन्दगी में मैंने इससे पहले कभी देखा हो, ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता। इतने गाऊन, इतनी लिपस्टिकें, इतने सुनहरे बाल, इतनी सिगरेटें, और इन सब पर उनका वह समादर! प्रत्येक सुन्दरी के पास ललचाई नज़रोंवाले पुरुषों का झुंड! और उन सुन्दरियों के एक-एक कटाक्ष से त्रिभुवन में प्रलय मच जाने की-सी उन पुरुषों की हालत!

अधिक देर उधर देखते रहने से मुझे न जाने कैसी शर्मिन्दगी-सी महसूस हो रही थी।

धीरे-धीरे सीढ़ी से होकर ऊपर गया और बताए गए ठिकाने के अनुसार ढूंढ़-ढांढ़कर किसी तरह गन्तव्य स्थान तक पहुंच गया। एक साहब को बस एक मामूली-सा पत्र-भर देना था। लेकिन साहब उस वक्त अपने कमरे में नहीं थे। इसलिए पत्र लेकर मैं वापस लौट आया।

सीढ़ियों से वापस नीचे उतर रहा था कि नीचे से किसीकी हंसी मेरे कानों में पड़ी।

ऊपर से गर्दन बढ़ाकर नीचे झुकाई तो देखा कि हॉल के कोने में एक सुन्दरी को बहुत-से मर्दों ने घेरकर हुड़दंग मचा रखा है। उनकी हंसी गूंज रही है। उनके अगल-बगल के वातावरण में सिगरेट का धुआं जमा हो रहा है।

वहां मैंने जो कुछ देखा, उसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया।

अचानक मुझे खयाल आया कि मुझे देखकर एकाएक सबकी हंसी थम गई है और सारा कोलाहल स्तब्ध हो गया है।

मुझे सामने देखते ही मेम भाभी उस कार्पेट पर तेज़ डग भरते हुए
...ी ओर चली आई।

उस समय की मेम भाभी को क्या मैं ठीक से पहचान पाया था ?

मुझे याद है कि सिर के बाल उसने छोटे और छल्लेदार बनवा लिए थे। पलकों एवं होंठों को रंग रखा था। गालों के डिम्पल, कानों के ईयरिंग और खुली पीठवाले गाऊन में अग्निशिखा-सी जो औरत मेरे पास बढ़ आई थी, वही मेरी मेम भाभी है, इसपर मैं एकाएक विश्वास नहीं कर सका।

मेम भाभी लिफ्ट से पता नहीं कहा और किस तल्ले पर मुझे ले गई, यह मेरी समझ में नहीं आया। इस दौरान मैं बराबर चुप रहा, मानो मुझे बात करने का भी होश नहीं हो।

एक एकान्त जगह बैठते ही मैंने कहा, 'मेम भाभी !'

मेम भाभी ने कहा, 'तो तुमने मुझे पहचान लिया ?'

मेरे मुह से बहुत देर तक कोई आवाज नहीं निकली।

मेम भाभी ने पूछा, 'तू यहा क्या करने आया था ?'

मुझे लगा, जो प्रश्न मुझे करना चाहिए था, ठीक वही प्रश्न ...
भाभी ने मुझसे किया है।

मैंने कहा, 'मेम भाभी, मैं तुम्हें यहा इस रूप में देखूगा, यह मैंने ...
मैं भी नहीं सोचा था।'

मेम भाभी के सूने मकान की ओर निहारते समय उन दिनों ...
विचित्र धारणाए बनती थी मेरे मन में। कितनी ही बार सोच...
शायद मेम भाभी विलायत चली गई होगी या कहीं पर अज्ञातवास...
अपने दुःख से थककर धैर्य की अन्तिम सीमा पर पहुच चुकी ...
अपने हाथो से अपना घोर अपमान करके सारे दुःखों और अपमानों ...
कर दिया होगा या खुद पर गहरा आघात करके उसने अपने ...

और मर्दों का झुंड का झुंड जाम पी रहा था। बीच-बीच में खानसामे इधर-उधर दौड़ रहे थे। बोतल से सजी ट्रे ! पीठ खुली मेम साहिबाएं ! डिनर सूट में सजे तथा हाथ में सिगरेट लिए गोरे साहब ! इसके अलावा नाक में टकराती हुई एक रहस्यमय मीठी-मधुर खुशबू का असर !

मेरा पहला और बिल्कुल नया-नया आना हुआ था यहां। चारों ओर एकटक देखते रहने पर भी जैसे मेरा मन नहीं भर रहा था। एक साथ इतनी सारी सुन्दरियों का एक जगह समावेश अपनी जिन्दगी में मैंने इससे पहले कभी देखा हो, ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता। इतने गाऊन, इतनी लिपस्टिकें, इतने सुनहरे बाल, इतनी सिगरेटें, और इन सब पर उनका वह समादर ! प्रत्येक सुन्दरी के पास ललचाई नजरोंवाले पुरुषों का झुंड ! और उन सुन्दरियों के एक-एक कटाक्ष से त्रिभुवन में प्रलय मच जाने की-सी उन पुरुषों की हालत !

अधिक देर उधर देखते रहने से मुझे न जाने कैसी शर्मिन्दगी-सी महसूस हो रही थी।

धीरे-धीरे सीढ़ी से होकर ऊपर गया और बताए गए ठिकाने के अनुसार ढूंढ़-ढांढ़कर किसी तरह गन्तव्य स्थान तक पहुंच गया। एक साहब को बस एक मामूली-सा पत्र-भर देना था। लेकिन साहब उस वक्त अपने कमरे में नहीं थे। इसलिए पत्र लेकर मैं वापस लौट आया।

सीढ़ियों से वापस नीचे उतर रहा था कि नीचे से किसीकी हंसी मेरे कानों में पड़ी।

ऊपर से गर्दन बढ़ाकर नीचे झुकाई तो देखा कि हॉल के कोने में एक सुन्दरी को बहुत-से मर्दों ने घेरकर हुड़दंग मचा रखा है। उनकी हंसी गूंज रही है। उनके अगल-बगल के वातावरण में सिगरेट का धुआं जमा हो रहा है।

वहां मैंने जो कुछ देखा, उसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया।

अचानक मुझे खयाल आया कि मुझे देखकर एकाएक सबकी हंसी थम गई है और सारा कोलाहल स्तब्ध हो गया है।

मुझे सामने देखते ही मेम भाभी उस कार्पेट पर तेज डग भरते हुए
ओर चली आई।

उस समय की मेम भाभी को क्या मैं ठीक से पहचान पाया था ?

मुझे याद है कि सिर के बाल उसने छोटे और छल्लेदार बनवा लिए थे। पलकों एवं होंठों को रंग रखा था। गालों के डिम्पल, कानों के ईयरिंग और खुली पीठवाले गाऊन में अग्निशिखा-सी जो औरत मेरे पास बढ़ आई थी, वही मेरी मेम भाभी है, इसपर मैं एकाएक विश्वास नहीं कर सका।

मेम भाभी लिफ्ट से पता नहीं कहां और किस तल्ले पर मुझे ले गई, यह मेरी समझ में नहीं आया। इस दौरान मैं बराबर चुप रहा, मानो मुझे बात करने का भी होश नहीं हो।

एक एकान्त जगह बैठते ही मैंने कहा, 'मेम भाभी !'

मेम भाभी ने कहा, 'तो तुमने मुझे पहचान लिया ?'

मेरे मुंह से बहुत देर तक कोई आवाज नहीं निकली।

मेम भाभी ने पूछा, 'तू यहां क्या करने आया था ?'

मुझे लगा, जो प्रश्न मुझे करना चाहिए था, ठीक वही प्रश्न मे
भाभी ने मुझसे किया है।

मैंने कहा, 'मेम भाभी, मैं तुम्हें यहां इस रूप में देखूंगा, यह मैंने म
मैं भी नहीं सोचा था।'

मेम भाभी के सूने मकान की ओर निहारते समय उन दिनों वि
विचित्र धारणाएं बनती थीं मेरे मन में। कितनी ही बार सोचत
शायद मेम भाभी विलायत चली गई होगी या कहीं पर अज्ञातवास
अपने दुःख से थककर धैर्य की अन्तिम सीमा पर पहुंच चुकी ह
अपने हाथों से अपना घोर अपमान करके सारे दुःखों और अपमानों क
कर दिया होगा या खुद पर गहरा आघात करके उसने अपने म
पटरा

ानों का वदला ले लिया होगा ।

उक्त सारी धारणाओं का आज होटल की वास्तविकता से जव कोई सामंजस्य नहीं मिला तो यह मेरे लिए सचमुच आश्चर्यचकित होने की वात थी । मेम भाभी की ओर गौर से देखकर भी मानो मैं उसे पहचान नहीं पाया ।

मैंने कहा, 'तुम्हें यह क्या हो गया है, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने पूछा, 'क्या हुआ है मुझे, ज़रा वता तो ?'

यह वात भी क्या मुझे मेम भाभी को समझाकर कहनी पड़ेगी कि उसके उस चेहरे का कहीं कोई मेल नहीं। कहां गया वह सिन्दूर, महावर, विंदी, साड़ी, पूजा, एकादशी-व्रत और सफेद थान पहनकर पवित्र विधवा जीवन ? आज इस रूज, पाउडर, लिपस्टिक, कुत्सित हंसी-मजाक, अश्लील पोशाक और होटल के भीतर के इस दूषित वातावरण आदि के वीच में मानो मैं उन दिनों की अपनी मेम भाभी को ढूंढ़ने पर भी कहीं नहीं पा सका ।

मैंने कहा, 'क्या सचमुच ही तुम मेरी वही मेम भाभी हो ? मैं तो तुम्हें ठीक से पहचान भी नहीं पा रहा हूं ।'

मेम भाभी हंसने लगी । वोली, 'तुम्हारी इतनी उम्र हो गई, फि भी तुम ऐसी वात पूछते हो ?'

मैंने कहा, 'मेम भाभी, पर मैं तुम्हें प्यार जो करता था ?'

मेम भाभी फिर हंसी । वोली, 'तुम भूल कर रहे हो, नटखट ! मु भूल जाओ, भाई ।'

मैंने पूछा, 'पर यह सव हुआ कैसे ?'

मेम भाभी ने कहा, 'एक्सीडेंट । वस, और कुछ नहीं ।'

मैंने कहा, 'सव झूठ ! तुम जिस देश की लड़की हो, ठीक उ उपयुक्त ही काम कर रही हो। तुमपर यकीन करके मैंने गलती की । भाभी, क्या अलकेश भैया के चेहरे पर कालिख पोतते समय तुमने ज़र आगा-पीछा नहीं सोचा ? क्या तुम इतनी नीच और स्वार्थी हो ?'

मेम भाभी चुप रहकर एकटक मेरी ओर देखती रहीं।

पता नहीं मुझे क्या हुआ कि घृणा, शर्म और अपमान से भरकर मैं वहां से भागकर बाहर निकल आया। मैंने सोचा था, शायद मेम भाभी मुझे रोकेंगी या पीछे से पुकारेंगी और अन्त में एक बार अपनी असहाय अवस्था के बारे में मुझे समझाने की कोशिश करेंगी। किन परिस्थितियों में पड़कर यह घृणित काम करके जीवन-यापन करने को वह मजबूर हुई, ये सारी बातें खोलकर मुझे समझाएंगी। मनुष्य की अपमानित आत्मा की किस तरह अपमृत्यु होती है, वह मुझे यह भी बताएंगी। पर मेरी सारी धारणाएं गलत निकलीं। सचमुच मेम भाभी को पहचानने में मैंने उस दिन गलती ही की थी।

सीढ़ी से नीचे उतरते समय चारों तरफ के उस भोग-विलास एवं अतिशय ऐश्वर्य के बीच मानो मन-प्राण से मेरी आत्मा आर्तनाद कर उठी। शराब, विभ्रम, हो-हल्ला एवं सभ्यता के नाम पर कलंक के उस साम्राज्य को पारकर बाहर निकलते समय भी मेरे मन पर मेम भाभी की बात ही बार-बार हथौड़े की-सी चोट कर रही थी। मेम भाभी वहां कैसे रहेंगी? कैसे वह वहां रहकर अपने दिन बिताएंगी? क्या इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं था उनके पास?

उसी समय मिलिट्री के सैनिकों का एक झुण्ड हुल्लड़ मचाता हुआ होटल के गेट से भीतर घुसा। मैं उनसे कन्नी काटकर बाहर की खुली हवा में निकल आया। मुझे डर लगने लगा कि हो सकता है, ये लोग मेम भाभी पर अत्याचार करें या उनका अपमान करें। दो जून की रोटियों के लिए वह सारा अपमान भी संभवतः मेम भाभी को हंसते-हंसते सहन करना पड़ेगा।···डर के मारे मेरा सारा बदन सिहर उठा।

उस दिन घर लौटकर भी मेरे मन को शान्ति नहीं मिली थी। हर रोज शाम के समय होटल के विपरीत दिशावाले फुटपाथ पर अंधेरे में खड़ा एकटक होटल की ओर देखता रहता। होटल के भीतर की वह खुशबू मेरे नाक तक तैरकर आती रहती। भीतर से एकाध ठहाके बाहर आकर गिरते

रहते। होटल के बाहर जब अकाल और दुर्भिक्ष से अनगिनत लोग त्रस्त होकर शहर का वातावरण गम्भीर बना रहे थे, उस समय भीतर से नाच-गाने और वाद्य की आवाज़ एवं शराब की गन्ध बाहर की ओर तैरकर आ रही थी। रुपयों की खनखनाहट और रूप की झुलसाहट से कितनी गगन-चुम्बी कल्पनाएं फर्श पर बिछे कार्पेट पर लुढ़ककर खत्म हो गई, जीवन के कितने गिरि-शृंग पद-दलित हुए और कितनी निष्पाप अभिलाषाओं और अरमानों का खून हुआ, यह इतिहास में नहीं लिखा गया। होटल के गेट में एक के बाद एक झुंड भीतर घुसता और न जाने कितनी निराशाओं के दीर्घ निःश्वास को ईथर में मिलाकर, नारीत्व के गौरव को कलंकित करके वह बाहर निकलता इसका लेखा-जोखा या नामोनिशान तक भी याद रखना कोई नहीं चाहता। कलकत्ते से सिंगापुर, सिंगापुर से मलाया और मलाया से फिलिपाइन्स; कहीं भी इसका व्यतिक्रम नहीं घटता; एक ही इतिहास की सभी जगह पुनरावृत्ति होती है।

मैं उन दिनों का सिर्फ मौन साक्षी बनकर एकदम अकेला चौरंगी के निर्जन फुटपाथ पर एक मद्धिम-से गैस-पोस्ट के नीचे खड़ा रहता और तीखी नजरों से हर सुन्दरी के चेहरे को गौर से देखता। सोचता, शायद मेम भाभी जैसी कोई सूरत नजर आ जाए; महज एक मुहूर्त्त के भग्नावशेष के लिए ही शायद उसकी झलक मिल जाए! मैं मेम भाभी के कलंक का साक्षी बनकर वहां नहीं खड़ा रहता था और न ही उसको अपमानित होने से बचाने के लिए; बल्कि किसी दिन मेम भाभी को मैंने प्यार किया था, शायद यह उसीका असर था, जिसके कारण मैं उसे सिर्फ एक नजर देखने-भर के उद्देश्य से वहां खड़ा रहता था।

एक दिन मुझे वह सुअवसर मिल गया।

उस समय रात बहुत हो चुकी थी। जब बहुत दिनों तक काफी-काफी

देर वहां खड़े रहकर भी वह मुझे दिखाई नहीं पड़ी तो उस दिन धीरे-धीरे मैंने होटल के गेट मे कदम रखा। मुझे ऐसा लग रहा था, मानो मौत के गह्वर मे प्रवेश कर रहा हूं। बगल में वही शो-केश था। पैरों तले कार्पेट को रौंदकर आगे खिसकती हुई वही भीड़, परिचित गन्ध और तंग पोशाकें! इसके अलावा उस दिन की तरह गोरे शरीरों की भरमार, बिलियर्ड-टेबल और शराब का काउन्टर! सबसे अन्त मे सीढ़ी के नीचे रेक्सिन मढ़े हुए सोफा-कोच आदि! और नीची-नीची टेबिलों पर बोतल, गिलास और डिकेन्टर!

मेरी नज़रें घूम-फिरकर सिर्फ एक ही मनुष्य की एक जोड़ी काली आंखों को ढूंढ रही थीं।

अचानक मेम भाभी को देखा। उद्धत और उत्ताल होकर जो लड़की बहुत-से मर्दों को उन्मत्त बनाए दे रही थी, वही मेरी उन दिनों की मेम भाभी है; यह मुझे समझने की जरूरत नहीं पड़ी।

एक बार तो मैंने मन में सोचा कि मैं क्यों आया यहां? लौट जाऊं? चारों ओर गूंजती हुई-सी ऑर्केस्ट्रा की आवाज मानो समूचे वातावरण को नशीला बना देना चाहती थी। जो भी यहां आता है, वह अपनी स्वस्थ जागृत चेतना को खो बैठता है। लाज-शरम, पवित्रता सब कुछ मानो गेट के बाहर ही त्याग कर लोग निरावरण हो यहां घूमते हैं। मानो समूचे सम्मान और शालीनता को बाहर तिलांजलि देकर ही यहां प्रवेश करने का अधिकार पाया जा सकता है।

लेकिन फिर भी मेम भाभी मुझे नहीं देख पाई।

मैंने देखा कि मेम भाभी हाथ के पेग को ऊंचा किए पता नहीं क्या बोल रही थी। उसके बाद सिगरेट का एक लम्बा-सा कश लेकर उसने धुआं उगल दिया और फिर अचानक ही सारे लोग धड़धड़ाते हुए मेम भाभी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए। मेम भाभी की पीठ का समूचा हिस्सा दिखाई दे रहा था। पीठ का मेरुदण्ड भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था। लगता था, मानो उसका रोम-रोम नशे की उत्तेजना से कांप रहा हो।

बारीक सिल्क के आवरण को भेदकर मानो मेम भाभी का समस्त उच्छ्वास प्रत्यक्ष दीख रहा था। उसने एक हाथ ज़रा-सा ऊंचा क्या कर लिया, मानो उसकी प्रत्येक शिरा के रक्त के प्रवाह में दुगुनी गति आ गई हो और इसके साथ ही वहां उपस्थित प्रत्येक मर्द के रक्त-प्रवाह में भी उस अदा ने प्रलय मचा दी हो। मनुष्य, धन, वैभव, भोग, विलास, सम्मान, आदि सब मानो चंचल हो उठे। गोया मेम भाभी के एक इशारे से मनुष्य के चेहरे पर से मनुष्यता का मुखौटा हट गया हो।

बस, इससे अधिक सहन करना मेरे लिए संभव नहीं रहा। अतः पास जाकर मैंने पुकारा, 'मेम भाभी!'

वहां उपस्थित समस्त लोग जैसे विस्मित-से रह गए। मेम भाभी भी कम विस्मित नहीं हुई। मुझे अचानक वहां देखकर उसने पास पड़ी एक चुनरी से अपने शरीर को लपेट लिया और फुर्ती से मेरा हाथ पकड़कर उस दिन की तरह मुझे खींचते हुए बाहर निकल आई।

मैंने कहा, 'मैं फिर आ गया हूं, मेम भाभी!'

मेम भाभी हंसने लगी। बोली, 'मैं जानती थी कि तुम फिर आओगे।'

मैंने कहा, 'बिना आए रहा भी तो नहीं गया।'

मेम भाभी ने कहा, 'एक रिक्शा तो ले आ ज़रा।'

'रिक्शा!'

मेम भाभी ने कहा, 'तुमसे मुझे बहुत बातें करनी हैं।'

मुझे याद है कि उस दिन मैं मेम भाभी के साथ एक ही रिक्शे पर बैठा था—उसकी बहुत-सी बातें सुनने के लालच से नहीं, बल्कि इतने दिनों बाद मेम भाभी के पास बैठ पाने के लालच से। और उस लालच का आकर्षण कोई कम नहीं था। उस होटल से मेम भाभी को मेरे साथ जाते देखकर उस दिन जो लोग अचरज में डूब गए थे, वही लोग आज मेम भाभी को मेरे साथ एक ही रिक्शे में बैठते देखकर और भी आश्चर्यचकित हो गए।

होटल का वह परिच्छन्न वातावरण छोड़कर रिक्शा बगल के रास्ते

में मुड़ गया। फिर वह रास्ता भी पार करके एक गली में घुस गया। वह गली ऐसी थी, जहां दुपहरी में भी जाने में डर लगे।

मैंने पूछा, 'यह तुम कहां चल रही हो, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके इतने नजदीक बैठकर भी ऐसा लगा, मानो होटल के भीतर इतनी देर तक उद्दण्ड-उच्छृंखल अवस्था में जिसको देखा था, वह यह नहीं थी। पास बैठने से उसके बदन से सेंट की खुशबू और मुंह से शराब की गन्ध आ रही थी। चुनरी से घिरे और सिल्क के गाऊन से ढके शरीर में मैं अपनी पहले की मेम भाभी को ढूंढने लगा। एक बार तो महसूस हुआ कि ढूंढ लिया है, पर उसके चेहरे की ओर देखकर लगा कि यह तो मेरे लिए बिलकुल अपरचित है। अगर पहले कभी इसे पहचानने की बात सोचकर मन में गर्व महसूस किया भी हो तो वह मेरी सरासर भूल थी। मनुष्य को पहचानने की क्षमता मुझमें है ही नहीं। मैं कहानियां जरूर लिखता हूं, पर यह तो मात्र मेरी सनक है।

बहुत-से रास्तों को तय करते हुए जहां से रिक्शा चल रहा था, वह बहुत ही तंग गली थी। एक गन्दे-से होटल के सामने लुंगी पहने मर्दों की भीड़ खड़ी थी। रास्ते में ही बेंच पर बैठा कोई हुक्का पी रहा था, तो कोई चाय पी रहा था और कोई एल्यूमीनियम के बर्तन में मांस-रोटी खा रहा था। उनके सामने कुत्ते मुंह खोले खड़े थे। यदि कोई एक-आध टुकड़ा उनके सामने डाल देता तो चारों तरफ से छीना-झपटी शुरू हो जाती। ऐसा लगा, मानो यहां अभी-अभी शाम हुई है। कई दूकानें लाल-नीले कागज के फूलों से सजी हुई थीं, जो शायद ईद या रमजान के वक्त सजाई गई थीं। गरम मांस और भुने मसाले की गन्ध वहां की आबोहवा में समाई हुई थी। सभी जगह मक्खियां भनभना रही थीं। यह भी कलकत्ते का ही एक अंचल है, इसपर यकीन करने की इच्छा नहीं हुई। चौरंगी के राजकीय माहौल के ठीक पीछे यह एक ऐसा उबा देनेवाला अंचल था, जिससे मुझे बेहद घृणा-सी महसूस हुई।

इस बीच मेम भाभी ने मुझसे कोई बात नहीं की। उसके गले में पड़ी मोतियों की माला चक-चक चमक रही थी। हाथों में हीरों की चूड़ियां, बदन पर कीमती सिल्क का गाऊन और पांव की लाल-पालिश की गई अंगुलियां सुनहरे सेण्डिलों में से मानो अपना आत्म-प्रकाश कर रही थीं। इतनी देर से मैं यही सब देख रहा था।

रिक्शा एक पुराने-से मकान के सामने रुका।

मेम भाभी रिक्शे से उतर पड़ी और बोली, 'आ, मेरे साथ चल।'

मैं साथ चल पड़ा। वह एक कांपता हुआ-सा मकान था, जिसमें अनगिनत रास्ते थे और उसी तरह अनगिनत कमरे भी। सहन में बाड़ लगाकर बहुत-सी मुर्गियां पाली हुई थीं। मनुष्य की आवाज़ पाकर एक बार तो वे सब कचर-पचर की आवाज करने लगीं और सहन को सर पर उठा लिया। गमलों में सिर्फ पत्तोंवाले कई पौधे लगे हुए थे। नंगे पैरों के नीचे अंडों के छिलकों के टूटने की कड़मड़ आवाज़ हो रही थी। सामने के कमरों में बहुत भड़कीले वस्त्रों में कई मेमसाहिबाएं सज-धजकर बैठी पाइप पी रही थीं। लुंगी पहने हुए मर्द इधर से उधर आ-जा रहे थे। मकान के अन्दर आने-जाने की कहीं कोई अड़चन या रुकावट नहीं थी, हालांकि वहां पर्दों, गाऊनों, पार्टीशनों की कहीं कोई कमी नहीं थी।

बगल में एक काठ की सीढ़ी थी। मेम भाभी सीढ़ियों से ऊपर जाने लगी। सीढ़ी पर बिछा कार्पेट फटा हुआ था और मैल के कारण बहुत भद्दा लग रहा था। दीवार के डिस्टेम्पर पर असंख्य दाग पड़े हुए थे। कांच के केस में लाल-नीली मछलियां तैर रही थीं। सीढ़ी के मोड़ पर दीवार में एक शीशा लगा था। तार के पिंजरे में कनेर चिड़ियों का झुण्ड था। शीशे में मेम भाभी की छाया पड़ते ही उसके बगल में मुझे अपनी प्रतिच्छवि भी दिखाई पड़ी। मैंने अपना चेहरा देखा तो मुझे पता चला कि डर और उत्सुकतावश मेरा मुंह बिलकुल सूख गया है।

मैंने कहा, 'यह कहां ले आई हो मुझे, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'तुझे डरने की कोई जरूरत नहीं है, मैं

जो साथ हूं।'

मेम भाभी का उत्तर सुनकर मैं कुछ आश्वस्त हुआ। एक सकरी गली से गुजरकर मेम भाभी ने एक बिल्कुल अंधेरे कमरे के ताले में चाबी घुमाई। बोली, 'आ, मैं यहीं रहती हूं। यही मेरा घर है।'

इतने दिनों बाद आज भी उस दिन की बात सोचकर रोमांच हो आता है। कलकत्ते के जिस समाज के हम प्राणी हैं, उसमें रहते हुए ऐसा वातावरण देखने का अवसर हमें बहुत ही कम मिलता है। हम जब छोटे होते हैं तब स्कूल जाते हैं, स्कूल के बाद मैदान में खेलने चले जाते हैं और उसके बाद घर आकर पढ़ने बैठते हैं। रोजमर्रे का यही इतिहास है हमारा। बहुत हुआ तो कभी-कभार किसी आत्मीय के यहां शादी-ब्याह या श्राद्ध जैसे अनुष्ठान में जाकर कुछ विशेष जानकारी हमें मिल जाती है। यार-दोस्तों के नाम पर जो भी परिचित होते हैं वे सब स्कूल और खेल के मैदान की परिधि तक ही सीमित रहते हैं। दरअसल, बगल के मकान के लड़के-लड़कियों से ही व्यावहारिक शिक्षा की जानकारी होती है हमें। इस पृथ्वी के बारे में विशेष जानकारी इन्हीं लोगों से सीखते हैं हम। इन सब के अलावा, अगर हम कभी अन्य शहरों में घूमने-फिरने भी जाते हैं तो मां-बाप के शासन में दबकर ही रहना पड़ता है हमें। जो कुछ देखते हैं, बस आंखों से ही देखते हैं और जो कुछ सीखते हैं, सिर्फ मन से ही सीखते हैं। इन सबकी उपेक्षा करके कुछ और सोचना हम सोच ही नहीं पाते। सोच पाने की शिक्षा भी नहीं मिलती। बल्कि ऐसा सोचना भी हमारे लिए अपराध समझा जाता है।

पर मेरा मामला कुछ अलग ही था। मैंने बड़े-बूढ़ों की बात कभी नहीं मानी और दूसरे की नजरों से देखी हुई बात को खुद की देखी हुई सोचने की गलती भी मैंने कभी नहीं की। लजीला-सा बना अपने मन की गलियों में खुद ही खाक छानता फिरता रहा। सभी चीजों का अर्थ मैंने अपनी समझ के अनुसार समझा। नियति के चक्र के साथ-साथ बहुत-से लड़के-लड़कियों से घनिष्ठ होकर मिलने-जुलने का सुअवसर भी मुझे मिला। वे

लोग बिना किसी तकल्लुफ के मुझसे मिले। किसी-किसीने तो अपना दिल ही दे दिया मुझे। मैं भी उनसे खुश हुआ और उनके दुःख में रो-रोकर अपने दिल को दुःखित भी किया।

इसका उदाहरण थी मेम भाभी। मेम भाभी अगर उस दिन मुझे अपने साथ नहीं ले जाती तो क्या मैं कभी वहां जाता ? किसको पता चलता कि कलकत्ते में ही एक ऐसा स्थान भी है ? किसे मालूम होता कि कलकत्ते जैसे शहर में चार रुपये किराये में भी कमरा पाया जा सकता है ? किसे पता था कि हीरे की चूड़ियां, मुक्तों की माला, कीमती सिल्क का गाऊन, सुनहरे सैण्डिल और मामूली भोजन की थाली इत्यादि सब कुछ दैनिक रेट के अनुसार भाड़े पर मिल सकता है ? सुना है कि झांकी, नाटक वगैरह की ड्रेस तो किराये पर मिलती है और शादी-विवाह के अवसर पर चेयर, टेबुल, शमियाने, तकिये, हुक्के, कप-डिश वगैरह भी, लेकिन···

मेम भाभी ने कहा, 'तुम एक मिनट बैठो, नटखट। मैं अभी आई।'

मुझे डर लगने लगा, 'क्यों ? तुम कहां जा रही हो ?'

मेम भाभी ने कहा, 'अभी आती हूं। तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।' कहकर मेम भाभी अंधेरे में गायब हो गई।

मैं एक टूटी चारपाई पर बैठा हुआ था और चुपचाप चारों ओर नजरें दौड़ा रहा था। फटी चादर पर कुछ मैले-कुचैले कपड़े पड़े हुए थे। मेम भाभी के कपड़े इतने मैले हो सकते हैं, मैं सोच भी नहीं सका। मुझे लगा, शायद समय के अभाव में ये कपड़े धोबी को नहीं दिए गए हैं। बाहर सहन में कुछ बत्तखें पुकार उठीं। नीचे सड़क पर भी क्षण-भर के लिए कुछ शोर-सा उठा। बहुत-से लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। यहां भी नाक में मांस भुनने की गंध आ रही थी। अचानक ही पैर के पास एक बिलाव जैसा मोटा चूहा दिखाई पड़ा, जो मुझे देखकर वापस दरवाज़े की तरफ भाग गया। मैं चौंक पड़ा।

बगलवाले कमरे में ग्रामोफोन बज उठा। साथ में कई मेम साहिबाओं के गले का स्वर भी सुनाई पड़ रहा था।

कुछ हंसी-मजाक के टुकड़े और सस्ते सिगरेटों का धुआं !

तभी सीढ़ी पर धम-धम की आवाज हुई।

मेम भाभी ने कमरे में प्रवेश किया। हाथ में पता नहीं क्या लाई थी।

उसका चेहरा देखकर मैं चौंक पड़ा। पूछा, 'यह क्या है ?'

मेम भाभी ने कहा, 'आज मैंने कुछ भी नहीं खाया, इसलिए तुम्हारे लिए भी ले आई हूं।'

वह एक कागज के ठोंगे में बहुत सारे तले हुए अंडे और एक जग में दो व्यक्तियों के लिए चाय लाई थी।

मैंने पूछा, 'लेकिन तुम्हारा वह सिल्क का गाऊन कहां गया ?'

मेम भाभी ने कहा, 'दूकान की चीज थी। वहीं वापस लौटा दी।'

मैंने अचरज से पूछा, 'दूकान की चीज थी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'गहने, गाऊन और सैण्डिल वगैरह का दैनिक किराया साढे पांच रुपया होता है। आज किराये के लिए मेरे पास नकद रुपये नहीं थे, इसलिए कह दिया कि कल दूंगी। अब तो उसके साथ जान-पहचान हो गई है ना, इसलिए जो मांगती हूं, उधार दे देता है।'

मेरे मुंह से कोई आवाज नहीं निकली। मैं चकित-सा मेम भाभी के चेहरे की ओर देखता रहा। शरीर पर मैला गाऊन था और पैरों में चप्पल, पर गले में नेकलेस और हाथों में चूड़ियां आदि कुछ भी नहीं थी।

मेम भाभी मेरे जग में चाय ढालते हुए कहने लगी, 'किसी जमाने में मेरे पास खुद का मकान था, खुद की कार थी; इस बात पर किसीको यकीन ही नहीं आता। अलक मेरे हाथों में हजारों रुपये लाकर रख देता था। मैंने सोचा था, शायद अब जिन्दगी में सुख-शांति मिलेगी। सोचा था, डोरा से मेरा शर्त लगाना सार्थक हो गया।'

फिर बोली, 'अब यहां मैं जूठा-ऊठा कुछ नहीं मानती। एकादशी, पूर्णिमा में भी विश्वास नहीं करती। एक बात और बताऊं ? मैं विधवा हूं, यह भी अब मुझे याद नहीं रहता।'

कुछ रुककर फिर बोली, 'गोबर से आंगन भी नहीं लीपती अब मैं।

र पर आंचल लेकर तुलसी को प्रणाम भी नहीं करती। मैं अपने पूर्व-वन को विलकुल भूल चुकी हूं।'

मेरे चेहरे की तरफ देखे विना मेम भाभी आगे कहने लगी, 'मैं जानती ी नटखट, कि तुम फिर आओगे; लेकिन तुम आए किसलिए हो ?'

चाय के जग में एक चुस्की लगाते हुए वह वोलती गई, 'यहां सवको यही मालूम है कि छह महीने हुए मैं वेल्स से आई हूं। मेरे कारण ही होटल के ग्राहक वढ़ गए हैं। एक दिन तो मेरे चलते शराव पीकर सवने मार-पीट भी कर ली। सुलतानगंज के प्रिस···।'

मैंने कहा, 'यह सब वातें मुझे सुनाते हुए तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आती ?'

मेम भाभी पहले जैसी मधुर हंसी में हंस पड़ी। वोली,'शर्म भला क्यों आने लगी ? जव इकत्तीस रुपये छह आने साथ लेकर अपना वह घर और मोहल्ला छोड़कर मैं यहां आई थी, उस दिन क्या मुझे या मेरी इज़्ज़त को वचाने के लिए कोई आगे वढ़ा था ? फिर आज मुझे शर्म क्यों आएगी ?'

उसने चाय की ओर एक चुस्की ली और वोली, 'यह सच है कि मैं मेमसाव हूं, लेकिन थी तो अलक की वहू न ! जव रिश्तेदारों ने ज़वरदस्ती मेरा मकान मुझसे छीन लिया, तव मैं कहां और कैसे रहूंगी; यह पूछ क्या मेरे पास कोई भी आया था ?'

कुछ चुप रहकर वह फिर वोली, 'मैं अंग्रेज भले ही हूं, लेकिन हूं त एक लड़की ही न। क्या मेरी कोई इज्ज़त नहीं थी, शर्म नहीं थी या आव नहीं थी ? वताओ।'

मेम भाभी हंसने लगी। वोली, 'इसीलिए तो तुम्हें यहां ले आई हूं अपनी आंखों से ही देख जा। जिनको तुम लोग निम्नकोटि के कहते उन्हीं लोगों ने वुरे दिनों में मुझे सहारा दिया। इन लोगों ने सभी मुझे उधार दीं। मुहल्ले के सवसे वड़े गुण्डे अब्दुल मियां ने मुझे अभय दिया। मुझे कपड़े-लत्ते किराये पर मिल जाएं, उसीने इसका इ किया। उसने वह सव कुछ किया जो तुमलोग नहीं कर सके।'

मेरी ओर देखकर वह एकाएक बोली, 'मुझे यहा ऐसा खाना खाते देखकर तुम्हें शायद घृणा हो रही है ? क्यों ?'

मेरे मुंह से कोई बात नही निकली।

मेम भाभी ने आगे कहा, 'तो ठीक है। मैं फेंक आती हूं।'

वह खाने की डिश लेकर बंगले की तरफ जाने लगीं। उसे उधर जाते देखकर मैं लपककर उठा और मेम भाभी का हाथ कसकर पकड़ लिया।

मैंने कहा, 'मुझपर क्या तुम्हें जरा भी दया नही आती, मेम भाभी। तुम्हारे पांव पड़ता हूं, फेंकना मत।'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे लिए क्या कभी किसीको दया आई थी ?' यह कहकर वह बिस्तर पर आ बैठी। फिर बोली, 'तुम अपनी आंखों से देख आए हो कि मैं होटल के 'बार' मे क्या कर रही थी ? अब इसके बारे मे तुमसे झूठ क्या कहूं ? पर मुझे भी तो अपना पेट पालना पड़ता है। मुझे भी तो कमरे का किराया देना पड़ता है। चावल-दाल खरीदने के लिए पैसों का जुगाड़ करना पड़ता है। रात का खाना-पीना तो वहीं पर उनके पैसों से हो जाता है, लेकिन सुबह का ? सुबह भी तो कुछ खाना ही पड़ता है।'

मैंने कहा, 'तुमसे इतनी कैफियत कौन चाहता है, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने मेरी बात नही सुनी और अपनी धुन मे कहती गई, 'इस मुहल्ले मे अब्दुल मिया जैसे गुण्डे का दल है, इसीलिए किसी तरह बच पाई हूं। पर तुम्हीं बताओ, क्या इसीको जीना कहते हैं ?'

मैंने पूछा, 'अच्छा, विलायत लौट जाने मे तुम्हारे कितने रुपये खर्च होंगे ?'

मेम भाभी हंसी के मारे दुहरी हो गई। बोली, 'तो तू रुपये देगा मुझे ? अब शायद बहुत पैसे हो गए हैं तुम्हारे पास ?'

मैंने कहा, 'मैं अपना सोने का बटन, घड़ी आदि सब बेचकर तुम्हारे लिए रुपयों का इन्तजाम कर दूंगा, तुम चली जाओ। इन सबको बेचकर तीन सौ रुपये तो मिलेंगे ही ?'

मेम भाभी ने कहा, 'इतने रुपये मेरी एक रात की कमाई है, यह पता
तुम्हें ?'

मैंने नजरें उठाकर गौर से मेम भाभी की ओर देखा।

मेम भाभी ने कहा, 'हां, भाई। मेरी एक रात की आमदनी तीन सौ
रुपये है। कभी किसी राजा-महाराजा से पाला पड़ जाता है तो हजार तक
भी कमा लेती हूं। पर इतने से भी मुझे पूरा नहीं पड़ता। मेरा मासिक
खर्च बहुत अधिक है। एक दिन में साढ़े पांच रुपये तो गाऊन का ही किराया
लगता है, फिर तीन-चार सौ से भला क्या होगा ?'

मुझे महसूस हुआ, मानो मेम भाभी शराब पीकर बहक रही है। मुझे
शक हुआ कि इतनी देर से मैं किसी पगली से बात कर रहा हूं और वह
जो कुछ कह रही है, वह सब निराधार है। मैंने [illegible] गौर से
देखा तो महसूस हुआ कि सारी-सारी रात जागने [illegible] भाभी

मेम भाभी का स्वर सप्तम पर पहुंच गया। बोली, 'छोटे मुंह बड़ी बात करता है?'

दरवाज़े की ओर कदम बढ़ाते हुए मैंने कहा, 'मैं तुम्हारा बहुत आदर करता था, इसीलिए तुम इतना सब कह सकती हो। वरना…!'

मेम भाभी गुस्से के मारे कांपने लगी। चिल्लाकर बोली, 'निकल जा, तू इसी वक्त मेरे कमरे से निकल जा!'

मैं धीरे-धीरे दरवाज़े से निकल रहा था कि मेम भाभी ने पीछे से पुकारा, 'सुन!' और वह स्वयं मेरी तरफ बढ़ आई। बोली, 'तेरी उम्र क्या है?'

मुझे भी गुस्सा आ गया था। मैंने कहा, 'शराब के नशे से अगर तुम अंधी न हुई होती तो खुद ही समझ लेती कि तुम्हारे साथ एक ही सेज पर सोकर रात बिताने लायक उम्र नहीं हुई है मेरी।'

मेम भाभी का रोना थम गया, लेकिन उसने पीछे मुड़कर देखा नहीं।

उस व्यक्ति ने फिर पुकारा, 'मेम दीदी, सुलतानगंज के छोटे कुमारसाहब आए हैं।'

अब की बार मेम भाभी उठी और चुपचाप आंखें पोछ लीं। उस व्यक्ति की ओर मुंह करके उसने पूछा, 'कौन ? यूसुफ ? क्या बात है ?'

यूसुफ ने कहा, 'सुलतानगंज के छोटे कुमारसाहब बड़ी-सी कार लेकर आए हैं। नीचे खड़े हैं।'

मेम भाभी ने हठात् मेरी ओर देखा। मैं उसी जगह खड़ा था। मैंने मन ही मन कसम खाई कि अब चाहे मेम भाभी कितना भी जाने को कहे, मैं यहां से हर्गिज नहीं जाऊंगा।

मेम भाभी ने यूसुफ से कहा, 'तू जाकर कुमारसाहब से कह दे कि आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है।'

यूसुफ ने कहा, 'वे बहुत बड़े आसामी हैं, मेम दीदी; कहीं नाराज़ हो गए तो ?'

मेम भाभी ने कहा, 'यूसुफ, मैं तुम्हें जैसा कहती हूं, वैसा करो।'

यूसुफ ने कहा, 'वे होटल भी गए थे, पर वहां आप नहीं मिलीं; इसीलिए यहां बुला लाया हूं। कुमारसाहब ने नई कार खरीदी है।'

पता नहीं मेम भाभी ने क्या सोचा, फिर मेरी ओर मुड़कर बोली, 'इतनी रात हो गई, क्या तू घर नहीं जाएगा ?'

मैंने तटस्थ नज़रों से मेम भाभी की ओर देखते हुए कहा, 'नहीं।'

मेरा जवाब सुनकर मेम भाभी चकित रह गई। बोली, 'नहीं जाएगा ?'

मैंने भी उसी तरह जवाब दिया, 'नहीं।'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे रुपयों का नुकसान करवाकर तुझे क्या मिलेगा ?'

मैंने कहा, 'तुम्हें कितने रुपये चाहिए, मैं दूंगा। मेरी घड़ी, सोने का बटन, मेरे जन्म-दिन पर मिले चालीस रुपये, तीन मोहरें, पांच अंगूठियां

आदि जो कुछ मेरे पास है, सब कुछ तुम्हें दे दूंगा।'

यूसुफ बेचैन-सा हो उठा। बोला, 'क्यों बात बढ़ा रहे हैं, बाबू! सुलतानगंज के छोटे कुमारसाहब मेम दीदी के लिए हजारों रुपये खर्च करेंगे। ऐसी पार्टी हाथ से निकल गई तो बाद में अफसोस होगा।'

मेम भाभी ने बीच में उसे रोकते हुए कहा, 'यूसुफ, तुम चुप रहो!'

उसके बाद मेरी ओर मुखातिब होकर वह बोली, 'तो तू सचमुच नहीं जाएगा?'

मैंने कहा, 'नहीं।'

मेम भाभी ने कहा, 'किसी तरह भी नहीं जाएगा न?'

तब भी मैंने यही कहा, 'नहीं, मैंने तुम्हारे माथे पर सिंदूर की बिन्दी लगाई है। तुम्हारे दोनों पांवों में अपने हाथों से महावर रचाया है। कालीघाट से एक दिन तुम्हारे लिए शंख की चूड़ियां खरीद लाया था। इसके अलावा अलकेश भैया की बीमारी के वक्त तुम्हारे गिर्जावाले देवता के सामने मन्नत मानी थी, कालीजी की पूजा की थी। तुम्हारे लिए मैंने क्या नहीं किया, जरा बताओ तो!'

मेम भाभी हंसने लगी। बोली, 'उससे क्या फायदा हुआ? अलक के मरते ही शंख की चूड़ी, सिन्दूर, महावर आदि सभी तो उतारकर फेंकना पड़ा। तुम्हारे या मेरे देवता में से किसीने भी तुम्हारी विनती सुनी?'

मैंने कहा, 'तो क्या रुपये ही तुम्हारी नजर में अधिक महत्व रखते हैं? रुपये होने से ही क्या तुम्हारे तमाम दुःख खत्म हो जाएंगे? इतने रुपये तुम्हें किसलिए चाहिए, बताओ तो? क्या तुम चाहती हो कि रुपये के लिए तुम अपनी बलि दे दोगी?'

मेम भाभी ने परेशान होते हुए कहा, 'थोड़ा-सा और धीरज रख, बड़ा होकर समझेगा कि रुपयों का क्या महत्त्व है?'

मैंने कहा, 'अब मैं पहले जैसी कच्ची उम्रवाला लड़का नहीं रहा, मेम भाभी। हां, अब मैं वह कच्ची उम्रवाला लड़का नहीं हूं!'

मेम भाभी ने कहा, 'बस-बस, रहने दे। अगर मेरे कोई बेटा होता तो

ज तुमसे भी बड़ा होता। तब मेरे लिए तुम बच्चे नहीं तो और क्या हो, ा सुनूं तो ?'

मैंने कहा, 'फिर भी मैं सब कुछ समझता हूं, मेम भाभी। तुम होटल सलिए जाती हो, सुलतानगंज के छोटे कुमारसाहब रात के समय किस-ाए तुम्हारी खोज में यहां आए हैं; वह सब मैं समझता हूं।'

मेम भाभी ने कहा, 'अब तुम्हें और कुछ भी समझने की जरूरत नहीं। मैं कहती हूं, तू यहां से बाहर निकल जा।'

फिर यूसुफ की ओर मुखातिब होकर बोली, 'यूसुफ, तू जा और दूकान से सैंडिल, गहने, गाऊन आदि सब कुछ ले आ। उससे कह देना कि रुपये सुबह मिलेंगे।'

यूसुफ जाते-जाते मेरी ओर व्यंग्य-भरी नजरों से देखता हुआ कह गया, 'क्यों बेकार ही गड़बड़ करते हो भाई, अब खिसक जाओ।'

मुझे आज भी वह रात अच्छी तरह याद है, जब मैं उस अपरिचित गंदी बस्ती में मेम भाभी के गन्दे कमरे अपनी समस्त चेतना खोकर अचेत-सा बैठा था। पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगा कि कुछ देर बाद मेरे देखते-देखते ही एक प्राणी रसातल की गहराइयों में डूब जाएगा। एक प्राणी मेरी ही नज़रों के सामने आत्महत्या कर लेगा और मैं अपंग की तरह आंख फाड़े सिर्फ देखता रह जाऊंगा। मेरे किए कुछ भी नहीं होगा। मेम भाभी की तमाम शिक्षा, सतीत्व और संयम आदि सिर्फ रुपयों की बाढ़ में बहकर मिट्टी में मिल जाएंगे। यह भी याद है कि उस दिन मेम भाभी मेरे सामने सिर्फ चुपचाप खड़ी रही थी। बहुत देर तक खड़े रहने के बाद मेम भाभी ने कहा था, 'अब तो जाएगा न, भइया! सच, तू बहुत सयाना है!'

मेरी आंखें भला सूखी कहां थीं! मैंने कहा, 'नहीं जाऊंगा। देखत हूं, तुम कैसे आत्मघाती बनती हो?'

मेम भाभी हंस पड़ी। बोली, 'अगर मैं आत्मघाती होती भी हूं तो ते क्या जाता है? तू क्या लगता है मेरा?'

मैंने कहा, 'यह जानता हूं कि मैं तुम्हारा कुछ नहीं लगता, पर अ

तुम्हारा कोई बेटा होता तो ?'

मेरी बात सुनकर मेम भाभी निमिष-भर को अन्यमनस्क हो गई। उसके मुंह से कोई जवाब नहीं निकला। मैंने फिर कहा, 'अपने बेटे के सामने ऐसा करते तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

मेम भाभी क्षण-भर गुमसुम खड़ी रही। फिर बिस्तर पर बैठ गई। मैं मेम भाभी के नजदीक चला गया। तब भी वह उसी तरह बैठी रही।

फिर धीरे-धीरे उसने कहना शुरू किया, 'हां रे, क्या तू मुझे यहां से निकालकर कहीं ले जा सकता है ?'

मैंने कहा, 'क्यों नहीं, बताओ कहां जाओगी तुम ?'

'जहां भी चाहो।'

पता नहीं मुझे क्या हुआ कि मैं पूछ बैठा, 'हमारे घर चलोगी, मेम भाभी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'चाहे जहां भी ले चल; बस, अब इस मुहल्ले में नहीं रहूंगी।'

फिर न जाने मेम भाभी ने क्या सोचा। बोली, 'तुम्हारे घर ? तेरी मां क्या मुझे वहां रहने देगी ?'

फिर अपनी ही धुन में वह बड़बड़ाने लगी, 'मैं फिर से अच्छी हो जाऊंगी। फिर से सफेद वस्त्र पहनना शुरू कर दूंगी। निरामिष भोजन करना शुरू कर दूंगी। तुम्हारी गृहस्थी का सारा काम कर दूंगी।'

मैंने मेम भाभी को सब कुछ कहने दिया, रोका नहीं। मुझे उसपर बहुत दया आई। उसकी हालत देखकर मुझे उसपर बहुत तरस आया।

मेम भाभी ने आगे कहना शुरू किया, 'किसी-किसी दिन तो मुझे बहुत ही खराब लगता है यह सब। जानते हो, रात के तीन बजे से पहले मुझे कभी नहीं छोड़ते वे लोग। उन लोगों के सामने उनके बराबर स्फूर्ति दिखानी पड़ती है, उन लोगों के बराबर ही शराब पीनी पड़ती है। अगर आंखों में नींद घुल आए, तब भी वे नहीं छोड़ते। अगर तबियत खराब लगे, तब भी रिहाई नहीं देते।'

मैंने कहा, 'लेकिन तुम्हें भी तो वही सब अच्छा लगता है !'

'क्या खाक अच्छा लगता है ! रोने का मन हो तो रो नहीं सकती, नींद आए तो सो नहीं सकती। मन नहीं हो, तब भी शराब पीनी पड़ती है। यह मेरा बहुत सुखी जीवन है न !'

मैंने कहा, 'तुम्हें खुद ही जब मरने का इतना शौक है तो कौन बचाने आएगा तुम्हें, तुम्हीं बताओ !'

मेम भाभी ने कहा, मैं तो ज़िन्दा रहने की ख्वाहिश लेकर ही यहां आई थी, इसीलिए तो अलक से शादी की थी।'

मैंने कहा, 'पर सच्चे दिल से कभी तुमने ज़िन्दा रहने की कोशिश की है ?'

मेम भाभी ने कहा, 'मालूम है, कभी-कभी तो इन लोगों के अत्याचारों से ऊबकर आत्महत्या कर लेने की इच्छा होती है मेरी।'

मैंने कहा, 'लेकिन अभी तो तुम कह रही थीं कि इन्हीं लोगों ने, मतलब यहां के अब्दुला और यूसुफ मियां ने ही तुम्हें बचाया है ?'

मेम भाभी ने कहा, 'इन लोगों ने मुझे बचाया है, यह सच है। पर उस वक्त मुझे क्या मालूम था कि ये लोग लड़कियों के दलाल हैं। मेरी आय के हर पैसे में इन लोगों का भी हिस्सा होता है। मेरे रक्त के कतरे तक को ये व्यापार करते हैं।'

मेम भाभी की बातें सुनकर मेरा दिल डर के मारे दहल उठा।

मैंने कहा, 'मैं सिर्फ यही सोच रहा हूं मेम भाभी, कि इतने जुल्मों व सहते हुए भी तुम अब तक ज़िन्दा कैसे हो ?'

मेम भाभी ने कहा, 'मैं क्या जीने में जीती हूं रे, इधर देख !' अं उसने दाहिने हाथ की अंगुली से अपनी आंख की पलक ऊंची करके दिखा और बोली, 'खून की एक बूंद तक भी नहीं है मेरे शरीर में। डॉ वैसाख का कहना है कि अगर यही रवैया चला तो मैं अधिक दिन जी नहीं रह पाऊंगी।'

कुछ देर चुप रहकर वह फिर कहने लगी, 'एक दिन तो होट

हुड़दंग मचाते-मचाते एकदम बेहोश होकर गिर पड़ी थी। बहुत रात गए यूसुफ ने वहां से उठाकर डॉक्टर बैसाख के पास ले जाकर मुझे दिखाया था और दवा वगैरह दिलाकर बचाया था।'

हठात् गाऊन का एक हिस्सा जरा-सा ऊंचा करके अपने पांव दिखाते हुए वह बोली, 'यह देख, यहां से कट गया था उस दिन। अभी तक निशान भी है। रुपये जरूर कमा लेती हूं, लेकिन दवाइयां भी क्या कम खानी पड़ती हैं! डॉक्टर बैसाख को भी अभी कितने ही रुपये देने बाकी हैं। मुझे तो हमेशा यही डर लगता है कि ऐसी हालत रही तो किसी दिन यक्ष्मा का शिकार बन जाऊंगी और खांसते-खांसते खून की उल्टियां करते हुए ही मर जाऊंगी।'

मैं भला क्या कहता? मेरे कहने-सुनने को बाकी ही क्या रह गया था। नजर उठाकर देखा तो पता चला कि मीट-सेफ पर खाली शीशी-बोतलों का अम्बार लगा हुआ है।

मेम भाभी ने फिर कहना शुरू किया, 'जिस दिन सोचती हूं कि आज होटल बिलकुल नहीं जाऊंगी, उस दिन यही अब्दुल आता है, या कभी-कभी यूसुफ आता है, और जबरन गाऊन-गहने वगैरह लाकर सामने रख देता है और रिक्शा बुलाकर उसमें बैठा देता है। रिक्शा भी इन्हीं लोगों के दल का है; वह मुझे सीधा होटल तक पहुंचाकर ही दम लेता है। बस, वहां पहुंचकर कैसे क्या होता है, मुझे कुछ भी पता नहीं रहता।'

मैं अब भी कुछ नहीं कह सका। मेम भाभी की आंखों से सावन-भादों की झड़ी लग गई।

मेम भाभी ने कहा, 'गालों पर रंग मलकर, आंखों में सुर्मा आंजकर, भौंहों को पेन्सिल से नुकीली बनाकर, होंटों पर लिपस्टिक रगड़कर बहुत ही मुश्किल से मुझे जवान युवती का रूप धारण करना पड़ता है। पेट लगी ब्रेसियर पहनकर रात के अंधेरे में कुमारी जैसी सजकर राजा-महाराजा, कैप्टन और मेजर वगैरह का दिल बहलाना पड़ता है। यह एक ऐसा पाप है, जिसे तू भला क्या समझेगा? बता!'

फिर हठात् मेरी ओर मुखातिब होकर बोली, 'क्यों रे, तू तो कुछ बोल ही नहीं रहा है ?'

मेरे मुंह से तब भी कोई आवाज़ नहीं निकली।

मेम भाभी ने अपने हाथों से मेरी ठुड्डी को ऊपर उठाया और बोली, 'तुम्हें भी मुझपर घृणा हो रही है न ?'

इसके जवाब में मैं क्या बोलूं, क्या न बोलूं, मेरी कुछ समझ में नहीं आया।

मेम भाभी ने कहा, 'जब मुझे ही स्वयं से बेहद वितृष्णा होती है तो तुम्हें तो होनी स्वाभाविक ही है।'

इतनी देर बाद अब मेरी ज़बान खुली। मैंने कहा, 'मेम भाभी, तुम फिर से ज़िन्दा रहना चाहती हो न ?'

मेम भाभी ने कहा, 'तू मुझे इस अब्दुल और यूसुफ के हाथों से बचा, भाई।'

मैंने पूछा, 'क्या तुम आज ही मेरे साथ चलोगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'चलूंगी, तू जहां ले जाएगा, वहीं चलूंगी।'

'पर तुम्हें ऐसे जीवन का मोह छोड़ना पड़ेगा।'

मेम भाभी ने कहा, 'अगर छोड़ सकी तो समझो मैं जी ही जाऊंगी।'

मैंने कहा, 'और तुम्हें यह रुपयों का जो नशा है, वह भी छोड़ना पड़ेगा।'

पता नहीं यह सुनकर मेम भाभी क्या सोचने लगी। कुछ देर तक उसके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली। सिर्फ सूनी निगाहों से अंधेरे को घूरती रही। फिर बोली, 'पर रुपये तो मुझे चाहिए ही।'

मैंने कहा, 'मेम भाभी, मैं तुम्हें अपनी मां की तरह आदरपूर्वक रखूंगा, किसी तरह की भी तुम्हें चिन्ता नहीं होने दूंगा। खाना, कपड़ा, सुख, शान्ति सभी कुछ तुम्हें देने की कोशिश करूंगा। जो कुछ मैं खाऊंगा, तुम्हें भी वही खिलाऊंगा।'

मेम भाभी ने कहा, 'अपने घर में रखोगे मुझे ?'

मैंने कहा, 'मुझे एक नौकरी मिल गई है। उन्हीं रुपयों से मैं तुम्हारे लिए एक कमरा किराये पर ले दूंगा। तुम्हारे लिए दासी-नौकर सब रहेंगे। उन सबके विषय में तुम्हें कुछ भी नहीं सोचना पड़ेगा। क्या मेरे साथ चलोगी, मेम भाभी?'

मेम भाभी ने कहा, 'लेकिन···!'

मैंने कहा, 'सगी मां की तरह तुम्हारी सेवा करूंगा। बताओ मेम भाभी, चलोगी मेरे साथ?'

मेम भाभी ने बहुत निरीह नजरों से मेरी ओर देखा। बोली, 'लेकिन रुपये?'

मैंने कहा, 'रुपये तुम्हें किसलिए चाहिए, बताओ? तुम्हारे हाथ-खर्च के लिए? वह मैं दूंगा तुम्हें!'

मेम भाभी ने कहा, 'पर मुझे हाथ-खर्च के लिए रुपये नहीं चाहिए।'

'तब?'

मेम भाभी ने कहा, 'रुपये मुझे बहुत जरूरी चाहिए, रे।'

'पर किसलिए, यह तो बताओगी!'

मेम भाभी ने कहा, 'बस, मुझे रुपये चाहिए। रुपये के बिना मेरा काम चल नहीं सकता। मुझे बहुत रुपये चाहिए। बहुत का मतलब, हजारों रुपये की आवश्यकता है मुझे।'

मैंने कहा, 'इतने रुपयों का क्या करोगी? क्या गहने बनवाओगी?'

मेम भाभी ने कहा, 'नहीं रे, गहने बनवाने का शौक तो मेरा मिट ही गया है।'

'तब? क्या मकान बनवाओगी?'

मेम भाभी बोली, 'मकान? मकान का क्या करूंगी?'

'तो क्या कार खरीदोगी?'

मेम भाभी ने जवाब दिया, 'गहने, मकान, कार, किसी चीज का भी अब मुझे शौक नहीं रहा। इनमें से मुझे कुछ नहीं चाहिए। लेकिन फिर भी मुझे रुपयों की जरूरत है। मुझे सिर्फ रुपये चाहिए, और हर

हालत में चाहिए।'

जैसे वह पागल हो गई हो, इस तरह मेम भाभी प्रलाप करने लगी। मेम भाभी का चेहरा देखकर मुझे डर-सा लगने लगा। थोड़ी देर पहले वह शराब पीकर आई है शायद उसका नशा अभी तक उतरा नहीं है। इतनी देर में पसीने के मारे और रोने से चेहरे, होंठ, आंखों के काजल का रंग धुल-पुंछ गया था। मैले फटे गाऊन की ओट में मेम भाभी के बदन की दुर्बलता मानो स्पष्ट दीख रही थी। मुझे ऐसा लगा, मानो मेम भाभी को किसी बड़ी बीमारी ने आ घेरा है और अगर अधिक दिनों तक यही हालत रही तो वह मर जाएगी।

मैं अभिभूत मन से मेम भाभी का वह उन्मादित रूप देखता रहा।

अचानक बाहर से यूसुफ की आवाज सुनाई पड़ी, 'मेम दीदी!'

निमिष-भर में मेम भाभी चकित होकर उठ खड़ी हुई और दरवाजे की ओर कदम बढ़ाती हुई बोली, 'कौन, यूसुफ मियां?'

यूसुफ कमरे के भीतर चला आया। उसके एक हाथ में हैंगर में झूलता हुआ एक नया गाऊन था और दूसरे हाथ में गत्ते के डिब्बे में नये जूते थे। उसने अपनी जेब से एक नकली मोतियों का हार, नकली हीरे की चूड़ियां और पाउडर, पामेड, हेयरपिन वगैरह कई चीजें निकालकर मेम भाभी के सामने रखीं।

अभी तक मुझे वहीं देखकर यूसुफ दंग रह गया। बहुत ही हिंसक नजरों से मुझे घूरते हुए बोला, 'छोटे कुमार साहब बहुत गुस्सा हो रहे हैं, मेम दीदी, जरा फुर्ती कीजिए। माल-ताल सब तय कर रखा है।'

पता नहीं क्यों मुझे उस व्यक्ति पर बहुत घृणा हो आई। उसका जघन्य गन्दा चेहरा मुझे अपनी नजरों में जहर के समान लगा। मैंने महसूस किया कि अभी इसी वक्त अगर इस व्यक्ति के चंगुल से छुटकारा पा सका तो जान बचेगी, साथ-साथ मेम भाभी को भी मुक्ति मिलेगी।

मैंने कहा, 'यूसुफ, तुम चले जाओ। तुम्हारी मेम दीदी नहीं जाएगी।'

मेरी बात सुनकर यूसुफ जैसे चकित हो गया। बोला, 'नहीं जाएगी?'

फिर उसने मेम भाभी की ओर आश्चर्य से देखा।

मैंने फिर कहा, 'हां-हां, नहीं जाएगी।'

मेम भाभी ने तड़पकर मेरी ओर देखा, फिर एकाएक यूसुफ की ओर। मानो उसकी समझ में नहीं आ रहा था क्या कहे, भीतर ही भीतर मानो किसी गहरी पीड़ा से उसका दिल छटपटा रहा था।

मैंने कहा, 'मेम भाभी, तुम नहीं जा सकती। मैं तुम्हें किसी हालत में भी नहीं जाने दूंगा, मेम भाभी।'

मेम भाभी क्रुद्ध नागिन के फन की तरह फुत्कार उठी। बोली, 'हां, मैं अवश्य जाऊंगी।'

मैं यह सुनकर अवाक् रह गया। थोड़ी देर पहले ही जो इस कदर रोई थी, जिसने यहां से छुटकारा पाने के लिए इतनी अनुनय-विनय की थी, जिसने इस नरक-कुण्ड से मुक्ति पाने के लिए अभी हा हाकार मचाया था; उसका यह व्यवहार देखकर मेरी बुद्धि जवाब दे गई।

उस वक्त मुझे क्या पता था कि अचम्भित और चकित होना मेरा यहीं खत्म नहीं होगा, बल्कि अभी बहुत कुछ बाकी है।

मेम भाभी ने यूसुफ के हाथ से गाऊन-जूते वगैरह सब लेते हुए मुझसे कहा, 'अच्छा, अब तू जा।'

मुझे मानो ज़िद चढ़ गई, अतः कहा, 'नहीं, मैं नहीं जाऊंगा।'

मेम भाभी ने कहा, 'बहुत रात हो चुकी है।'

मैंने कहा, 'होने दो।'

मेम भाभी ने कहा, 'तेरी मां तुझे डांटेगी, तू घर चला जा।'

मैंने कहा, 'नहीं, मैं किसी तरह भी नहीं जाऊंगा।'

मेम भाभी ने कहा, 'जरा सुनूं तो, मैं तेरी लगती क्या हूं?'

यूसुफ इतनी देर से हमारी बात तो सुन रहा था, पर हमारा आपस में सम्पर्क क्या है; यह सुन उसकी पहुंच से बाहर था। उसने मेरे बदन पर हाथ डालने के मतलब से जैसे ही कदम बढ़ाया कि आंखें लाल करके मेम भाभी गरज पड़ी, 'यूसुफ, खबरदार! खबरदार!'

यूसुफ चुपचाप जहां का तहां खड़ा रह गया। मेम भाभी ने कहा, 'मैं कपड़े वदलूंगी, अब तू जा यहां से।'

मैंने कहा, 'नहीं।'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे पास और कोई दूसरा कमरा नहीं है, तू वाहर जाकर खड़ा हो।'

तब भी मैंने यही कहा, 'नहीं, मैं वाहर हर्गिज़ नहीं जाऊंगा। और न ही तुम्हें जाने दूंगा।'

अब की वार मेम भाभी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे वाहर धकेल दिया। बोली, 'मैं कहती हूं, तू चला जा यहां से।'

मैंने वाधा डालने की कोशिश की। लेकिन मेम भाभी के हाथ का स्पर्श पाते ही महसूस हुआ, मानो मेरे शरीर में विजली दौड़ गई हो। मेम भाभी क्या सचमुच इतनी कमज़ोर हो गई है? क्या उसका शरीर इतना क्षय हो चुका है? लगा, मानो एक फूंक मारने से ही उड़ जाएगी, इतनी हल्की हो चुकी है वह। मानो ज़रा-सी ठेस लगते ही ज़मीन पर गिर पड़ेगी और फिर उठ नहीं सकेगी। मुझे वहुत दया और करुणा आई उसपर। ऐसा लगा, जैसे मेम भाभी को वहुत दिनों से खाना नहीं मिला हो। पे[illegible] भरकर मानो भोजन नहीं खाती, सिर्फ शराव गटकती रहती हो।

अतः उसे वाहर जाने से रोकने की अव मेरी इच्छा न रही। अपमा[illegible] होकर धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतर आया। मेम भाभी ने फटाक[illegible] दरवाज़ा वन्द कर लिया। सहन में पिंजरे में वैठी वत्तखें पीक-पीक [illegible] उठीं। वगल के कमरे में वैठी लड़कियों ने कदमों की आहट सुनकर [illegible] वार वाहर झांककर देखा, उसके वाद फिर से सिगरेट पीने लगीं।

मैं वाहर सड़क पर निकलकर, मकान की रोशनी और साज-स[illegible] को पारकर, गैस की रोशनी के नीचे अंधेरे की ओट में खड़ा रहा। कु[illegible] मेम भाभी के मकान के सामने वहुत वड़ी कार खड़ी थी। मैं उसी[illegible] एकटक देखता रहा।

क्षण-भर वाद देखा, अंधेरे में एक भौतिक नारी-मूर्ति मानो [illegible]

निकली हो। मैंने सीधी नजरों से देखा कि गैस की रोशनी के पड़ते ही नकली हीरे चमचम कर उठे। सिल्क का गाऊन भी जैसे चमक उठा। मेम भाभी फिर से वैसी ही मोहिनी मूर्ति बन गई थी। रंग, लिपस्टिक, पाउडर वगैरह से वह दुबारा वही सुन्दर-स्वस्थ युवती बन गई थी।

पल-भर बाद कार के पीछे की दोनों लाल बत्तियां जल उठीं। एक सर्र की आवाज हुई और गाड़ी धुआं उगलती हुई पूर्व दिशा की सड़क की ओर चल दी।

हो सकता है, मेम भाभी मेरे जीवन का एक साधारण-सा भग्नांश ही हो। इतने सम्पर्कों, इतनी चिन्ताओं और इतनी समस्याओं से भरे मेरे जीवन में मेम भाभी का क्या महत्त्व है, यह मैंने सहज ही अनुमान लगा लिया था। मेरे जीवन में एक आया, एक गया। इसी तरह अनगिनत पदध्वनियों ने मुझे आकर्षित किया है। पर जिस वक्त जिसके पास रहा, जिसको चाहा, उसके बारे में ऐसा लगा मानो वह चली गई तो मेरा जीवन शून्य हो जाएगा। लेकिन दरअसल हुआ कुछ नहीं। सचमुच में मैंने कुछ भी नहीं खोया। बल्कि सभी से मिली तमाम संचित सामग्री मेरे जीवन का ध्रुव बन गई। और यही मेरे जीवन की चरम सत्य रहा। बार-बार जिस तरह किसी चीज को खोने के गम में पागल हुआ हूं, उसी तरह कुछ पाने की खुशी में उमंग एवं उल्लास भी पाया है।

जब लोग पढ़ाई-लिखाई, राजनीति, साहित्य और सिनेमा के पीछे अपना दिमाग खपा रहे होते हैं, उस वक्त मैं कुछ भी नहीं करता। मैं सिर्फ मनुष्य के पीछे ही दिमाग खपाता रहता हूं। मैं जीवन के पीछे ही मारा-मारा फिरता रहा हूं। उस जीवन के पीछे, जो जिन्दगी के साथ शुरू होता है और मौत के साथ जिसका अन्त है। उस जीवन के पीछे, जो किसी अज्ञात निर्देश से निर्मित होता है और टूट भी जाता है। उस जीवन के पीछे, जो

अनुकूल अवस्था पाकर भी व्यर्थ चला जाता है, जबकि प्रतिकूल अवस्था होने पर भी ध्रुव बन जाता है।

हमारे ऑफिस के भवनाथ बाबू कहा करते थे, 'कलयुग में मालिक ही सार है और सब असार।'

मेरी दीदी की बहुत ही गरीब घर में शादी हुई थी, अतः वह कहा करती, 'मैं अच्छी तरह देख चुकी हूं कि कलियुग में पैसा ही सार है।'

मेरे पिताजी कहा करते, 'हमारे डिकिन्सन साहब, गाय और सूअर का मांस खाकर हजम कर जाते हैं, उन्हें कभी भी अनपच नहीं होता, अतः वही लोग सतयुगी व्यक्ति हैं।'

और हमारे घर में भागवत-पाठ करनेवाला वह बूढ़ा पंडित बसंत कहा करता, 'श्रीकृष्ण के वैकुण्ठ गमन के बाद से ही कलियुग शुरू हो गया है।'

मैं पूछता, 'कलियुग के कौन-कौन-से लक्षण होते हैं, पंडितजी ?'

बसंत पंडित कहता, 'श्रीमद्भागवत में शुकदेवजी ने कहा है कि अपनी इच्छानुसार पति-पत्नी का आपस में सम्बन्ध होना, धोखेबाजी से व्यापार करना, रतिकौशल से स्त्री-पुरुषों के गुण जांचना और जनेऊ देखकर ब्राह्मणों का परिचय प्राप्त करना, चापलूसी-भरी बातों से विद्वत्ता एवं दांत देखकर साधुता का विचार करना आदि लक्षण कलियुग की निशानियां हैं।'

सुनकर मैं सोच में पड़ जाता। यही सोच-सोचकर मुझे अचरज होता कि इतने युग की सब बातें ये पंडित लोग किस तरह जान जाते हैं ? शुकदेवजी ने किस तरह जान लिया कि कलकत्ते की एक गली में मेम भाभी को लेकर यह कहानी लिखने का मसाला तैयार होगा किसी दिन ? यह कैसे जान लिया था उन्होंने कि एक आधुनिक कहानीकार एक भ्रष्ट चरित्र की नारी के पास, उसपर कहानी लिखने का विषय ढूंढ़ने जाएगा ? जिस समय समूचा बंगाल चावल-दाल का फाटका खेल रहा था, उस वक्त लोगों की नजरों की ओट में ही एक भावी कहानीकार सब कुछ त्यागकर एक कांचन-कामिनी के मोहजाल में फंसकर एक नये जगत की सृष्टि करेगा ?

शुकदेवजी पंडित थे, ज्ञानी थे और त्रिगुणातीत पुरुष थे।

पर एक चीज उनको भी नहीं मालूम थी।

और वही चीज मेम भाभी ने मुझे बता दी।

वे नहीं जानते थे कि···पर अभी वह बात जाने ही दें।

उस दिन मेम भाभी के घर से मैं निकल तो आया पर मेम भाभी को भूल नहीं सकूंगा, यह मुझे मालूम था। घूम-फिरकर रोज शाम के अंधेरे में उसी गली के मोड़ पर जा खड़ा होता और दूर से उस तिमंजिले मकान को टकटकी लगाए देखता रहता। शायद कहीं कोई आभास ही मिल जाए! या कोई इशारा, या कोई इंगित! मेम भाभी के पुराने मकान के सामने से गुजरता तो बार-बार मुड़कर उसे देखता रहता। मानो उस बिल्डिंग के सर्वांग में मेम भाभी के स्पर्श की सुगंध अभी तक बसी हुई हो। मानो उस मकान के पास जाने से मेम भाभी का सान्निध्य मिल जाएगा। जिन्होंने केस करके मकान पर अधिकार जमाया है, उन्होंने उस मकान को कभी हाथ तक नहीं लगाया। जैसा था, वैसा ही पड़ा है। पता नहीं मेरठ या दरभंगा में, कहां तो रहते हैं वे लोग। हो सकता है, वे इसे बेचना चाहते हों। उधर देखते-देखते मैं अपने मन में सोचता कि किसका घर है और कौन भोगेगा, पता नहीं। मंझले ताऊजी ने कितने अरमानों से बनाया था यह मकान। खुद अपनी देख-रेख में मकान बनवाया था।

मंझली ताई कहा करती, 'हमने यह मकान बनवा दिया, अब अगर लड़के में योग्यता होगी तो वह एक मकान और बनवा लेगा।'

मंझले ताऊजी कहते, 'हुह, तुम्हारा लड़का वकील बनकर लौटेगा। तुम क्या सोचती हो कि वह इस गलीवाले मकान में रहना पसन्द करेगा? नामुमकिन!'

तब मंझली ताई कहती, 'देखोजी, लड़का और बहू रहेंगे इस कमरे में, और हम दोनों बुड्ढे-बुढ़िया रह लेंगे इसमें।'

समूची योजना पहले से ही पुख्ता बनाई गई थी। मंझले ताऊजी स्वयं चतुर व्यक्ति थे, अतः कहीं कोई कसर नहीं रखी थी। पोते-पोतियों का

कोई ठौर-ठिकाना नहीं था, पर पोते-पोतियों के लिए कमरा पहले से ही तैयार हो गया था। यहां तक कि जच्चा-घर भी बनवा लिया था। बेटे की बहू के लिए उसके शयन-कक्ष में संलग्न बाथरूम भी बनवा दिया था। इटालियन कम्पनी द्वारा मकान का फर्श बनवाया था। बेटे की बहू यहां बैठकर महावर रचाएगी, यहां बैठकर धूप में बाल सुखाएगी और यहां बैठकर अपनी सास को रामायण, महाभारत पढ़कर सुनाएगी आदि-आदि बातों में बहू को किसी बात का कष्ट न हो, ऐसा सोच-सोचकर उसकी सुविधा के लिए उनकी कल्पना-शक्ति ने कोई कसर नहीं रखी थी।

अहीरी टोले के बोस बाबू स्वयं सम्बन्ध लेकर उनके पास आए थे।

पर मंझले ताऊजी तो बस हंसी के मारे ही दुहरे हुए जा रहे थे। बोले, 'जब बेटा ही विदेश में है, तो उसकी शादी का सम्बन्ध कैसा ? पहले लड़के को तो आने दीजिए।'

बोस साहब ने कहा, 'उससे क्या आता-जाता है, मित्तिर साहब ! लड़के को मजे से अपनी पढ़ाई पूरी करके आने दीजिए न ! पर सगाई पक्की करने में हर्ज ही क्या है ?'

चन्दन नगर के मशहूर दत्त घराने के मंझले बाबू हाजिर हुए। बोले, 'आप मेरे बड़े भाई के श्वसुर के सगे मामा के लड़के के···!'

· पर मंझले ताऊजी सभीको वही एक-सा जवाब देते। कहते, 'पहले लड़के को तो आने दीजिए।'

मंझली ताई जब भी दूकानों में कपड़ा, गहना वगैरह खरीदने जातीं, तो बहू के लिए भी साड़ी-ब्लाउज पसन्द कर आतीं। वे कहा करतीं, 'बहू के लिए वैसी ही साड़ी खरीदेंगे, बहुत सुन्दर है।'

इसी तरह के कितने ही स्वप्न एवं अरमान थे दोनों के। और आखिर उनके अरमानों की बहूरानी भी आ गई। बहू के बदन का रंग रोज-मिल्क जैसा था ! खिंची हुई दोनों भौंहें। ठीक वैसी ही बहू, जैसी सास-श्वसुर चाहते थे। पर मंझली ताई की तकदीर में जिन्दा रहना नहीं लिखा था। मरकर ही मानो उन्हें नया जीवन मिला।

रंगा चाची ने कहा, 'मैंने तो पहले ही कह दिया था कि यह मुक्त की चिड़िया है, किसीकी कैद में नहीं रहेगी।'

रंगा चाची की बात शायद सच थी और मैं ही शायद गलती पर था।

पिताजी डिकिन्सन साहब की बहू का उदाहरण दिया करते थे, आखिरकार वे भी अचंभित रह गए थे। पर बीच में हमारे घर में मेम भाभी की आलोचना होनी कम हो गई थी। एक ही वस्तु भला ज़िन्दगी-भर के लिए जीभ को स्वादिष्ट लगती है? कभी-कभी स्वाद बदलने की इच्छा होने लगती तो चर्चाओं का विषय भी बदल जाता। जैसे, बगल के मकान की बहू कैसे बेहयापन करती है! किसी एक घर की कुंआरी जवान लड़की को सिनेमा देखने के लिए नहीं जाने दिया गया, इसलिए उसने कैसे टिंचर आयोडिन खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। अथवा बुढ़ापे में सास-बहू दोनों को एक ही जच्चाघर में कैसे एक साथ लड़के हुए थे आदि-आदि खबरें बिल्कुल ताज़ी और बहुत रोचक होती थीं।

अगर यह कहूं कि मेम भाभी की बात सिर्फ मैं ही नहीं भूल पाया था तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

एक दिन अचानक ऐसा हुआ कि मैं मेम भाभी के पुराने मकान के सामने से उसे देखते हुए गुज़र रहा था, मेरी नज़र लेटर-बक्स पर पड़ी। पता नहीं क्यों मुझे बहुत ही उत्सुकता हुई। उसकी फांक में से देखा तो पता चला कि उसमें कितनी ही चिट्ठियां पड़ी हुई हैं। जाने कब के आए हुए थे वे पत्र? मेम भाभी को यह मकान छोड़कर गए हुए कई दिन, बल्कि महीने हो गए थे। पर अभी तक किसीने इनको हाथ नहीं लगाया और न कोई देख पाया। ये पत्र लेनेवाला वहां कोई था भी तो नहीं।

उसी दिन रात में मैंने एक लोहे की संड़ासी लाकर लेटर-बक्स का ताला तोड़ा और समूची चिट्ठियां निकाल लीं।

एक-दो नहीं, बल्कि ढेरों पत्र थे और सब विलायत से आए थे।

उस दिन सारी रात मुझे नींद नहीं आई। रात के दो-तीन बजे तक कुछ का कुछ सोच-सोचकर मैं आकाश-पाताल एक किए दे रहा था कि यह

कैसे हो सकता है ? यह भला क्योंकर संभव होगा ? अभी तक मुझे यही पता था कि मेम भाभी अपने मां-बाप की बहुत लाड़ली इकलौती लड़की है। मेम भाभी के मां-बाप पैसे वाले बड़े आदमी हैं। उनके यहां बहुत ऐश्वर्य और आराम है। वह सबको ठुकराकर, अपनी जन्मभूमि की ममता छोड़कर सिर्फ अलकेश भैया के प्रेम के चलते ही बंगाल देश की बहू बनकर आ गई है। आज तक मैंने यही सब सुना था। पर अब मेरा सब सोचा हुआ गड़बड़ हो गया। मन ही मन सोचा, तो इतने दिनों से मेम भाभी ने क्या मुझे सब कुछ झूठ कहा था ? उसकी तमाम बातें धोखे से परिपूर्ण थीं ? क्या उनमें कुछ भी सार नहीं था ? पलक झपकते ही मेम भाभी के प्रति मेरा प्रेम मूल्यहीन हो गया। वह ऐसी झूठी है ! हां, अब पता चला कि मेम भाभी सिर्फ धोखेबाज ही नहीं, बल्कि झूठी भी है। क्षण-भर में ही मेरा दिल सूना हो गया। मेम भाभी की धोखेबाज़ी के कारण आत्मीय स्वजन, यार-दोस्त सभी मानो मुझे जहर के समान लगे। उस दिन मैं ऑफिस भी नहीं गया और डलहौसी स्क्वायर की बेंच पर बैठे-बैठे समूचा दिन बिता दिया। तालाब के पानी के ऊपर बहुत-से मच्छर इस पार से चक्कर काट रहे थे।

मैं सारे दिन चुपचाप वहीं बैठा रहा।

मेम भाभी के नाम आई चिट्ठियां मेरी पॉकेट में कांटे की तरह चुभने लगीं। एक बार तो गुस्से के मारे सोचा, सारे पत्र टुकड़े-टुकड़े कर पानी में फेंक दूं। अगर सारे सम्बन्ध टूटने हैं तो भले ही टूटें ! जब मेम भाभी खुद ही मेरे साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती, तो फिर मैं ही उससे कैसे सम्बन्ध रखूं ? किसी दिन वह अलकेश भैया के घर में विदेश से उसकी बहू बनकर आई थी, बस, इससे अधिक और कुछ नहीं हुआ था। यों भी कितने लोग मेमें ब्याह कर लाते हैं, लेकिन इस देश में आकर बंगालिन कोई नहीं बन सकी। सिर्फ कुछ दिनों तक उन मेमों ने मिल-जुलकर रहने की कोशिश ज़रूर की थी लेकिन फिर जब मन हुआ, तभी वापस

अपने देश लौट गई। इसी तरह मेम भाभी भी हमारे परिवेश में नहीं रह सकी और उसने अपनी राह चुन ली। वहाँ मेरी पसन्द-नापसन्द, अच्छा लगना, बुरा लगना आदि कोई महत्त्व नहीं रखता।

पहाड़ के समान वह दिन मैंने किस तरह गुज़ारा, यह मेरा दिल ही जानता है।

समूचे कलकत्ते को मैंने छान मारा। पर किस रास्ते से जाकर किस रास्ते पर निकला, यह याद नहीं है। ऐसा लगता है, मानो मैंने बार-बार मेम भाभी के घर के चारों ओर ही परिक्रमा की हो। मेम भाभी को मैं जितना भुलाने की कोशिश करता, मुझे लगता वह उतनी अधिक याद आती है।

वह दिन कितना भयानक गुज़रा, यह मुझे आज भी अच्छी तरह याद है। अब उस बात पर जरूर हंसी आती है। हंसी आना गलत नहीं है, यह बात आज मैं समझता हूं। लेकिन उस समय उम्र कुछ बड़ी होते हुए भी शायद बुद्धि मेम भाभी के प्रभाव से आच्छादित थी। रात हो गई, तब मैं हारकर थकावट से चूर-क्लांत-सा अपने घर लौट आया।

ऐसा क्या एक ही दिन हुआ था मेरे साथ ? नहीं। एक दिन, दो दिन, बल्कि कई दिन, कई शामें पागल की-सी हालत में गुजरी हैं। कलकत्ते में सब कुछ पहले की तरह ही ज्यों का त्यों था। कहीं कोई व्यवधान नहीं आया था। ट्राम-बसें अपने नियमानुसार चल रही थीं। लोगों की भीड़ भी फुटपाथ पर रोज की तरह चल रही थी। रात का अंधियारा फैलने के साथ-साथ शहर हल्का और पृथ्वी संकीर्ण होती जा रही थी। जिसका जहां आश्रय और ठौर-ठिकाना था, वह वहीं निश्चित होकर विश्राम कर रहा था। पर ओह, मुझे उस वक्त कैसी जानलेवा पीड़ा थी, मेरे दिल की कैसी भयंकर हालत हो रही थी ! लग रहा था मानो कोई मुझपर ज़बर्दस्त प्रहार कर रहा हो। मानो किसीने मुझसे विश्वासघात किया हो या किसी-ने मेरा सर्वस्व अपहरण कर लिया हो। मुझे लगा कि सुलतानगंज के छोटे कुमार साहब मानो मेरे दुश्मन हों, हालांकि छोटे कुमार साहब को मैंने कभी देखा नहीं था। उनके पास अपार धनराशि है और मुझे लगता उसी

दौलत का प्रलोभन देकर मानो किसीने मेरी अन्तरात्मा निकाल ली हो। अनेक प्रकार के लोगों की भीड़ में शाम के समय मेम भाभी के मोहल्ले में खड़ा-खड़ा मैं देखता रहता। मुझे इतनी भीड़ में कोई देख नहीं सकता था। मैं देखता कि एक कौआ उड़कर आया और मेम भाभी के मकान की मुंडेर पर बैठ गया है। पल-भर उसने इधर-उधर देखा और उसके बाद उड़कर एक दूसरी छत पर चला गया। दीवार की दरार में एक छोटा-सा पौधा उग आया है। ईंट, चूना और बालू की दरार से दो-चार हरी पत्तियां सिर निकाल रही हैं। छत पर बंधे बांस में एक लाल पतंग आकर अटक गई है। पश्चिम दिशावाली रेलिंग पर एक मैला-सा गाऊन, समीज और पेटीकोट-सा कुछ सूखने को डाला हुआ है आदि-आदि। मुझे यह सब इतना लुभावना लगता, मानो सामने बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यजनक दृश्य हो। कौआ, पतंग, पीपल का पौधा, समीज, पेटीकोट—ये तमाम चीज़ें मेरी नज़रों में अपूर्व-सी हो उठी थीं। मैं वहां चिलचिलाती धूप या घनघोर बरसात में सड़क पर एक जगह खड़ा होकर यह सब देखता रहता।

मैं पत्रों का पुलिन्दा बार-बार पॉकेट से निकालकर देखता और वहीं सड़क पर खड़े-खड़े पढ़े हुए उन पत्रों को फिर से पढ़ता। लेकिन पत्र भी कोई एक-दो तो थे नहीं!

मोहल्ले के डाकिये से भेंट होती तो मैं पूछता, 'मिसेज नोरा स्मिथ के नाम से कोई पत्र आया है क्या?'

डाकिया अपना बग टटोलकर कहता, 'नहीं।'

मुझे लगता, अगर और पत्र मिलते तो और अच्छा होता। इन कुछ पत्रों ने ही मानो मुझे मेम भाभी के अधिक नजदीक ला दिया और घनिष्ठ बना दिया। मेम भाभी के नन्हे-मुन्ने भाई-बहनों के लिखे वे पत्र, जिनमें नन्हे-नन्हे हाथों से लिखे टेढ़े-मेढ़े प्यारे-प्यारे अक्षर थे!

मेम भाभी के बहुत-से भाई-बहन हैं। मेम भाभी के इतने सारे भाई-बहन हैं, यह क्या पहले मुझे मालूम था? वे खत पढ़ते-पढ़ते मुझे महसूस होता कि मैं मेम भाभी को और भी नजदीक पा रहा हूं। ऐसा लगता मानो

मेम भाभी अपनी कोई सगी हों। मेम भाभी ने मुझसे जो इतनी झूठी बातें कही थीं, उनपर अब न मुझे क्रोध आता था और न दुःख होता था। न मुझे मेम भाभी के अभाव के वे दिन याद आने लगते जब जाड़े के दिनों में उसे पहनने को गरम कपड़े नहीं मिलते थे, पीने को चाय नहीं मिलती थी एवं हाथ-पैर सेकने को कोयले तक नहीं जुटे थे। मेम भाभी ने अपने जीवन में क्या कम दुःख सहे हैं ?

विन्सेंट स्क्वायर की एक अधकचरी गली में एक बीस वर्षीया लड़की तेरह भाई-बहनों को लेकर एक हाथ से खाना पकाती है और दूसरे हाथ से कपड़ों में साबुन घिसती है। छोटे बच्चों को लोरी गाकर सुलाती है। किसी दिन जब देखती कि घर में खाने को कुछ नहीं तो थैला लेकर बाजार जाती और बीन, आलू, टमाटर, सेम वगैरह चुनकर ले आती। जो सड़ी-गली, कीड़े-पड़ी चीजें फेंक दी जातीं, वही सब उठा लाती। आँखें बन्द करते ही मेरी कल्पनाशक्ति मानो देखने लगती कि एक लड़की थैला लेकर घर से बाजार के लिए निकली है। जब और लोग बाजार कर रहे हैं, उस वक्त उसकी नजर सड़क पर जमी हुई है। किसीकी डलिया से न जाने कब एक बैंगन गिर गया है, दूकानदार ने पता नहीं देखा है या नहीं; पर उस लड़की की दृष्टि उसीपर है। उसने भीड़-भाड़ में लोगों की नजरें बचाकर चुपचाप उसे थैले में डाल लिया। इस तरह पूरी गृहस्थी का भार उस छोटी-सी लड़की पर ही आ गिरा था।

एक खत में विली ने लिखा था, 'दीदी, अब मैं पब्लिक स्कूल में पास हो गया हूं। डेढ़ सौ पाउण्ड और भेज देना। अन्यथा मेरी पढ़ाई आगे नहीं चलेगी। मैंटिल्ड के जन्मदिन पर तुमने जो तीस शिलिंग भेजे थे, उनसे उसके लिए एक ओवरकोट खरीद लिया है। मम्मी की हालत वैसी ही है। आंखों से बिलकुल दिखाई नहीं पड़ता। सारे दिन बक-बक करती रहती है। उसे अस्पताल से घर भेज दिया गया है। हर महीने उसकी दवा-दारू में तीस-चालीस पाउण्ड खर्च पड़ जाता है। गत मास भेजे गए तुम्हारे पांच सौ पाउण्ड खर्च हो चुके हैं। अब की बार कुछ ज्यादा भेजना। अब की क्रिसमस

पटरानी

दौलत का प्रलोभन देकर मानो किसीने मेरी अन्तरात्मा निकाल ली हो। अनेक प्रकार के लोगों की भीड़ में शाम के समय मेम भाभी के मोहल्ले में खड़ा-खड़ा मैं देखता रहता। मुझे इतनी भीड़ में कोई देख नहीं सकता था। मैं देखता कि एक कौआ उड़कर आया और मेम भाभी के मकान की मुंडेर पर बैठ गया है। पल-भर उसने इधर-उधर देखा और उसके बाद उड़कर एक दूसरी छत पर चला गया। दीवार की दरार में एक छोटा-सा पौधा उग आया है। ईंट, चूना और बालू की दरार से दो-चार हरी पत्तियां सिर निकाल रही हैं। छत पर बंधे बांस में एक लाल पतंग आकर अटक गई है। पश्चिम दिशावाली रेलिंग पर एक मैला-सा गाऊन, समीज और पेटीकोट-सा कुछ सूखने को डाला हुआ है आदि-आदि। मुझे यह सब इतना लुभावना लगता, मानो सामने बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यजनक दृश्य हो। कौआ, पतंग, पीपल का पौधा, समीज, पेटीकोट—ये तमाम चीज़ें मेरी नज़रों में अपूर्व-सी हो उठी थीं। मैं वहां चिलचिलाती धूप या घनघोर बरसात में सड़क पर एक जगह खड़ा होकर यह सब देखता रहता।

मैं पत्रों का पुलिन्दा बार-बार पॉकेट से निकालकर देखता और वहीं सड़क पर खड़े-खड़े पढ़े हुए उन पत्रों को फिर से पढ़ता। लेकिन पत्र भी कोई एक-दो तो थे नहीं!

मोहल्ले के डाकिये से भेंट होती तो मैं पूछता, 'मिसेज नोरा स्मिथ के नाम से कोई पत्र आया है क्या?'

डाकिया अपना बग टटोलकर कहता, 'नहीं।'

मुझे लगता, अगर और पत्र मिलते तो और अच्छा होता। इन कुछ पत्रों ने ही मानो मुझे मेम भाभी के अधिक नज़दीक ला दिया और घनिष्ठ बना दिया। मेम भाभी के नन्हे-मुन्ने भाई-बहनों के लिखे वे पत्र, जिनमें नन्हे-नन्हे हाथों से लिखे टेढ़े-मेढ़े प्यारे-प्यारे अक्षर थे!

मेम भाभी के बहुत-से भाई-बहन हैं। मेम भाभी के इतने सारे भाई-बहन हैं, यह क्या पहले मुझे मालूम था? वे खत पढ़ते-पढ़ते मुझे महसूस होता कि मैं मेम भाभी को और भी नज़दीक पा रहा हूं। ऐसा लगता मानो

मेम भाभी अपनी कोई सगी हो। मेम भाभी ने मुझसे जो इतनी झूठी बातें कही थीं, उनपर अब न मुझे क्रोध आता था और न दुःख होता था। न मुझे मेम भाभी के अभाव के वे दिन याद आने लगते जब जाड़े के दिनों में उसे पहनने को गरम कपड़े नहीं मिलते थे, पीने को चाय नहीं मिलती थी एवं हाथ-पैर सेकने को कोयले तक नहीं जुटे थे। मेम भाभी ने अपने जीवन में क्या कम दुःख सहे हैं ?

विन्सेंट स्क्वायर की एक अधकचरी गली में एक बीस वर्षीया लड़की तेरह भाई-बहनों को लेकर एक हाथ से खाना पकाती है और दूसरे हाथ से कपड़ों में साबुन घिसती है। छोटे बच्चों को लोरी गाकर सुलाती है। किसी दिन जब देखती कि घर में खाने को कुछ नहीं तो थैला लेकर बाजार जाती और बीन, आलू, टमाटर, सेम वगैरह चुनकर ले आती। जो सड़ी-गली, कीड़े-पड़ी चीजें फेंक दी जातीं, वही सब उठा लाती। आखें बन्द करते ही मेरी कल्पनाशक्ति मानो देखने लगती कि एक लड़की थैला लेकर घर से बाजार के लिए निकली है। जब और लोग बाजार कर रहे हैं, उस वक्त उसकी नजर सड़क पर जमी हुई है। किसीकी डलिया से न जाने कब एक बैंगन गिर गया है, दूकानदार ने पता नहीं देखा है या नहीं; पर उस लड़की की दृष्टि उसीपर है। उसने भीड़-भाड़ में लोगों की नजरें बचाकर चुपचाप उसे थैले में डाल लिया। इस तरह पूरी गृहस्थी का भार उस छोटी-सी लड़की पर ही आ गिरा था।

एक खत में बिनी ने लिखा था, 'दीदी, अब मैं पब्लिक स्कूल में पास हो गया हूं। डेढ़ सौ पाउण्ड और भेज देना। अन्यथा मेरी पढ़ाई आगे नहीं चलेगी। मैटिल्ड के जन्मदिन पर तुमने जो तीस शिलिंग भेजे थे, उनसे उसके लिए एक ओवरकोट खरीद लिया है। मम्मी की हालत वैसी ही है। आंखों से बिलकुल दिखाई नहीं पड़ता। सारे दिन चख-चख करती रहती है। उसे अस्पताल से घर भेज दिया गया है। हर महीने उसकी दवा-दारू में तीस-चालीस पाउण्ड खर्च पड़ जाता है। गत मास भेजे गए तुम्हारे पाच सौ पाउण्ड खर्च हो चुके हैं। अब की बार कुछ ज्यादा भेजना। अब की क्रिसमस

पर सभीको खिलौने, फ्राक और सूट वगैरह खरीदकर देने ही पड़ेंगे।'

बूढ़ी अम्मा बगल के कमरे में पड़ी-पड़ी चिल्लाती रहती है। गले की आवाज ऐसी हो गई है, मानो उल्लू चीख रहा हो। किसी जमाने में मिसेज स्मिथ पर भी यौवन का खुमार था। दिमाग काम करता था। बुद्धि थी। शायद रूप भी बेशुमार था। लेकिन उसपर पूरी तरह से जवानी आने से पहले ही गांव में एक दिन शोर-गुल मच गया। ऐसे वक्त में कौन डॉक्टर को बुलाता और कौन दाई को बुलाता। शहर जाने के बड़े रास्ते में जो सेतु पड़ता है, उसीके नीचे सबकी नजरों की ओट में जो कुछ घटित होना था, वह घट गया। पर तब तक मिसेज स्मिथ का विवाह नहीं हुआ था। शाम का वक्त था, वह धीरे-धीरे चलकर उस सेतु के नीचे पहुंची और एक ईंट का सिरहाना बनाकर लेटी रही। एक गिरगिट बहुत देर से देख रही थी कि एक औरत पड़ी हुई कराह रही है। गिरगिट डर के मारे पीछे खिसक गई और वहीं से देखने लगी। वह औरत कभी इधर, कभी उधर करवटें बदल रही थी। लग रहा था, मानो अगर वह जोर से चीख सके, तभी उसे सुकून मिल सकेगा। पर उसके बाद तो उस गिरगिट को भी बहुत अचरज हुआ। खून से लथपथ और कीचड़ एवं मिट्टी से सना हुआ गाऊन! और एक छोटी-सी नवजात लड़की, जो उस सेतु के नीचे निर्जीव-सी पड़ी थी! गिरगिट डर से कांप उठी। अतः उसने और भी दूर के एक गड्ढ़े में घुसकर पनाह ली। वहां से वह अपनी आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगी।

मां ने उस लड़की का नाम रखा, 'नोरा!'

और उस दिन से नोरा की जीवन-कहानी शुरू होती है। पत्थर के एक छोटे-से मेहराब के नीचे जन्म लेकर आज वह फ्री स्कूल स्ट्रीट के एक फ्लैट में रहती है। पर उसके जन्म से लेकर अब तक के बीच का जीवन बड़ा ही विचित्र है।

एक दिन एक पुलिस कांस्टेबल ने अचानक एक लड़की को लाकर कोर्ट में पेश किया।

न्यायाधीश ने प्रश्न किया, 'किस बात का चार्ज है?'

पुलिस ने कहा था, 'धर्मावतार, यह बाज़ार से साग-सब्जी चुरा रही थी।'

जज ने पूछा, 'इसकी गोद में यह कौन है?'

आसामी ने जवाब दिया, 'हुजूर, यह मेरी लड़की है, पर इसका बाप नहीं है, हुजूर!'

आसामी उस दिन रिहा तो कर दी गई थी, लेकिन कोर्ट की चार-दीवारी पार करके बाहर निकलते-निकलते ही नोरा के लिए एक बाप तैयार मिला। वह सड़क पर जूते सिलाई का काम करता था। मां-बेटी को देखकर पता नहीं उसके मन में क्या आया कि आसामी को अपने झोले में से एक जोड़ा पुराना जूता निकालकर दे दिया। फिर वह उन दोनों को अपने घर ले गया और कहा, 'यह हमारा रसोईघर है, यह डाईनिंग टेबिल और यह है बेडरूम।'

कहने का मतलब यह है कि एक कमरे के तीन हिस्से करके तीन कमरों का काम लिया जाता था। उस समय नोरा का नाम पड़ा नोरा असगुड और मां का नाम मिसेज असगुड। फिर एक के बाद एक करके दो भाइयों और एक बहन का और आगमन हुआ। उन तीन भाई-बहनों का बोझ नोरा के ऊपर ही पड़ा।

मिसेज असगुड की शादी का सिलसिला क्या सिर्फ एक बार की बात थी? कई पतियों को छोड़कर मां ने दूसरे-दूसरे से शादी की और बार-बार नोरा के नाम के साथ अलग उपनाम जुड़ता गया। सिर्फ उपनाम ही क्यों, हर बार घर भी बदलते गए, देश भी बदलते गए। इन सबके अलावा भाई-बहनों की संख्या भी बढ़ती गई। अन्त में उपस्थित हुए मिस्टर स्मिथ। नोरा का यह बाप बैण्डवाले दल में ढोलक बजाने का काम करता था।

नोरा ने छोटे भाई-बहनों को गोद और पीठ पर लाद-लादकर कुछ बड़ा किया नहीं कि एक और आकर हाजिर हो जाता।

नोरा कहती, 'मुझमें और ताकत नहीं, बाबा!'

मां भड़क उठती। कहती, 'फिर तू कर क्या सकती है, ज़रा बता ? कहो तो मैं गले में फन्दा डालकर मर जाऊं।'

मेम भाभी ने बताया था, 'बच्चा हुआ मां को और हर बार दशा भोगी मैंने। न मुझे सोने को मिलता, न भूख लगने पर खाना मिलता। जब से मैं जन्मी, तब से मैंने भाई-बहिनों को ज़च्चा-घर से ही दूध पिला-पिलाकर बड़ा किया है।'

छोटी बहिन मिनी में एक खत में लिखा है, 'पिछली बार मेरे जन्म-दिन पर मुझे कुछ भी नहीं मिला, अब की बार मुझे एक ट्राइ-साइकिल खरीदकर देनी ही पड़ेगी। मेरे पास तेरह शिलिंग इकट्ठे हो गए हैं। अगर तुम मेरे पास और रुपये भेजो तो मां के नाम से मत भेजना, नहीं तो मां सब ले लेगी।'

मंझले भाई हेनरी ने लिखा है, 'दीदी, दर्ज़ी की दूकान में मेरे तीन पाउण्ड का उधार चल रहा है। अब और उधार नहीं देता वह। क्रिस-मस पर गैबरडिन का नया सूट बनवाऊंगा। रुपये जरूर भेजना, लेकिन भेजना मेरे नाम से। रुपये आते ही सबके सब भैया ले लेते हैं। हमलोगों को कुछ भी नहीं देते।'

मां कहती, 'इतनी बड़ी धींगड़ी हो गई है, लेकिन एक पैसा भी कमाने का शऊर नहीं है।'

बहुत रात गए जब बैण्ड-मास्टर डगमगाते कदमों से घर लौटता तो सभी तब तक सो चुके होते। मां की भी नींद के मारे नाक बजने लगती। लेकिन नोरा बाप के इन्तजार में जागती रहती।

कभी-कभी शराब के नशे में होश खो देने पर बाप चीख उठता, 'शुगर नहीं है ?'

नोरा कहती, 'नहीं।'

बस, तब तो खाना-वाना सब इधर-उधर फेंककर बैण्ड मास्टर महाभारत ही मचा देता। चूंकि वह चौथा पति था, अतः नोरा को सभी चीजें स्वयं इन्तज़ाम करके रखनी पड़ती थी। डर

उसका दिल धक्-धक् करने लगता, वह पीछे की खिड़की से भाग जाती। उस वक्त विन्सेंट स्क्वायर की सड़क पर आदमी का नामोनिशान नहीं रहता। सफेद-सफेद रुई जैसी बरफ पेड़ों पर जमी रहती। जाड़े के मारे थरथराती हुई वह एक धोबी के भट्टे के पास छिप जाती।

मां कहती, 'तुमसे कौन शादी करेगा? कोई नहीं करेगा। इतनी बड़ी धिंगड़ी जवान ब्याह लायक लड़की होकर भी सड़कों पर मारी-मारी फिरती रहती है। तेरी तकदीर में यही लिखा है।'

डोरा कहती, 'मैं तो इटालियन से शादी करूंगी। वे लोग पत्नी को बहुत प्यार करते हैं। वे लाड़ करना जानते हैं।'

नोरा की इच्छा होती, काश, वह भी इटालियन से शादी कर सकती। पति के बारे में की गई कल्पनाओं को कभी-कभी वह साकार करने का प्रयत्न किया करती। सड़क पर चलते समय एकाएक अगर कोई सुनहरे बालों वाला युवक दिखाई दे जाता तो वह वहीं खड़ी रह जाती कि शायद वह इटालियन ही हो। रोम से आया होगा या मिसली से। वह उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के विविध प्रयत्न करती। नीचे गलेवाला ब्लाउज पहनती। फ्रॉक को घुटनों के ऊपर तक उठा लेती।

जब रात को सभी सो जाते तो वह छोटा शीशा बाहर निकालकर अपना मेकअप करती। होंठों को रंग लेती। भौंहों को कलम से और नुकीला करती। फिर फेस-पाउडर मल-मलकर चेहरे को और अधिक लाल कर लेती। वह अपना चेहरा खुद ही बार-बार शीशे में देखती और अपनी सुन्दरता पर आप ही मुग्ध हो जाती। एकाध बार देखकर मानो उसका मन ही नहीं भरता और वह इसी तरह से देख-देखकर खुश होती रहती। अन्त में एक फटे कपड़े से सब कुछ पोंछकर वह बिस्तर के एक कोने में पड़ जाती। फिर उसे गहरी नींद आ जाती।

डोरा कहती, 'उस घोड़े के सिर पर अगर एक पत्थर मार सको तो एक शिलिंग की शर्त रही।'

बूढ़ा कसाई इन दोनों लड़कियों को दूर से देखते ही दुत्कारने लगता।

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज़्यादती अथवा अत्याचार करे तो…!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।…लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। ढुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो…!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।…लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज़्यादती अथवा अत्याचार करे तो…!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बैठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।…लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

ये सब बातें आज से बहुत साल पहले की हैं, हालाकि ये सब मेरे जानने की बातें नही थी। मेम भाभी का ऐसा रूप मैं जानता भी नहीं था। लेकिन मेम भाभी के नाम उन कुछ पत्रों को पढ़कर मैं मेम भाभी को नई तरह से देखने लगा था। उसने कितनी तरह से मुझसे झूठ कहा है और कितनी सारी बातें उल्टी बताई हैं। जेब मे वे सारे खत ठूंसे मैं पागलों की तरह मेम भाभी से मुलाकात करने को घूम रहा था।

और इसी बीच उस दिन यूसुफ से मेरी भेंट हो गई।

शायद उसने मुझे पहचाना नही। मैं सड़क पर जा रहा था। अचानक लगा कि पीछेवाला लुंगी पहने आदमी पता नही क्या बड़बड़ाता हुआ मेरे पीछे से आ रहा है। पलटकर देखा तो यूसुफ था।

यूसुफ ने कहा, 'असली विलायती चीज है, बाबूजी। खास लन्दन से आई है। बिलकुल अनछुई है।'

मुझे उस व्यक्ति पर बहुत ही घृणा आई। पहले तो सोचा कि उसे अधिक छूट नही दूं। उन लोगों का यही घृणित पेशा है। लेकिन पॉकिट में हाथ जाते ही उन चिट्ठियों की याद आई।

मुझे याद आया कि विली ने लिखा है, 'दीदी, इस बार क्रिसमस पर पांच सौ पाउण्ड और भेजना। इस बार मैटिल्ड के जन्म-दिन पर एक ओवरकोट खरीद लिया है। मम्मी की हालत वैसी ही है। एकदम से अंधी हो गई है। कुछ भी दिखाई नही पड़ता। सारे दिन चख-चख करती रहती है। तुम रुपये जरूर भेजना।'

यूसुफ ने फिर कहा, 'असली विलायती चीज है, बाबूजी। खास विलायत से आई है।'

मैंने जब अच्छी तरह परख लिया कि वह मुझे नहीं पहचान पाया है और मुझे शिकार समझकर फास रहा है तो फिर मैंने भी उसकी गलती सुधारने की कोई कोशिश नहीं की। वह नई चीज के गुणों का बहुत बखान करता हुआ मेरे साथ-साथ चलने लगा। बहुत-सी सडकें पार करके हम उस गली मे पहुच गए, जिसमे मेम भाभी रहती थी। मैंने देखा, हम दोनों

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाजी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो…!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।…लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेबाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। बाप शराब के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नजर से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और बीचोंबीच एक दरार-सी बन गई। वह झटपट ही एक चंचल चुलबुली किशोरी में बदल गई।

एक दिन मां-बाप दोनों के बीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और बाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सब कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। बाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार बैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो···!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में बड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी बनकर वह इण्डिया चली जाए तो बस, फिर उसे किसी बात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ बैठे-बठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताब पढ़ो।···लेकिन भाई-बहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? बाप के बारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त बैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने बहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

कहता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आईं।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेवाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। वाप शराब के नशे में गलती कर वैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और वीचोंवीच एक दरार-सी वन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलवुली किशोरी में वदल गई।

एक दिन मां-वाप दोनों के वीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और वाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सव कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। वाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार वैठे या किसी तरह की ज्यादती अथवा अत्याचार करे तो…!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र ! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में वड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी वनकर वह इण्डिया चली जाए तो वस, फिर उसे किसी वात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ वैठे-वठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताव पढ़ो।…लेकिन भाई-वहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? वाप के वारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त वैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने वहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

हता, 'चलो, भागो यहां से। हुंह, फिर मांस चुराने आई।'

लेकिन एक दिन उसी लड़की के शरीर की हड्डियों पर मांस उभर आया, गालों पर लाली खिल आई और आंखों ने इशारेवाज़ी सीख ली। सड़क चलते लड़के उसपर तानाकशी करते। वाप शराव के नशे में गलती कर बैठता और मां उसे टेढ़ी नज़र से देखती। धीरे-धीरे उसकी कमर मोटी होने लगी, पीठ पर मांस चढ़ा और वीचोंवीच एक दरार-सी वन गई। वह चटपट ही एक चंचल चुलवुली किशोरी में वदल गई।

एक दिन मां-वाप दोनों के वीच घमासान झगड़ा हो गया।

मां ने कहा, 'जाओ, निकलो मेरे घर से; निकल जाओ।'

और वाप कह रहा था, 'तुम निकल जाओ।'

यह भी किसी महाभारत से कम नहीं था। नोरा ने छिपकर सव कुछ सुना। लेकिन डर के मारे कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी उसमें। वाप के सामने निकलने में भी उसे डर लगता था। वह कहीं मार वैठे या किसी तरह की ज़्यादती अथवा अत्याचार करे तो...!

इन्हीं हालतों में एक दिन अलक से मुठभेड़ हो गई। अलकेश मित्र! लन्दन में वकालत पढ़ने गया था। पिता रूई के व्यापारी थे। इण्डिया में वड़ा-सा अपना मकान था। उनके यहां चार कारें थीं। अगर उसकी पत्नी वनकर वह इण्डिया चली जाए तो वस, फिर उसे किसी वात की तकलीफ नहीं रहेगी। कोई भी कुछ काम करने को नहीं कहेगा। सिर्फ वैठे-वठे आराम करो। पैरों पर पैर रखकर किताव पढ़ो।...लेकिन भाई-वहनों को कौन संभालेगा? अंधी मां की देख-भाल कौन करेगा? वाप के वारे में तो कोई चिन्ता ही नहीं। उस वक्त वैण्ड मास्टर स्मिथ जेल में था।

अलकेश भैया ने सभीसे कहा, 'मेरे पिता के पास चार लाख रुपये हैं। रूई के व्यापार में मेरे पिताजी ने वहुत रुपये कमा लिए हैं। मेरे पिताजी इण्डिया के कॉटन-किंग हैं।'

ये सब बातें आज से बहुत साल पहले की हैं, हालांकि ये सब मेरे जानने की बातें नहीं थीं। मेम भाभी का ऐसा रूप मैं जानता भी नहीं था। लेकिन मेम भाभी के नाम उन कुछ पत्रों को पढ़कर मैं मेम भाभी को नई तरह से देखने लगा था। उसने कितनी तरह से मुझसे झूठ कहा है और कितनी सारी बातें उल्टी बताई हैं। जेब में वे सारे खत ठूंसे मैं पागलों की तरह मेम भाभी से मुलाकात करने को घूम रहा था।

और इसी बीच उस दिन यूसुफ से मेरी भेंट हो गई।

शायद उसने मुझे पहचाना नहीं। मैं सड़क पर जा रहा था। अचानक लगा कि पीछेवाला लुंगी पहने आदमी पता नहीं क्या बड़बड़ाता हुआ मेरे पीछे से आ रहा है। पलटकर देखा तो यूसुफ था।

यूसुफ ने कहा, 'असली विलायती चीज है, बाबूजी। खास लन्दन से आई है। बिलकुल अनछुई है।'

मुझे उस व्यक्ति पर बहुत ही घृणा आई। पहले तो सोचा कि उसे अधिक छूट नहीं दूं। उन लोगों का यही घृणित पेशा है। लेकिन पॉकिट में हाथ जाते ही उन चिट्ठियों की याद आई।

मुझे याद आया कि बिली ने लिखा है, 'दीदी, इस बार क्रिसमस पर पांच सौ पाउण्ड और भेजना। इस बार मैटिल्ड के जन्म-दिन पर एक ओवरकोट खरीद लिया है। मम्मी की हालत वैसी ही है। एकदम से अंधी हो गई है। कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। सारे दिन चलन-चल करती रहती है। तुम रुपये जरूर भेजना।'

यूसुफ ने फिर कहा, 'असली विलायती चीज है, बाबूजी। खास विलायत से आई है।'

मैंने जब अच्छी तरह परख लिया कि वह मुझे नहीं पहचान पाया है और मुझे शिकार समझकर फांस रहा है तो फिर मैंने भी उसकी गलती सुधारने की कोई कोशिश नहीं की। वह नई चीज के गुणों का बहुत बखान करता हुआ मेरे साथ-साथ चलने लगा। बहुत-सी सड़कें पार करके हम उस गली में पहुंच गए, जिसमें मेम भाभी रहती थी। मैंने देखा, हम दोनों

म भाभी के मकान के सामने खड़े हैं ।

भाभी ने कहा था, 'ये लोग मेरे खून के एक-एक कतरे तक का ते हैं, मालूम है तुझे ? तू मुझे इनके हाथों से बचा ले, भई ।'

र बोली थी, 'यह देख, मेरे शरीर में अब कहीं भी खून नहीं बचा ॉक्टर वैसाख का कहना है कि अगर यही सिलसिला चालू रहा तो धिक नहीं जिऊंगी ।'

नशे में चूर होकर होशोहवाश खो देनेवाले आदमी की क्या हालत ती है, यह मुझे नहीं मालूम, क्योंकि मैंने कभी नशा नहीं किया; लेकिन फर भी मैंने महसूस किया कि मेम भाभी को शायद किसी प्रकार का नशा करने की आदत है और वह उसी नशे में चारों ओर से बुरी तरह घिर चुकी है। शायद लौकिक सम्पर्क द्वारा उस नशे के चंगुल से उसे मुक्त कराना सम्भव नहीं। कितने ही दिनों तक मैं अपना लिखना-पढ़ना छोड़कर, अपने आत्मीय स्वजनों को भूलकर, एक अनात्मीया और विदेशी नारी के मोह में, जिससे मेरा कोई सम्पर्क नहीं था, रात-दिन चक्कर काटता रहा। यों मैंने अपने मन को समझाने की बहुत कोशिश की है कि मेम भाभी मेरी कुछ नहीं लगती; माना कि अलकेश भैया के मरने से पहले वह मेरी कुछ लगती थी, पर अब उससे मेरा कोई नाता नहीं; मेम भाभी ने अपने-आप अपना स्वाभाविक पथ ढूंढ़ निकाला है; यही स्वाभाविक है और यही मेम भाभी का असली रूप है; लेकिन मानव-मन को समझा लेना यदि इतना ही सहज होता तो फिर चिन्ता किस बात की थी ?

यही कारण था कि अपनी आंखों को बन्द करते ही मेरे मन की आं स्पष्ट देख लेतीं कि जिन्दगी की समस्याओं का समाधान खोजने के लि लन्दन की सड़क पर दो लड़कियां घूम रही हैं। सड़क पर चलते-च उन्हें कैसी पोशाकें पसन्द हैं, कैसा पति पसन्द है, कैसे जूते पसन्द हैं यही बातें उनके दिमाग में चक्कर काटती रहतीं ।

डोरा कहती, 'वह देख, वे जूते मुझे बहुत पसन्द हैं।'

नोरा कहती, 'धत्, उसका स्ट्रेप तो बहुत मोटा है!'

डोरा पूछती, 'तुझे मोटर में बैठना अच्छा लगता है या मोटर सा किल पर ?'

गोरा कहती, 'इधर देख, इस मोजे पर कीमत लिखी है, सात शिलिंग! कोई भला आदमी क्या खरीद सकता है इतना मंहगा ?'

बस, दुनिया-भर की चीजें देखने फिरना और पसन्द करना, यही उन-का खेल था। चाहे मुट्ठी में कुछ रहे या न रहे, अपने पास पैसा हो या न हो; लेकिन पसन्द-नापसन्द करने का अधिकार तो एक भिखारी को भी है। पांच सौ पाउण्ड भला तुम्हें कौन दे रहा है ? कौन ऐसा राजकुमार तुम्हारे इन्तजार में बैठा है, जो देखते ही तुम्हारे गले में वरमाला डाल देगा ? तुम्हारे तेरह भाई-बहन हैं, जिनके फटे कपड़ों में साबुन घिसते-घिसते तुम्हारे हाथों में छाले भले ही पड़ जाएं, लेकिन स्वप्न ही देखना है तो फिर एक पैसे का क्यों देखें, लाख रुपयों का स्वप्न ही देखेंगे न ! अगर सपने में खाना ही खाना है तो फिर नमकवाला बासी भात भला क्यों खाएंगे, खाना तो पुलाववाला ही खाएंगे न !

मेम भाभी ने बताया था, 'और जब मलक को मैंने देखा तो सोचा, इटालियन पति न सही इण्डियन कॉटन-प्रिंस तो पा ही लिया।'

मेम भाभी ने आगे बताया था, 'जब मैं जहाज पर चढ़ने लगी ो डोरा आई थी हमें विदा करने। तब तक उसकी शादी नहीं हुई थी। ने अपने मन में सोचा कि बाजी मेरे हाथ ही रही। इण्डिया पहुंचते ही रानी बन जाऊंगी। रानी साहिबा बनूंगी।'

मेम भाभी ने यह भी कहा था, 'मैंने इण्डिया पहुंचते ही डोरा को खत खा था। मैंने उसमें लिखा था कि यहां सभी मुझे रानी साहिबा कहकर रते हैं। मैं बहुत बड़े पैलेस में रहती हूं और हर रोज पार्टी देती हूं। र पार्टी में सोने-चांदी के काम की पोशाकें पहने राजा-महाराजा आते जो मेरे सामने घुटनों के बल बैठकर मेरा हाथ चूमते हैं।'

अब इतने दिनों के बाद ये सब बातें सोचकर मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि अब कभी भी और कहीं भी मेम भाभी से साक्षात्कार होने का

बिलकुल मेम भाभी के मकान के सामने खड़े हैं।

मेम भाभी ने कहा था, 'ये लोग मेरे खून के एक-एक कतरे तक का सौदा करते हैं, मालूम है तुझे ? तू मुझे इनके हाथों से बचा ले, भई।'

फिर बोली थी, 'यह देख, मेरे शरीर में अब कहीं भी खून नहीं बचा है। डॉक्टर बैसाख का कहना है कि अगर यही सिलसिला चालू रहा तो मैं अधिक नहीं जिऊंगी।'

नशे में चूर होकर होशोहवाश खो देनेवाले आदमी की क्या हालत होती है, यह मुझे नहीं मालूम, क्योंकि मैंने कभी नशा नहीं किया; लेकिन फिर भी मैंने महसूस किया कि मेम भाभी को शायद किसी प्रकार का नशा करने की आदत है और वह उसी नशे में चारों ओर से बुरी तरह घिर चुकी है। शायद लौकिक सम्पर्क द्वारा उस नशे के चंगुल से उसे मुक्त कराना सम्भव नहीं। कितने ही दिनों तक मैं अपना लिखना-पढ़ना छोड़कर, अपने आत्मीय स्वजनों को भूलकर, एक अनात्मीया और विदेशी नारी के मोह में, जिससे मेरा कोई सम्पर्क नहीं था, रात-दिन चक्कर काटता रहा। यों मैंने अपने मन को समझाने की बहुत कोशिश की है कि मेम भाभी मेरी कुछ नहीं लगती; माना कि अलकेश भैया के मरने से पहले वह मेरी कुछ लगती थी, पर अब उससे मेरा कोई नाता नहीं; मेम भाभी ने अपने-आप अपना स्वाभाविक पथ ढूंढ़ निकाला है; यही स्वाभाविक है और यही मेम भाभी का असली रूप है; लेकिन मानव-मन को समझा लेना यदि इतना ही सहज होता तो फिर चिन्ता किस बात की थी ?

यही कारण था कि अपनी आंखों को बन्द करते ही मेरे मन की आंखें स्पष्ट देख लेतीं कि जिन्दगी की समस्याओं का समाधान खोजने के लिए लन्दन की सड़क पर दो लड़कियां घूम रही हैं। सड़क पर चलते-चलते उन्हें कैसी पोशाकें पसन्द हैं, कैसा पति पसन्द है, कैसे जूते पसन्द हैं, बस, यही बातें उनके दिमाग में चक्कर काटती रहतीं।

डोरा कहती, 'वह देख, वे जूते मुझे बहुत पसन्द हैं।'

नोरा कहती, 'धत्, उसका स्ट्रेप तो बहुत मोटा है!'

डोरा पूछती, 'तुझे मोटर में बैठना अच्छा लगता है या मोटर साइकिल पर?'

नोरा कहती, 'इधर देख, इस मोजे पर कीमत लिखी है, सात शिलिंग। कोई भला आदमी क्या खरीद सकता है इतना मंहगा?'

बस, दुनिया-भर की चीजें देखते फिरना और पसन्द करना, यही उनका खेल था। चाहे मुट्ठी में कुछ रहे या न रहे, अपने पास पैसा हो या न हो; लेकिन पसन्द-नापसन्द करने का अधिकार तो एक भिखारी को भी है। पांच सौ पाउण्ड भला तुम्हें कौन दे रहा है? कौन ऐसा राजकुमार तुम्हारे इन्तजार में बैठा है, जो देखते ही तुम्हारे गले में वरमाला डाल देगा? तुम्हारे तेरह भाई-बहन हैं, जिनके फटे कपड़ों में साबुन घिसते-घिसते तुम्हारे हाथों में छाले भले ही पड़ जाएं, लेकिन स्वप्न ही देखना है तो फिर एक पैसे का क्यों देखें, लाख रुपयों का स्वप्न ही देखेंगे न! अगर सपने में खाना ही खाना है तो फिर नमकवाला बासी भात भला क्यों खाएंगे, खाना तो पुलाववाला ही खाएंगे न!

मेम भाभी ने बताया था, 'और जब अलक को मैंने देखा तो सोचा, *इटालियन पति न सही इण्डियन कॉटन-प्रिंस तो पा ही लिया।'*

मेम भाभी ने आगे बताया था, 'जब मैं जहाज पर चढ़ने लगी तो डोरा आई थी हमें विदा करने। तब तक उसकी शादी नहीं हुई थी। मैंने अपने मन में सोचा कि बाजी मेरे हाथ ही रही। इण्डिया पहुंचते ही मैं रानी बन जाऊंगी। रानी साहिबा बनूंगी।'

मेम भाभी ने यह भी कहा था, 'मैंने इण्डिया पहुंचते ही डोरा को खत लिखा था। मैंने उसमें लिखा था कि यहां सभी मुझे रानी साहिबा कहकर पुकारते हैं। मैं बहुत बड़े पैलेस में रहती हूं और हर रोज पार्टी देती हूं। उस पार्टी में सोने-चांदी के काम की पोशाकें पहने राजा-महाराजा आते हैं, जो मेरे सामने घुटनों के बल बैठकर मेरा हाथ चूमते हैं।'

अब इतने दिनों के बाद ये सब बातें सोचकर मुझे अच्छा नहीं लगता है, क्योंकि अब कभी भी और कहीं भी मेम भाभी से साक्षात्कार होने का

मुझे डर नहीं है। लेकिन एक लड़की के बड़े-बड़े अरमान कितनी दूर तक और किस कदर नीचे उतर सकते हैं, इसका उदाहरण मेम भाभी थी।

उससे सभी कहा करते थे, 'इतना घमंड अच्छा नहीं।'

जिसके पास पहनने को सिल्क का एक गाऊन तक नहीं है, उसका दिमाग! मोहल्ले के जो लड़के उसपर व्यंग्य कसते, जो चोरी-छिपे उससे मिलना चाहते, जो उससे शादी करने को उत्सुक रहते; उन्हींकी इतनी उपेक्षा करना क्या उचित था? जॉर्जी ड्राइ क्लीनिंग में धोबी का काम किया करता था। उससे अगर वह शादी कर लेती तो शायद मां की तरह उसे भी लड़के-बच्चों की एक गृहस्थी चलानी पड़ती। और एक था मार्टिन। वह मछली का व्यापार करता था। पर उससे तो उसके अरमान पूरे नहीं होते।

मुझे अच्छी तरह याद है कि आबू पहाड़ पर ऊंचे पैलेस में बैठकर मेम भाभी ने कहा था, 'मुझे कोई भी पसन्द नहीं आता था, भई। मैं हमेशा यही सोचती कि मैं जिस स्तर की हूं, उससे ऊंची उठूं। मां की हालत मैं देख चुकी थी। एक के बाद एक शादियां कीं और अन्त में सिर धुनकर रोती रही। इसीलिए मुझे लगता, अगर मेरी भी यही हालत हुई तो···!' कहते-कहते मेम भाभी की आंखों से झर-झर आंसू बहने लगे।

वह आगे बोली थी, 'अलक ने मुझे जो कुछ दिया, उसने जितने भी रुपये मेरे हाथ में रखे; मैंने सब अपने देश भेज दिए। उन्हें लिखा कि मेरे पास रुपयों की कोई कमी नहीं। तुमलोगों को जितने रुपयों की जरूरत है, सब मैं भेज दूंगी। अब मैं रानी साहिबा बन गई हूं। मैं बहुत ठाट से रहती हूं। मेरे पास अगाध ऐश्वर्य है, किसी तरह का अभाव नहीं। अब मैं सोने के थाल में डिनर खाती हूं और चांदी की कटोरी में करी।'

मैंने पूछा, 'इतने रुपयों की उन्हें आवश्यकता किसलिए पड़ती थी?'

मेम भाभी ने बायें हाथ की उंगलियों से घूंघट को थोड़ा-सा सरका-कर मुझे बताया था, 'मेरे तेरह भाई-बहन थे। उनको क्या लायक नहीं बनाना था? मुझे हमेशा यही चिन्ता रहती कि कहीं वे भी मेरी ही तरह

मुसीबतों में न फंसें। मैं चाहती थी कि उन्हें गरम खाना मिले, आलू की सब्जी खाने को मिले। उन लोगों को गन्दी बस्ती में नहीं रहना पड़े, बल्कि वे किसी आलीशान बंगले के शीततापनियन्त्रित कमरे की गरमायी फिजां में बैठकर अपना शरीर गर्म रख सकें और जाड़े के दिनों में पांव में गर्म मोज़े पहन सकें। बस, मुझे हमेशा यही चिन्ताएं रहती थी।'

मेम भाभी ने आगे बताया था, 'मेरे रुपयों के सहारे ही उन लोगों ने एक बड़ा-सा मकान किराये पर ले लिया है। सभी बहन-भाइयों का स्कूल में दाखिला हो गया है। मंझले भाई हेनरी ने साइकिल खरीद ली। क्रिसमस के दिनों में सभीको केक मयस्सर हुआ और मां का शरीर नये तौर पर फिर से स्वस्थ हो गया। भाई-बहन आवारा होने से बच गए।'

मैंने कहा, 'मेम भाभी, यह सब तुम्हारी मनगढ़ंत कहानी तो नहीं?'

मेम भाभी ने कहा, 'मैंने जो कुछ किया, सब उन्हीं लोगों की सुख-सुविधा को ध्यान में रखते हुए किया था। उस वक्त मेरे हाथ में एक भी पैसा नहीं था और मैं फ्री स्कूल स्ट्रीट की गन्दी बस्ती में एक गन्दा-सा फ्लैट लेकर रहती थी, और खुद को यूसुफ एवं अब्दुल के हाथों में सौंप दिया था। डॉक्टर बैसाख के काफी कहने पर भी मैंने अपने लिए दवा खरीदकर एक पैसा भी व्यर्थ नहीं गंवाया। यहां तक कि मैंने अपने लिए गाऊन तक नहीं खरीदा और किराये पर लेकर काम चलाती रही। यह सब मैंने किसके लिए किया, जरा बताओ तो? उन्हीं लोगों की भलाई की चिन्ता के मारे न?'

मैंने कहा, 'नहीं उन लोगों की चिन्ता के कारण नहीं, बल्कि···।'

मोटे गद्देदार सोफे पर अपने गहने, साड़ी और चुनरी के भार से दबी मेम भाभी मेरी बात सुनकर अचरज में डूब गई। बोली, 'उनके लिए यह सब नहीं किया तो और भला किसके लिए किया?'

मैंने कहा, 'तुमने सब कुछ खुद अपने लिए किया है। तुम स्वार्थी हो। तुमने अपनी ही स्वार्थपरतावश यह सब किया है।'

मेम भाभी को बहुत ताज्जुब हुआ, मानो उसने ऐसी असम्भव बात

आज तक नहीं सुनी थी। मानो अपने मन के अन्दर उसने कभी भी झांक-कर नहीं देखा था। सचमुच ऐसा लगा मानो मेम भाभी अपने जीवन में अभी ही ठहरी हो, स्थिर हो सकी हो। मानो यही पहला मौका है, जब उसके दिल को सुकून मिला है, अन्यथा इतने दिनों तक वह बस, मृगतृष्णा के पीछे दौड़ती रही है। पत्थरों के मेहराब के नीचे अपना घृणित जन्म लेकर उसने उसी दिन से दौड़ना शुरू किया था। उसे मोची की लड़की, धोबी की लड़की, फेरीवाले की लड़की और कभी बैण्ड-मास्टर की लड़की बनकर पता नहीं कहां-कहां दौड़ना पड़ा है! कितना लम्बा सफर! यहां भी नहीं, वहां भी नहीं! चलो, कहीं दूसरी जगह, जहां सुख-शान्ति से भरपूर स्वाभाविक वातावरण मिले। जहां जाने पर कोई अस्वाभाविक मृत्यु पीछे से काट खाने को न दौड़े। एक ऐसी गृहस्थी की चाह, जहां पत्नी पति पर श्रद्धा करती है और पति पत्नी को प्यार। एक ऐसे परिवेश की कामना, जहां संतान का जन्म अभिशाप न बनकर उत्सव एवं आनन्द से भरा-पूरा हो; जहां बेटे-बेटी को ईश्वर का आशी-र्वाद मानकर ग्रहण किया जाता हो। इसीलिए तो शो-केश में रखे मोजे देखकर उसके दिल ने एक ठण्डी सांस ली थी, कीमती कार के मालिकों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश की थी और रूप एवं यौवन द्वारा दौलतमंद पुरुषों को प्रलोभित करना चाहा था। वह दिन पर दिन अपने से ही घृणा करना सीखती रही। धोबी का लड़का जॉर्जी या मछली के दूकानदार का लड़का मार्टिन, वे सब उसीके समगोत्री थे। उनसे भला वह कब तक पीछा छुड़ाती? इसीलिए तो लन्दन की सड़कों पर कपोल-कल्पित कहानियों के राजकुमार की तलाश में वह भटकती रहती और मन ही मन कल्पित पैलेस के स्वप्न देखती रहती।

मैंने कहा, 'तुमने भाई-बहनों के लिए जो रुपये भेजे, वह भी एक तरह से तुम्हारी स्वार्थपरता ही थी।'

मेम भाभी ने कहना शुरू किया, 'अरे, मैंने सिर्फ थोड़े-से रुपये ही उन्हें भेजे हैं, भला? अलक मुझे जितने भी रुपये देता था, उनमें से मैं

अपने लिए कुछ भी बचाकर नहीं रखती थी। अलक मुझे कुछ नहीं कहता था। वह मुझे इतना चाहता था कि क्या बताऊं? पर किसे पता था कि अचानक एक दिन ऐसी दुर्घटना घट जाएगी?'

क्षण-भर रुककर वह फिर बोली, 'और जब मैंने होटल के बार में पहुंचकर अपने शरीर का कारोबार शुरू किया, तब तो रुपयों का अम्बार लग गया था। 'नेवी' एवं 'आर्मी' के लोगों ने मुझे रुपयों में डुबो दिया था। पर उन रुपयों में से अपने लिए कुछ खर्च करने की सोचते ही मेरे दिल पर छुरियां-सी चलतीं।'

मैंने कहा, 'लेकिन तुमने यह सब किसके लिए किया मेम भाभी, सच-सच बताना; नहीं तो तुम्हें पाप लगेगा?'

मेम भाभी चकित-सी रह गई। बोलीं, 'तो क्या इसे भी तुम मेरी स्वार्थपरता ही कहना चाहते हो?'

मैंने कहा, 'अवश्य! तुमने अपने भाई-बहनों, पास-पड़ोसियों, बन्धु-बान्धवों को यह बताना चाहा है कि तुम बहुत पैसेवाली हो। तुम्हारे पास अपार धन है। तुम रानी हो, नहीं रानीसाहिबा हो।'

मेरी बात सुनकर मेम भाभी गुमसुम होकर बैठ गई। बहुत देर तक वह कुछ भी नहीं बोल सकी। बाहर से सन-सेट पॉयंट से सूर्य की रोशनी सीधी आकर हवामहल पर पड़ रही थी।

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे सारे गुण भी अब तो अवगुण बन गए-से दीखते हैं। मैंने रातों जग-जगकर अपने शरीर पर कितना अत्याचार किया है! मेरे पास जो भी आया, मैंने किसीको निराश नहीं लौटाया। आधी रात के समय भी अगर युसुफ ने आकर मुझसे कहा कि कोई महाराजा आए हैं तो मैं उसी वक्त हंसमुख चेहरा लिए उनकी कार में जा बैठी हूं। मैं सोचती कि यह मैं अपने स्वार्थ के लिए तो कर नहीं रही हूं, बल्कि भाई-बहनों की सुख-सुविधा के लिए ही कर रही हूं; अतः इसमें कोई हर्ज नहीं है।'

मैंने कहा, 'यह मुझे पता है, मेम भाभी।'

मेम भाभी ने कहा, 'तू भला क्या जानता है ? और जितना जानता है, उससे अधिक जानना तेरे लिए संभव भी कैसे होता ?'

मैंने कहा, 'फिर भी मुझे जो कुछ मालूम है, वह शायद तुम्हें भी पता नहीं। जैसे, मैं कितने ही दिनों तक तुम्हारे मकान के सामने चक्कर लगाता रहा हूं। तुम्हारे फ्लैट की ईंटों में एक पीपल का पौधा उग आया है। एक बार फ्लैट की छत पर एक कौआ उड़कर आ बैठा था। तुम्हारे मकान की रेलिंग पर भीगा पेटीकोट सूख रहा था। मैं ऑफिस की छुट्टी लेकर सिर्फ उस तरफ मुंह वाए खड़ा एकटक देखता रहता।'

मेम भाभी ने कहा, 'मुझे क्यों नहीं बताया ?'

मैंने कहा, 'तब क्या तुम्हारा स्वभाव ऐसा था, मेम भाभी ? एक दिन तो तुम्हारे यूसुफ ने मुझे रास्ते में पकड़ लिया और 'नई चीज है, विलायत से ताजा आई है' कहते-कहते मेरे पीछे चलने लगा।'

मेम भाभी को बहुत हंसी आई। बोली, 'फिर ?'

'मुझे शक हुआ कि वह शायद तुम्हारे बारे में ही कह रहा है, तुम्हारी ही खूबसूरती का वर्णन कर रहा है; यानी वह तुम्हारा दलाल है। तुम्हें देखने का लालच हो आया मन में। उन दिनों पता नहीं क्यों तुम्हें देखने की इतनी लालसा रहती थी मेरे मन में कि क्या बताऊं !'

मेम भाभी को मेरी बातों पर शायद यकीन नहीं आया। बोली, 'सच, मुझे देखने को तुम्हें इतनी इच्छा रहती थी ? पर अगर तुम्हें सचमुच इतनी इच्छा होती थी, तो मेरे पास तुम आ भी तो सकते थे। कौन रोक रहा था तुम्हें ?'

मैंने कहा, 'यह समझना तुम्हारे वश की बात नहीं है, मेम भाभी। तुम मध्यवर्गीय परिवार में एक लजीला लड़का बनकर तो जन्मी नहीं हो ! मुझे अपने मन की बात कह पाने के लिए कोई नहीं मिलता। अपनी बात मैं पिताजी से भी नहीं कह सकता। उन दिनों मेरे खास यार-दोस्त भी नहीं थे। जिस वक्त अलकेश भैया तुम्हें ब्याह कर लाए, उस वक्त सभी-ने तुमपर कितने व्यंग्य कसे थे; वे शायद आज भी तुम्हारे कानों तक

नही पहुंचे। वे सब शूल की तरह मेरे दिल में चुभे हुए हैं। लड़कपन की उस उम्र में मैंने जी-जान से किसीको चाहा है तो वह सिर्फ तुम्हें।'

लगा कि मेम भाभी को मानो यह नई बात मालूम हुई हो। अचरज भी उसे कम नही हुआ। बोली, 'सच! यह बात थी! मुझसे तो कभी नही कहा तूने?'

मैंने कहा, 'किसीसे प्रेम करना क्या ज़ुबान से कहने की चीज़ है?'

फिर मैंने पूछा, 'मैं तुम्हारे पैरों मे महावर रचाया करता था, याद है तुम्हें?'

मेम भाभी को कुछ भी याद नही था। बोली, 'कब?'

मैंने कहा, 'हां, यह बात तो तुम्हारे याद रहने लायक है नही, मेम भाभी! कितनी ही देर तक तुम्हारे युगल चरणों को मैं गोद मे रखे बैठा रहता था। बस, मैं हरदम सोचता रहता था कि यह महावर लगाना मेरे जीवन में कभी खत्म न हो।'

मैंने फिर कहा, 'मेम भाभी, मुझे वे सारी बातें अच्छी तरह याद हैं। मैं कुछ भी नही भूला हूं।'

मेम भाभी ने कहा, 'मुझे क्योंकर याद रहती, तू ही बता! इण्डिया में तो उस वक्त सभी से यही कहती थी कि लन्दन में हमलोग पैसेवाले हैं। हमारे यहां कार है। और लन्दन भेजे गए पत्रों मे मैं यही लिखती कि यहा मैं बहुत ही सुख में हूं। फिर ऐसे मे तेरी बात सोचने की भला मुझे फुरसत ही कैसे होती?'

'जिस दिन तुम घर छोड़कर चली गईं, तो किसीसे कहकर भी नही गईं! उस दिन मैं क्या कम रोया था?'

मेम भाभी ने पूछा, 'रोया था? पर उस समय तो तू बहुत छोटा था, रे!'

मैंने कहा, 'छोटा था तो क्या हुआ? मैं तुम्हे अपनी मा से भी अधिक प्यार करता था। मैं सोचता कि जिस तरह मेरी मा मुझे लाड़-प्यार करती है, अगर उसी तरह तुम भी लाड़ से मेरे गाल चूमती तो मुझे कितना

अच्छा लगता !'

मेम भाभी ने एक सिगरेट सुलगाई। सोने की पाइप में लगी सफेद सिगरेट के मुंह पर आग चमक उठी। वह आग मेम भाभी के कानों के हीरे के झुमकों और नाक की हीरे की कील में भी जगमगा उठी। दूर किसी गिरजाघर की घड़ी में टन्-टन् करके कई बार घण्टे बज उठे। सामने रखे पेग में से मेम भाभी ने एक घूंट लिया।

सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए वह बोली, 'तूने तो मुझे अचरज में डाल दिया। तू मुझे इतना चाहता था ? पर उस वक्त तेरी उम्र ही क्या थी ?'

मैंने कहा, 'क्या तुम सोचती हो कि छोटे बच्चे कुछ समझते ही नहीं हैं ? तुम समझती हो कि अलकेश भैया जब तुम्हारा चुम्बन लेते थे तो मैं कुछ समझता ही नहीं था ?'

मेम भाभी ने कहा, 'ताज्जुब है !'

मैंने कहा, 'तुम भले ही चकित हो मेम भाभी, पर मैं चकित नहीं होता। मैं सिर्फ उस दिन चकित हुआ था, जब अलकेश भैया के मर जाने पर तुम विलायत नहीं लौट गई थीं और कलकत्ते में उसी मकान से चिपकी पड़ी रहीं। विधवा का परिवेश ओढ़ा और एकादशी एवं पूर्णिमा के व्रत रखने लगीं। कोरे सफेद वस्त्र पहने, मांग का सिंदूर पोंछ डाला और बाल छोटे-छोटे छंटवा डाले।'

मेम भाभी ने पेग में से फिर एक घूंट लिया और बोली, 'जानते हो, उस वक्त मेरे मन में बहुत अहंकार था।'

मुझे बहुत अचरज हुआ। मैंने पूछा, 'अहंकार था !'

मेम भाभी ने कहा, 'हां, और अब भी है। अभी भी किसीसे हार मान लेने में मेरा सिर फट जाता है। इसीलिए तो लन्दन में डोरा से सिर्फ शर्तें लगाया करती थी। पास-पड़ोसियों के सामने अपनी गरीबी की हालत प्रकट हो जाने से उस लज्जा को मैं बरदाश्त नहीं कर पाती थी। यही कारण है कि मैं अपनी मर्जी से इण्डिया चली आई।'

मैंने पूछा, 'पर अलकेश भैया को तुम कैसे बरदास्त कर सकीं, मेम

भाभी ? जब कि अलकेश भैया ने तुम्हें धोखा दिया था ।'

मेम भाभी ने कहा, 'नहीं रे, अलक ने मुझे धोखा नहीं दिया, बल्कि मैंने ही अलक को धोखा दिया था ।'

मुझे आश्चर्य हुआ । मैंने पूछा, 'यह क्या कहती हो तुम ? अलकेश भैया ने ही तो अपना परिचय एक बहुत बड़े आदमी के रूप में दिया था । उसने तुमसे कहा था कि उसके बाप की बहुत बड़ी जमींदारी चलती है, और यह भी कि उसके पिता कॉटन-किंग हैं ।'

मेम भाभी ने कहा, 'नहीं ।'

मैंने पूछा, 'तो फिर ?'

मेम भाभी ने कहा, 'अलक ने मुझसे अपनी असली हालत ही बताई थी कि वह नितान्त मध्यवर्गीय परिवार का लड़का है और वकालत पास करके अगर अच्छी नौकरी नहीं मिली तो उसे बहुत तकलीफ होगी। उसने यह भी कहा था कि मेम ब्याहकर ले जाने से उसके मां-बाप के मन में बहुत तकलीफ होगी । अलक बहुत सीधा लड़का था। मुझसे उसने कोई बात छिपाकर नहीं रखी थी ।'

मैंने पूछा, 'यह क्या कह रही हो, मेम भाभी ? क्या सचमुच ही अलकेश भैया ने तुम्हें नहीं ठगा था ?'

मेम भाभी ने सिगरेट का एक कश और लगाते हुए कहा, 'हां, सचमुच उसने मुझे नहीं ठगा, दरअसल मैंने ही उसे ठग लिया था । सच्ची बात तो यह है कि मैं खुद सभीके सामने उसको खूब पैसेवाले के रूप में प्रमाणित करना चाहती थी । मैंने ही सबसे कहा था कि उसके पिता कॉटन-किंग हैं और वह कॉटन-प्रिंस है । मैंने ही सबसे कहा था कि मैं इण्डिया में जाकर रानी बनूंगी ।'

मेम भाभी की बातें मुझे दुनिया का सातवां आश्चर्य-सी लग रही थीं।

मैंने पूछा, 'पर यह सब क्यों किया तुमने ?'

मेम भाभी ने कहा, 'बताया न कि मैं सभीसे घृणा करती थी। मेरे चारों ओर जो भी दीखते रहते उन सबसे मुझे बेहद घृणा थी । अपनी मां,

और भाई-बहन सभीसे।'

ाई-बहनों से भी ? जिनको तुम इतने रुपये भजती रही हो अब

मम भाभी ने कहा, 'हां। उनका कसूर था कि वे गरीब क्यों हुए ? पास रुपये क्यों नहीं हैं ? वे किसलिए पढ़ना-लिखना नहीं सीख ी और वस्ती में इतने गन्दे होकर क्यों पड़े हैं ? और मैं...? अपने-सि भी मैंने कम घृणा नहीं की है।'

मैं चुपचाप बैठा रहा। आबू पहाड़ की ठंडी हवा शरीर को छू रही ी। फतेहगढ़ के बड़े महाराज के प्रासाद-प्रांगण में बैठकर सुनी हुई वे ातें मानो आज भी मेरे कान सुन रहे हैं। जिस मनुष्य को बचपन ही से सबसे घृणा मिली हो और जिसने स्वयं भी सबसे घृणा की हो, उसका ऐसा घृणित जीवन-यापन करना अब मेरे लिए कोई अचरज की बात नहीं रही। उस दिन मानो पहली बार मेम भाभी को मन से क्षमा कर पाया। मेम भाभी जल्दी-जल्दी पेग से घूंट भर रही थी और ऐसा लगता था, मानो अपनी समस्त पीड़ा और यंत्रणा की आग को जला-भुनाकर राख कर देना चाहती थी।

मेम भाभी ने आगे कहना शुरू किया, 'मेरे मन की जब ऐसी हालत थी, तभी मेरे जीवन में अलक आया। इटालियन नहीं, इण्डियन ! अलक ने मुझसे कहा था, 'नोरा, तुम्हें मुझसे शादी करके बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।' मैंने कहा था, 'अलक, अगर तुमसे शादी नहीं की तो मुझे और अधिक मुसीबतें उठानी पड़ेंगी। मैं लन्दन छोड़कर बहुत दूर चली जाना चाहती हूं। मुझे तुम खाना मत देना, पहनने को मत देना, लेकिन सिर्फ अपने साथ ले चलो।'

'अलक ने कहा था, 'पिताजी के मन में बहुत दुःख होगा। मुझपर उनकी बहुत बड़ी-बड़ी उम्मीदें बंधी हैं।'

'मैंने कहा था, 'तुम मुझे जो कुछ करने को कहोगे, मैं वही करूंगी। मैं हिन्दू घराने की बहू बनकर रह लूंगी। जिस तरह तुम लोगों के घर

बहुएं रहती हैं, मैं भी वैसे ही रहूंगी। लेकिन यहां मैं अब अधिक नहीं रह पाऊंगी। किसी तरह मुझे बचा लो तुम।'

'पार्क की बेंच पर बैठकर मैंने अलक को बहुत तरह से समझाया था। मेरे घर का वातावरण मुझे ज़हर-सा लगता। घर की बात याद आते ही मन-प्राण एकदम विषैले-से हो उठते। भाई चोर बन गए थे। बहनें बड़ी होकर मुझ जैसी बन जाएंगी, सोचकर रातों को नींद नहीं आती थी। इन सबके बावजूद, मैं वहीं सड़कों पर मारी-मारी फिरती और शो-केस की चीजें देखती रहती एवं रात को सोने से पहले इटालियन युवक का सपना देखती। यही मेरी रोजमर्रे की रूटीन थी।'

मैं बहुत देर से मेम भाभी की बातें सुन रहा था। मैंने अब मुंह खोला और कहा, 'तुम तो सुन्दर लड़की थीं! तुम्हें शादी की इतनी क्या फिक्र थी?'

मेम भाभी ने कहा, 'हमारे देश में गरीब का कोई मोल नहीं, चाहे वह कितना ही खूबसूरत क्यों न हो। मैंने अलक से कहा था कि मैं धनी आदमी के रूप में तुम्हारा प्रचार करूंगी, इससे तुम इन्कार मत करना।'

अलक ने कहा था, 'पर मैं सचमुच पैसेवाला नहीं हूं। मेरे पास एक भी मोटरकार नहीं है। रहने लायक सिर्फ एक मकान है, वह भी एक गली में।'

मेम भाभी ने कहा था, 'ठीक है, गली में है तो रहने दो; पर मेरी बात तुम टाल नहीं सकते।'

'और तभी से अलक प्रिंस बन गया, जमींदार का बेटा। और उसके पिता बन गए कॉटन-किंग। अलक की चार-चार गाड़ियां हो गईं। इण्डिया में बहुत बड़ा पैलेस बन गया। मैंने अलक के साथ नाटक, सिनेमा और डांसों में जाना शुरू कर दिया। मेरे शरीर पर सिल्क का गाऊन सुशोभित रहने लगा। मैं इण्डिया की रानी यानी कि रानीसाहिबा बन गई। सभी मुझसे ईर्ष्या करने लगे। मेरे मां-पिताजी, पास-पड़ोसियों को, उनसे भी

बढ़कर डोरा को बड़ी ईर्ष्या होती थी। ओह, उस समय मुझे कितना आनन्द आता था, तुम्हें क्या बताऊं ?'

मैंने कहा, 'यह सब मुझे मालूम है।'

मेम भाभी ने पेग को मेज़ पर रखा और बोली, 'तू सब कुछ जानता है ? लेकिन तुझे कैसे मालूम हुआ ?'

मैंने कहा, 'ये लो तुम्हारे पत्र।'

'ये पत्र तुम्हें कहां से मिले ?'

मैंने कहा, 'मैंने सारे पत्र पढ़ लिए हैं। इतने दिनों तक तुमने मुझसे झूठ कहा, मुझे धोखा दिया; यह सब मैंने ये पत्र पढ़कर ही जाना है। मुझे मन में कितना दुःख हुआ है मेम भाभी, यह तुम नहीं समझोगी। ये पत्र लेकर मैं दिन-दिन-भर घूमता रहता था। जहां भी तुम्हारा नाम लिखा मिलता, उस जगह को बार-बार चूमता रहता। बहुत बार इच्छा हुई कि तुमसे मुलाकात करूं और तुम्हें ये पत्र देकर कैफियत मांगू कि क्यों तुमने इतने दिनों तक इस तरह मुझसे झूठी बातें कहीं ?'

मेम भाभी क्षण-भर को चुप रह गई।

'मैंने क्या सिर्फ तुमसे ही झूठ कहा है ? समूचे विन्सेंट स्क्वायर के लोगों को मैंने धोखा दिया है। सभी लोगों को यही बताया है कि इण्डिया आकर मैं रानी बन गई हूं। मेरे पास दस आयाएं चालीस खानसामे और एक बहुत विराट पैलेस है। मैं ऐसी स्वार्थी, झूठी एवं पाखण्डी हूं कि क्या बताऊं ? अंत में जब अलक मर गया तो मैं उसके लिए भी कभी नहीं रोई। रोई तो सिर्फ इसलिए कि मेरा छल-प्रपंच मेरे देश के लोगों के सामने प्रकट हो जाएगा। यही कारण है कि मैं वापस विलायत भी नहीं लौट सकी और अपना बड़प्पन दिखाने के लिए हजारों रुपये अपने देश भेजती रही।'

मैंने कहा, 'यह भी मुझे मालूम है।'

मेम भाभी ने पूछा, 'तूने कैसे जाना ?'

मैंने कहा, 'तुम्हारे भाई से मेरी भेंट हुई थी।'

'ओह, यह क्या कहते हो ?' मेम भाभी ह्विस्की का घूंट भरना चाहकर भी मानो नहीं भर सकी।

उस समय फिर गिर्जाघर की घड़ी ने टन-टन कर बहुत-से घण्टे बजाए।

ये सारी बातें आज भी मुझे ज्यों की त्यों याद हैं।

यूसुफ लम्बे-लम्बे डग भरता मेम भाभी के कमरे के सामने ले गया, पर वहां पहुंचकर देखा कि मेम भाभी के कमरे में ताला बन्द था। यूसुफ तो शायद चकित हुआ था, पर मुझे किसी तरह का अचरज नहीं हुआ था। जिसको विविध उपायों से रुपये बटोरने का रास्ता चुनना पड़ता है, उसके लिए कोई भी वक्त निश्चित नहीं रहता; यह मैं जानता था। मैं जानता था कि मेम भाभी मजबूर होकर धन-ऐश्वर्य निगल रही है। पत्रों में इसका प्रमाण भी मिल गया था मुझे। मैं जानता था कि रुपयों की खुद उसको कोई खास आवश्यकता नहीं थी, पर उसके देश के भाई-बहन मुंह बाए उसके रुपयों की उम्मीद लगाए बैठे थे। उनकी दीदी का विवाह इण्डियन प्रिंस के साथ हुआ था, अतः रुपयों की मांग करना उनका अधिकार था।

उनकी दीदी ने भी यहां से उनको पत्र लिखा था, 'मैं और रुपये भेज रही हूं। तुम लोग विन्सेंट स्क्वायर छोड़कर लिस्टर स्क्वायर में कोई मकान किराये पर ले लेना। इन रुपयों से हेनरी के लिए गैबर्डिन का सूट सिलवा देना। मार्टिन के लिए ट्राइ साइकिल खरीदना, विली के लिए स्कूल की फीस जमा करना और मिनी की फ्रॉक-सूट बनवा देना। मां के लिए दवाई और नेकलेस खरीद देना। लेनी के लिए पैराम्बुलेटर और केटी के लिए गुड़िया भी लेना।' आदि-आदि।

एक सुबह जब नींद खुली तो विन्सेंट स्क्वायर के लोगों को पता

चला कि शरावी वैण्ड-मास्टर की वड़ी लड़की नोरा स्मिथ एक इण्डियन प्रिंस के साथ एन्गेज़्ड हो चुकी है।

बूढ़ी धोविन मार्गरेट एक दिन आकर कहने लगी, 'अरी, जो कुछ सुन रही हूं, क्या वह सव सच है ? भगवान करे, तुम्हारी लड़की जुग-जुग जिए।'

बूढ़ी मछुआरिन मिसेज़ हडसन ने आकर कहा, 'तो आखिर तुम लोगों की भी दशा पलटी ?'

मोदी फिर से उधार देने लगा। मांसवाला अव भेंट होने पर 'गुड मॉर्निंग मिसेज़' कहता। भाई-वहनों को वगल के घरों से पार्टियों में शरीक होने के लिए फिर से निमंत्रण आने लगे।

पर सभी एक ही वात पूछते कि उसने प्रिंस को आखिर फांसा कैसे ?

नोरा के पास रूप है। गालों पर रंग चढ़ा हुआ है। शरीर में मांस है। कमर में लचक है। माथे पर सुनहरे वाल हैं। उसमें पुरुषों को रिझाने के सभी गुण हैं। पर फिर भी उसने जिसको फांसा है, वह है तो आखिर प्रिंस ही न, और वहुत रुपयों का मालिक भी !

पर असली वात डोरा के सिवाय और किसीको मालूम नहीं थी।

वे दोनों रास्ते में शो-केस में लगे कपड़े, मोज़े, गाऊन वगैरह देखते हुए साथ-साथ चल रही थीं। अचानक एक वहुत वड़ी कार आकर एक वहुत वड़ी दूकान के सामने खड़ी हुई। उसमें एक इटालियन वैठा था। और अद्‌भुत खूवसूरत जवान चेहरा था उसका ! ऊपरी होंठ के अगल-वगल पतली-सी सुन्दर-सी मूंछ थी। इटालियन कार का दरवाजा खोलकर उतरा।

डोरा ने कहा, 'नोरा, तू उस व्यक्ति का अचानक एक चुम्वन लेकर उसे चौंका सकती है ?'

जान न पहचान, नाम-पता कुछ मालूम नहीं, यह कैसा मज़ाक है ? पर उससे क्या फर्क पड़ता था। उन दिनों की तो वात ही निराली थी। उन दिनों नोरा इटालियनों के स्वप्न देखा करती थी। उस समय स्वयं

से और अन्यान्य सभी लोगों से वह घृणा करती। उसे लगता कि अपने अगल-बगल वह जो कुछ देख रही है, सब पाप है। भाई-बहन पैसों के कारण पढ़ाई-लिखाई नहीं कर पा रहे थे। बैण्ड-मास्टर शराब पीकर घर लौटता और शराब पीने को नहीं मिलती तो महाभारत मचा देता। वह यही सब सोचती कि इन सब कलंकों एवं घिनौने जीवन से उसे किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है?

नोरा ने कहा, 'हां, चुम्बन ले सकती हूं। कितने की शर्त रही?'

डोरा ने कहा, 'एक शिलिंग की।'

खैर, एक शिलिंग ही सही। पर इस बीच इटालियन दूकान में घुस गया था। अब दूकान से बाहर आने पर ही उसका चुम्बन लेना सम्भव था। नोरा और डोरा दोनों दूकान के बड़े गेट के पीछे छुप गई। कभी-कभी भीतर झांककर देख लेतीं। अब शायद आ रहा है! अगर वह दूकान से निकल, फुटपाथ पारकर फिर कार में बैठ गया तो, कुछ नहीं हो सकेगा।

चुपचाप खड़े-खड़े उन्हें लगा कि इस बार इटालियन बाहर आ रहा है। नोरा रेडी हो गई। वह जैसे ही दूकान से बाहर निकला कि नोरा ने उछलकर उसका चुम्बन ले लिया।

वह आदमी कम चकित नहीं हुआ था।

पर उससे भी अधिक विस्मय नोरा को हुआ। क्योंकि वह इटालियन नहीं, बल्कि एक इण्डियन था। अलक मित्र! पिता के इकट्ठे किए रुपयों को खर्च करके वह वकालत पढ़ने विलायत आया था।

खैर, इण्डियन ही सही। गरीब का लड़का है तो क्या हुआ? उसी दिन से उन दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई।

दोनों ने रेस्तरां में बैठकर कॉफी पी।

नोरा ने कहा, 'आज से तुम प्रिंस और मैं प्रिंसेस!' अलक लजीला लड़का था। बोला, 'पर मैं तो गरीब लड़का हूं। पिता के पास मामूली-सी जायदाद है। किसी तरह विलायत चला आया हूं।'

नोरा ने कहा, 'नहीं, तुम यह बात किसीसे नहीं कहोगे। मैं सभी-को तुम्हारा दूसरा ही परिचय दूंगी।'

और नोरा जहां भी जाती, उसका परिचय करा देती, 'कॉटन प्रिंस ऑफ इण्डिया।'

मेम भाभी ने कहा था कि, 'तुम लोगों में एक कहावत है न कि मन की चाह कभी न कभी पूरी होती ही है। सो एक दिन मैंने सुल्तानगंज के छोटे प्रिंस को भी पा लिया। सचमुच का प्रिंस! चेहरे पर जैसी प्रिंसियन कट थी, वैसे ही उसके पास रुपया-धन-दौलत भी अपार था। तुमने उसे देखा नहीं है?'

मैंने कहा, 'देख चुका हूं!'

मुझे याद है कि मेम भाभी के फी स्कूल स्ट्रीट वाले फ्लैट के गेट पर ताला देखकर मैं धीरे-धीरे वापस आ रहा था। शाम घिर आई थी। पिंजरे के कनेर पक्षी चहचहा रहे थे। सहन में बतखों का झुण्ड 'पीक-पीक' करके पुकार रहा था।

यूसुफ ने कहा, 'आप थोड़ी देर ठहर जाइए, बाबूजी। मेम दीदी बस अभी आती हैं।'

लेकिन काफी देर तक खड़े रहने पर भी जब मेम भाभी नहीं आईं तो मैं चल पड़ा। हठात् बाहर मोटर की आवाज सुनाई दी। मैं ओट में छुपने ही जा रहा था कि सामने मेम भाभी आ खड़ी हुईं। मेम भाभी की पोशाक देखकर मैं चौंक उठा। उसने पुरुषों की तरह टाइट ट्राउज़र और सिल्क की ढीली शर्ट पहन रखी थी। गले के कॉलरों को एकदम सीधा खड़ा कर रखा था। बाल पुरुषों की तरह छोटे-छोटे छंटवा रखे थे।

मेम भाभी ने बताया कि छोटे कुमार साहब से बात यह हुई थी कि वे मुझे अपने घर ले जाएंगे। पर उन्होंने मुझे अपने बागवाले मकान में ले जाकर रखा। सारी रात उनकी मोटर दौड़ती रही। कलकत्ता पार-कर जैशोर रोड से कार सीधी चलती रही। आसमान में चांद निकल आया था। मेरा शरीर अलसाता जा रहा था। छोटे कुमार साहब ने

कार चलाते-चलाते हठात् एक पेड़ के नीचे आकर उसे रोक दिया। मेरे सामने सिगरेट बढाते हुए बोले, 'लो नोरा, सिगरेट पियो।'

मैंने कहा था कि मेरा सिगरेट से पेट नही भरेगा।

कुमार साहब ने पूछा, 'ज़रा मैं भी तो सुनूं भला, किस चीज़ से तुम्हारा पेट भरेगा?'

मैंने कहा, 'रुपयों से।'

'कितने रुपयों से?'

मैंने कहा, 'महीने में दस हज़ार रुपये। कुल मिलाकर।'

कुमार साहब सहमत हो गए। कुमार की जमींदारी की आय सात लाख रुपये थी, जिसमें उनका हाथ खर्च तीन लाख रुपया सालाना था। बाकी रुपये किस सुराख से होकर कैसे निकल जाते, यह पता ही नही चलता। आज पार्टी है तो कल डांस और परसों पिकनिक। अब मुझे होटल के बार में नाचना नही पड़ता। उपवास भी नही करना पड़ता। न मुझे जूते, गहने एवं गाऊन किराए पर ले-लेकर रुपये इकट्ठे करने पड़ते हैं। यूसुफ और अब्दुल मियां के अत्याचार भी सहन नही करने पड़ते। मेरे शरीर में मांस भरने लगा। पीठ पर परत जमने लगी। जब भी छोटे कुमार साहब के साथ मैं बाहर निकलती, होटलों में लंच लेती या पार्टियों में डिनर लेती तो सभी गौर से मेरी ओर देखने लगते। और मैं अपने लन्दन के दिनों के बारे में सोचती, केटी, मार्गी, मां एवं भाई-बहिनों के बारे में सोचती; डोरा एवं मोहल्ले के लोगों के बारे में सोचती। सभीको बुलाकर अपना यह रूप दिखाने की इच्छा होती कि देखो, अब मैं सचमुच की रानी बन गई हूं। सचमुच की पटरानी बन गई हूं। प्रिंसेस बन गई हूं।…और वुड स्ट्रीट में छोटे कुमार साहब के आते ही रुपये और शराब का फ़ुहारा-सा खुल जाता।

मुझे याद है कि मेम भाभी को देखकर मैं एक ओट में छिप गया था। वह जल्दी से सीढ़ियों से होती हुई ऊपर चली गई थी। सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब गाड़ी में बैठे थे। क्या खूबसूरत चेहरा था उनका ! सचमुच ही मानो इटालियन प्रिंस हों ! कार एक मधुर-सी चीख मारकर चली गई। मैं यूसुफ के आह्वान की उपेक्षा करके चला आया। उस दिन फ्री स्कूल स्ट्रीट में मैंने मेम भाभी से मुलाकात क्यों नहीं की ? गुस्से से या ईर्ष्या से ? अगर गुस्से से तो आखिर क्यों, यह भी पता नहीं था। मेम भाभी ने मुझसे झूठ कहा था, क्या इसलिए उसपर नाराज़ होने का मुझे अधिकार था ? मेम भाभी ने मुझसे झूठ कहा, इसमें विस्मित होने की क्या बात है ? और रही ईर्ष्या की बात ! सो सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब से मैं ईर्ष्या करूं, इतनी भला मेरी सामर्थ्य कहां ? एक बार तो मैंने सोचा, सारे पत्र फाड़कर फेंक दूं। हर किसी दिन मेम भाभी ने मेरा लाड़ किया था और स्नेह से चॉकलेट लाकर दिया था, यह बात मैं कैसे भूल जाता ?

तब तक मैंने अपने पर काबू पा लिया था।

धीरे-धीरे मैं अपने घर की ओर अकेला लौट रहा था कि अचानक एक नज़ारा देखकर मैं चकित रह गया। मिलिट्री की पोशाक में पता नहीं कौन एक व्यक्ति हमारे बंगाली मुहल्ले में चहलकदमी कर रहा था। आमना-सामना होते ही उसने मुझसे पूछा, 'बाबूजी, प्रिंसेस नोरा मित्र किस घर में रहती हैं, बता सकते हैं आप ?'

मैंने पूछा, 'तुम कौन हो ? कहां से आए हो ?'

उसने कहा, 'प्रिंसेस मेरी बड़ी बहन है। मैं युद्ध में डॉक्टर बनकर आया हूं। यहां के एक प्रिंस के साथ मेरी दीदी की शादी हुई है।'

मैंने पूछा, 'प्रिंस के साथ ?'

एक बार तो मैं कहने जा रहा था कि यह सब झूठी बात है। सुल्तानगंज की बात भी बताना चाहता था। पर मुझे तीव्र उत्सुकता ने आ घेरा। उस व्यक्ति को मैंने सिर से पैर तक गौर से देखा। उसका

नाक-नक्श बिल्कुल मेम भाभी की तरह था। अगर वह लड़की होता तब तो शायद उसे मेम भाभी समझने में भूल न होती। वैसा ही मधुर और वैसा ही नाजुक! उम्र में भी वह अधिक नहीं था।

मैंने कहा, 'नोरा मित्र मेरी भाभी लगती हैं। उनकी शादी बैरिस्टर अलकेश मित्र के साथ हुई थी। मैं उन्हें मेम भाभी के नाम से पुकारता था। वो देखो, वह मकान है उसका। लेकिन...'

मैंने फिर कहा, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

उसने कहा, 'विलियम कार्लाइल स्मिथ। लेकिन सभी मुझे विली कहते हैं।'

मैं मेम भाभी के भाई को लेकर चाय की एक दूकान पर जाकर बैठ गया।

मुझे याद है कि वहां बैठकर मैंने मेम भाभी के घर की बहुत-सी बातें सुनी थीं। जैसे उनके कितने भाई हैं, कितनी बहनें हैं? मां अन्धी हो गई है। बाप खून के जुर्म में जेल चला गया है। उन्होंने विन्सेंट स्क्वायर वाला मकान छोड़कर लिस्टर स्क्वायर में बहुत बड़ा मकान खरीद लिया है। और यह सब मेम भाभी के पैसों से हुआ है। दीदी के पास बहुत पैसा है, अतः वह हर महीने बहुत रुपये घर भेजा करती है। उन्हीं रुपयों से बहन-भाई लायक बन पाए हैं। लिखना-पढ़ना सीख लिया है। मार्गी की एक कर्नल के साथ शादी हुई है। केटी की इंगेजमेंट एक डॉक्टर के साथ हुई है। मिनी वायलिन बजाने में खासी निपुण हो गई है। वायलिन बजाने में उसे सर्टीफिकेट भी मिला है। सभी अगर किसी योग्य बने हैं तो सिर्फ दीदी के रुपयों से। क्योंकि दीदी के पास बहुत रुपये हैं न!

मेम भाभी के भाई ने कहा था, 'उसके पास अगर इतने रुपये नहीं होते तो वह हर महीने इतने रुपये क्योंकर भेजती? हमारे पड़ोस में जो लोग हमें देखकर दूर से कतराया करते थे, वे अब हमारी बहुत खातिर करते हैं। बड़ी-बड़ी फैमिली के लड़के मैंटिल्ड से शादी करना चाहते हैं।'

मैंने सोचा, तो यह बात है। दीदी ने खून का पानी बनाकर इतने

रे लड़के-लड़कियों को योग्य बनाया। खैर, एक गृहस्थी में तो सुख-
ान्ति हुई; चाहे मेम भाभी को यक्ष्मा ही क्यों न हो जाए! डॉ० बैसाख
। दवाई की खुराक कंजूसी के मारे न भी ली तो क्या हुआ, पर वह
सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब के नशे की खुराक रातों-रात अवश्य
जुटाती रहती होगी। जिसने हरदम घृणा ही करनी सीखी हो, जिसने
समूचे वातावरण, अपने सगे भाई-बहनों, मां-बाप, पास-पड़ोसियों, यहां
तक कि खुद से भी घृणा ही की हो; आज अगर वह उस घृणा के द्वारा ही
कुछ लोगों का उपकार करना चाहती है तो यही क्या कम बड़ी
बात है?

रात जब नशे में चूर होकर सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब के भुज-बन्धन में कसी रहकर वह प्रश्न करती है, 'तुम मुझसे शादी करोगे न? मुझे रानी बनाओगे न?' तब छोटे कुमार शायद यही जवाब देते होंगे, 'मान लो, तुम मेरे स्टेट की प्रिंसेस नहीं बन सकीं, पर मेरे हृदय-साम्राज्य की प्रिंसेस तो हो ही। मेरे दिल की रानी!'

मेम भाभी ने कहा होगा, 'लेकिन मैं तो तुम्हारे हरम की प्रिंसेस बनना चाहती हूं। वुड स्ट्रीट की नहीं।'

छोटे कुमार ने कहा होगा, 'पर वहां तो पहले से ही चार मौजूद हैं।'

मेम भाभी ने कहा होगा, 'होंगी, मेरे जाने से पांच हो जाएंगी ... उसमें हर्ज ही क्या है?'

छोटे कुमार साहब ने जवाब दिया होगा, 'नहीं, ऐसा नहीं ... सकता।'

'क्यों नहीं हो सकता?'

छोटे कुमार साहब ने कहा होगा, 'क्योंकि अगर तुम्हें लड़क... तो वह स्टेट की जायदाद में हिस्सा चाहेगा? तुम मेरे दिल की 'भ... बनना चाहो तो वह हिस्सा मैं तुम्हें दे सकता हूं। लेकिन स्टेट ... ज्वाइन्ट प्रॉपर्टी है, वह तुम चाहोगी तो मैं नहीं दे सकता।'

मेम भाभी ने कहा होगा, 'मेरी सुख-सुविधा से तुम्हारी स्टे...

महत्वपूर्ण है; क्या यही है तुम्हारा प्रेम ?'

छोटे कुमार साहब ने कहा होगा, 'लो, थोड़ी-सी ह्विस्की और पियो। अभी तुम्हें नशा नहीं हुआ है। नशा हो जाने पर देखना, यह सब याद नहीं रहेगा।'

मेम भाभी ने जवाब दिया होगा, 'तुम नशे के जोर से मुझे फुसला लोगे, मैं ऐसे देश की लड़की नहीं हूं। अपना देश छोड़कर इण्डिया में नशा करने नहीं आई हूं मैं। हमारे देश में नशा करने के लायक बहुत-सी चीजें हैं।'

छोटे कुमार साहब ने कहा होगा, 'तो फिर किसलिए आई हो ?'

मेम भाभी ने कहा होगा, 'मैं प्रिंसेस बनने आई हूं। रानी बनने आई हूं।'

छोटे कुमार साहब सुनकर चकित रह गए होंगे, 'रानी बनने ? तब तो तुम्हें किसी प्रिंस से ही शादी करनी चाहिए थी।'

मेम भाभी ने कहा होगा, 'मैंने प्रिंस से ही शादी की थी।'

छोटे कुमार साहब ने पूछा होगा, 'कहां के प्रिंस से ? उनकी स्टेट कहां है ?'

मेम भाभी ने बताया होगा, 'वह न तो प्रिंस था और न उसकी कोई स्टेट ही थी। लेकिन मैंने मट्ठे से ही दूध का स्वाद पा लिया था। सभी लोगों से उसका परिचय प्रिंस के रूप में ही करवाया था। लेकिन वह मेरी किस्मत में कायम रहना नहीं बदा था। पर मैं हार नहीं मान सकती थी, अतः होटल के बार में जाकर नाचना शुरू किया। अन्त में तुम सचमुच के प्रिंस आए। सुल्तानगंज के प्रिंस, छोटे कुमार साहब।'

छोटे कुमार साहब मानो चौंक उठे। उनके पास हरम में बहुत-सी औरतें हैं, बाहर भी बहुत-सी नारियों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला; लेकिन ऐसा प्रश्न किसीने उनसे आज तक नहीं किया होगा। मेम भाभी की वाहियात बातें सुनते-सुनते उनका बहुत-सा कीमती नशा बेकार चला गया होगा।

म भाभी ने कहा, 'अन्त में मेरे जीवन में असली प्रिंस भी आया, सचमुच की प्रिंसेस नहीं बन सकी।'

मेम भाभी ने फिर सिगरेट पीना शुरू कर दिया। उसने कहा, 'एक ं में मेरी फतेहगढ़ के बड़े महाराज से भेंट हुई। बड़े महाराज की ी रानियां मर चुकी थीं, सिर के बाल सफेद हो गए थे; लेकिन रसि- ता खत्म नहीं हुई थी। उनके पास अपार खजाना, बड़ी जमींदारी, हाथी- ोड़े-ऊंट, लाव-लश्कर, पियादे-पालकी हैं। यह जो कुछ यहां तुम देख रहे हो न, सब उसीका है। कलकत्ते में वह पैसे उड़ाने आया था और वहीं उससे मेरी बातचीत हो गई।'

महाराज ने कहा, 'मैं तुम्हें रानी बनाऊंगा।'

मेम भाभी ने कहा, 'कितने देंगे आप मुझे? सुल्तानगंज के छोटे कुमार मुझे दस हजार देते हैं। कुल मिलाकर!'

बड़े महाराज ने कहा, 'मेरा तो सर्वस्व तुम्हीं हो। सब कुछ तुम्हारा है। मैं भी तुम्हारा हूं।'

आधी रात को छोटे कुमार साहब के यहां से भागने का इन्तजाम हुआ। आधी रात के वक्त एक गाड़ी वुड स्ट्रीट वाले मकान के सामने आकर खड़ी हुई। दरवान, खानसामा और आसपास के सभी लोगों को मोटी रकम बतौर घूस के दी गई। वे सब जवाब-तलब के वक्त यही कहेंगे कि, 'हमें पता नहीं।' सभी नींद में सोए रहने का बहाना करेंगे। इंग्लैंड के एक गांव में एक पत्थर के मेहराब के नीचे जन्मी मेम भाभी की जन्मकथा भी एक गिरगिट के सिवाय और कोई नहीं जानता। उ दिन गिर्जा की घड़ी के घंटे की ध्वनि के साथ ईशु की कौन-सी वा उच्चरित हुई थी, यह भी किसीको मालूम नहीं है। किसे पता था उसका जीवन-चक्र किस विचित्र गति से राहें अतिक्रमण करता हुआ समुद्र तेरह नदियां पारकर किस देश में जाएगा और उसकी नियति यहां ला पटकेगी? मेम भाभी के जीवन में ईसा, बुद्ध, मुहम्मद स हो चुके हैं। घृणा और संदेह, पाप और नफरत के वातावरण से

पाने की आप्राण कोशिश में वह किन अतल गहराइयों में डूबती जा रही है, यह भी किसीको पता नहीं था। सिर्फ मुझे जितना-सा मालूम था, उतने के लिए मैं गवाह था। वह भी बहुत साधारण-सी जानकारी थी मेरी।

उस दिन चाय की दूकान के एक कोने में बैठकर जब मेम भाभी के भाई ने मेरी बातें सुनीं, तो वह स्तम्भित रह गया था। बोला था, 'तो क्या मेरी दीदी की शादी प्रिंस से नहीं हुई थी ?'

मैंने उत्तर में कहा था, 'नहीं।'

उसने पूछा था, 'तो फिर वह हर महीने हजारों पाउण्ड किस तरह भेजती है हमें ?'

मैंने कहा, 'खुद खाती नहीं, खुद की दवा-पानी नहीं करवाती एवं अपने खून का पानी बनाकर तुम लोगों को रुपये भेजती रहती है।'

उसे और भी अचरज हुआ। बोला, 'लेकिन अब तो हमें रुपये भेजने की कोई जरूरत नहीं। सभी भाइयों को नौकरी मिल चुकी है। सभी बहनों की शादी हो चुकी है। माँ मर चुकी है। पिताजी जेल में ही मर गए। मैंने तो एक बार ये बातें एक खत में उसे लिखी भी थीं। क्या वह पत्र उसे नहीं मिला ?'

उस लड़के का चेहरा लाल और पसीना-पसीना हो गया।

उसने मुझसे पूछा, 'वह इतने रुपये कहा से लाती थी, आप बता सकते हैं ?'

मैंने कहा, 'नहीं।'

उसने पूछा, 'अब कहाँ है वह, बता सकते हैं ?'

मैंने अपने मन को कठोर बनाते हुए दृढ़ मन से जवाब दिया, 'मर चुकी है।'

सुनते ही उसका चेहरा बर्फ की तरह सफेद पड़ गया। बोला, 'मर गई ? कब ?'

मैंने कहा, 'कल।'

कल का दृश्य मेरी आंखों में फिर से तैर उठा । मैं फ्री स्कूल स्ट्रीट
क खम्भे के पीछे छिपा हुआ था । मैंने देखा कि सुल्तानगंज के छोटे
ार साहव की नई कार से मेम भाभी उतरी । मैंने गौर से देखा तो
हसूस किया, मानो उसके वदन का समूचा खून किसीने निचोड़ लिया
। । लम्बा टाइट ट्राउज़र ! सिल्क की ढीली शर्ट ! गले पर खड़े किए
हुए कालर ! मेम भाभी खट-खट सीढ़ियां चढ़ने लगी । पर फिर भी ऐसा
लगता था कि उसका पेट कई दिनों का भूखा है, आंखों में कई रातों की
नींद भरी है और पैरों में वहुत लम्बा सफर तय कर लेने के वाद की
थकावट है । शायद कमरे में जाते ही वह इस कीमती पोशाक को उतार
कर मैला गाऊन पहन लेगी और ये कपड़े-लत्ते, गहने-जूते वगैरह सभी
चीज़ें वापस दूकान में लौटा आएगी । तिस पर भी उस दिन की तरह
साढ़े पांच रुपया किराया उधार ही रह जाएगा । इधर डाक्टर वैसाख
कहेगा, 'लेकिन मिस स्मिथ, इसी तरह चला तो तुम अधिक दिन तक नहीं
जिओगी !'

लेकिन यह भी एक प्रकार की मौत ही है । वल्कि इसे अकाल-मृत्यु
कहना अधिक उपयुक्त होगा ।

मेम भाभी के भाई को पता नहीं क्या हो गया कि मेरी वात सुनकर
वह क्षण-भर चुप वैठा रहा । आंखों में घनी उदासी छा गई, मानो आंखो
से अव-तव में वरसात होने वाली हो । अचानक वह उठ खड़ा हुआ औ
छाती पर दोनों हाथों से क्रॉस का निशान वनाते हुए क्षण-भर आंखें म
रहा । उसके वाद पॉकेट से छोटी वाइविल निकालकर वीच में से ही प
शुरू किया—

"But love ye your enemies and do good, and
hoping for nothing again ; and your reward sha
great and ye shall be the children of the Highest.
can forgive sins but God only..."

और आज इस बाइबिल को देखकर मुझे मेम भाभी याद आई। आज से कई साल पहले आबू पहाड़ गया था। उसके बाद कई साल बीत गए। इतने सालों में मैंने कितना-कुछ लिख डाला है। यह-वह, ढेर-सा! बचपन की स्मृति में से उभारकर सब कुछ नई दृष्टि और नये तरीके से देखा और लिखा है। नई दृष्टि से मैंने जो कुछ लिखा, उस विषय-सूची में से मैंने मेम भाभी को बिलकुल अलग कर दिया था। मैंने सोच लिया था कि मेम भाभी हमारे देश की बंगालिन लड़की थोड़े ही थी, अंग्रेज देश की एक गरीब लड़की की कहानी भला सुनेगा भी कौन? चाहे उससे मेरा कैसा भी सम्पर्क क्यों न रहा हो, पाठक-पाठिकाओं को उससे क्या मतलब है? जिस कदर पागल बनकर मैंने मेम भाभी के लिए चक्कर काटे हैं, उसे भला मेरी तरह कोई अनुभव भी क्यों करेगा? मेरी मां, पिताजी, रंगा चाची, बड़ी ताई, चाचा, ताऊ कोई भी उस विदेशी लड़की को अपना नहीं बना सका। मेम भाभी के लिए मेरे मन में जो थोड़ा-बहुत दर्द छिपा हुआ है वही सिर्फ मेरे अकेले की साधारण-सी सम्पत्ति बनकर रह गया। पर मुझे भी अपना मत इस बाइबिल को देखकर बदलना पड़ा।

कॉलिज में इन्टरमीडियेट पढ़ते समय हमलोगों को बाइबिल पढ़नी पड़ी थी। आशुतोष कॉलेज के एक प्रोफेसर बाइबिल पढ़ाया करते थे। उसे अगर अब तक पढ़ाया जाता तो शायद कुछ याद भी रहता, लेकिन आज कुछ भी याद नहीं है। और एक दिन···

एक दिन ट्रेन से मैं कहीं से आ रहा था। शायद कटनी से लौट रहा था। ट्रेन सुबह नौ बजे रवाना हुई थी। गर्मियों के दिन थे। पसीना तो नहीं आ रहा था, लेकिन समूचा बदन जल रहा था। पॉकेट में लहसुन और टोपी में नीम के पत्ते रखकर किसी तरह गर्मी सही। दरवाजे-खिड़कियां बन्द करके भी चैन नहीं, दीवार का सहारा लेकर भी आराम नहीं। एक के बाद एक स्टेशन आते और मुझे लगता मानो रास्ता और भी लम्बा हुआ जा रहा है। इसी तरह उमरिया स्टेशन भी निकल गया। और फिर बड़ा स्टेशन अनूपपुर आया। अनूपपुर जंकशन। चिरमिरी और महेन्द्रगढ़

से रेलवे लाइन आकर यहां मिलती है। विलासपुर के यात्री यहीं से गाड़ी वदलते हैं।

इतनी देर से कम्पार्टमेन्ट में मैं अकेला ही था।

और अव एक पादरी साहव चढ़े। बूढ़े आदमी थे वे। पूरा माथा गंजा। कंधे पर कैमरा झूल रहा था। कीमती ऊनी सूट पहन रखा था उन्होंने। वे कुछ नाटे-छोटे-से लग रहे थे। हंसी तो मानो उनके होंठों से फूटी पड़ती थी। मैं गर्मी के मारे साधारण धोती-कुरते में ही छटपटा रहा था, पर गरम कोट-पैंट में भी ऐसा लगा, मानो वे वहुत आराम से वैठे हों।

हंसते-हंसते वे खुद ही कहने लगे, 'मैं पेण्ड्रारोड जाऊंगा, और आप?'

'मैं विलासपुर जाऊंगा।'

इस हिसाव से वे पहले उतरेंगे।

पर उनकी कार्य-क्षमता वहुत विचित्र थी। ट्रेन में वैठते ही टाइप-राइटर द्वारा पता नहीं क्या-क्या टाइप करने लगे। फिर एक स्टेशन आते ही कंधे पर से कैमरा उतारकर वाहर की भीड़ के नजारे का एक फोटो खींच लिया। कैमरा रखकर अव एक किताव उठा ली। थोड़ी-वहुत मुझसे वातचीत भी की। मैं कहानी लिखता हूं, यह सुनकर वोले, 'All Bengalees are Poet.' सभी वंगाली कवि होते हैं। और एक भरपूर ठहाका मारकर खुलकर हंसने लगे। उस हंसी में व्यंग्य या रोष की वू नहीं थी। उन्होंने वताया कि अट्ठारह साल से वे पेण्ड्रारोड के जंगलों में रह रहे हैं। उनका समूचा जीवन छत्तीसगढ़िया लोगों के वीच में व्यतीत हुआ है। अपने देश और लोगों को छोड़कर वे किस तरह वहां रह रहे हैं, यह सोच-कर सचमुच अचरज हुआ मुझे। रही जंगल की वात, सो क्या जंगल में और लोग नहीं रहते। वहां उन्होंने मकान और स्कूल वनवा दिए हैं। उन-के लिए वहां चर्च भी है। हॉस्पिटल है। लाइब्रेरी है। और इन सवके अलावा हैं विविध प्रकार के गेम्स। खेल-खाल में ही उनका किसी तरह समय कट जाता है। इसी तरह उन्होंने अपनी पत्नी के साथ वहां अट्ठारह वर्ष विता दिए हैं। वल्कि अभी और कितने वर्ष विता देंगे, इसका कोई

ठिकाना नहीं था।

कुछ देर बाद पेण्ड्रारोड स्टेशन आ गया।

अब उनको वहां उतरने की बारी थी। हंसते-हंसते मुझसे विदा लेकर वे उतरने को हुए। पर उतरने से पहले एक विचित्र काण्ड कर बैठे। सम्भव है कि वह घटना न घटी होती तो इस कहानी का जन्म ही नहीं होता।

उन्होंने कहा, 'नमस्ते, अच्छा तो अब मैं चलूं। अगर कभी पेण्ड्रारोड आएं तो एक बार हमारे घर में भी अपनी चरण-रज पड़ने दीजिएगा। हमारी ओर से आपको चाय का निमन्त्रण रहा।'

उन्होंने बैग में से चमड़े की जिल्द-मढ़ी एक छोटी किताब निकाली और बोले, 'यह पवित्र बाइबिल आपको उपहारस्वरूप देता हूं। अगर कभी समय मिले तो जरूर पढ़िएगा।'

मैंने देखा, वह किताब आश्चर्य-जनक सुनहरे अक्षरों में छपी थी।

मैंने कहा, 'धन्यवाद।'

वे खड़े रहे। बोले, 'पढ़ते समय एक बात ध्यान में रखिएगा। केलिफोर्निया के छात्रों ने ६ महीने तक आलू न खाकर जो पैसे बचाए थे उन्हीं पैसों से यह किताब छपाई गई है। इसे उनकी धर्म-पिपासा का चिह्न समझकर अपने पास रखेंगे तो मैं भी बहुत अनुगृहीत होऊंगा। अच्छा चलूं, नमस्ते।'

ट्रेन छूट गई।

कुछ देर मन ही मन मैं हंसा। धर्म-प्रचार का यह भी एक रास्ता है। इसे अभिनव-पंथ कहना अनुपयुक्त नहीं होगा। मैं अन्यमनस्कता से बाइबिल के पन्ने उलट रहा था। जहां पहली बार नजर पड़ी, वहां से पढ़ना शुरू किया तो मैं चकित रह गया। मानो मेरी बुद्धि शून्य हो गई हो। भला इसी लाइन पर नजर पड़ना क्या जरूरी था? देखा कि लिखा हुआ था, "But love ye your enemies and do good, and lend hoping for nothing again; and your reward shall be great and ye shall be the children of the Highest...who can

से रेलवे लाइन आकर यहां मिलती है। विलासपुर के यात्री यहीं से गाड़ी बदलते हैं।

इतनी देर से कम्पार्टमेन्ट में मैं अकेला ही था।

और अब एक पादरी साहब चढ़े। बूढ़े आदमी थे वे। पूरा माथा गंजा। कंधे पर कैमरा झूल रहा था। कीमती ऊनी सूट पहन रखा था उन्होंने। वे कुछ नाटे-छोटे-से लग रहे थे। हंसी तो मानो उनके होंठों से फूटी पड़ती थी। मैं गर्मी के मारे साधारण धोती-कुरते में ही छटपटा रहा था, पर गरम कोट-पैंट में भी ऐसा लगा, मानो वे बहुत आराम से बैठे हों।

हंसते-हंसते वे खुद ही कहने लगे, 'मैं पेण्ड्रारोड जाऊंगा, और आप?'

'मैं विलासपुर जाऊंगा।'

इस हिसाब से वे पहले उतरेंगे।

पर उनकी कार्य-क्षमता बहुत विचित्र थी। ट्रेन में बैठते ही टाइप-राइटर द्वारा पता नहीं क्या-क्या टाइप करने लगे। फिर एक स्टेशन आते ही कंधे पर से कैमरा उतारकर बाहर की भीड़ के नजारे का एक फोटो खींच लिया। कैमरा रखकर अब एक किताब उठा ली। थोड़ी-बहुत मुझसे बातचीत भी की। मैं कहानी लिखता हूं, यह सुनकर बोले, 'All Bengalees are Poet.' सभी बंगाली कवि होते हैं। और एक भरपूर ठहाका मारकर खुलकर हंसने लगे। उस हंसी में व्यंग्य या रोष की बू नहीं थी। उन्होंने बताया कि अट्ठारह साल से वे पेण्ड्रारोड के जंगलों में रह रहे हैं। उनका समूचा जीवन छत्तीसगढ़िया लोगों के बीच में व्यतीत हुआ है। अपने देश और लोगों को छोड़कर वे किस तरह वहां रह रहे हैं, यह सोच-कर सचमुच अचरज हुआ मुझे। रही जंगल की बात, सो क्या जंगल में और लोग नहीं रहते। वहां उन्होंने मकान और स्कूल बनवा दिए हैं। उन-के लिए वहां चर्च भी है। हॉस्पिटल है। लाइब्रेरी है। और इन सबके अलावा हैं विविध प्रकार के गेम्स। खेल-खाल में ही उनका किसी तरह समय कट जाता है। इसी तरह उन्होंने अपनी पत्नी के साथ वहां अट्ठारह वर्ष बिता दिए हैं। बल्कि अभी और कितने वर्ष बिता देंगे, इसका कोई

ठिकाना नहीं था।

कुछ देर बाद पेण्ड्रारोड स्टेशन आ गया।

अब उनकी वहां उतरने की बारी थी। हंसते-हंसते मुझसे विदा लेकर वे उतरने को हुए। पर उतरने से पहले एक विचित्र काण्ड कर बैठे। सम्भव है कि वह घटना न घटी होती तो इस कहानी का जन्म ही नहीं होता।

उन्होंने कहा, 'नमस्ते, अच्छा तो अब मैं चलूं। अगर कभी पेण्ड्रारोड आएं तो एक बार हमारे घर में भी अपनी चरण-रज पड़ने दीजिएगा। हमारी ओर से आपको चाय का निमन्त्रण रहा।'

उन्होंने बैग में से चमड़े की जिल्द-मढ़ी एक छोटी किताब निकाली और बोले, 'यह पवित्र बाइबिल आपको उपहारस्वरूप देता हूं। अगर कभी समय मिले तो जरूर पढ़िएगा।'

मैंने देखा, वह किताब आश्चर्य-जनक सुनहरे अक्षरों में छपी थी।

मैंने कहा, 'धन्यवाद।'

वे खड़े रहे। बोले, 'पढ़ते समय एक बात ध्यान में रखिएगा। केलिफोर्निया के छात्रों ने ६ महीने तक आलू न खाकर जो पैसे बचाए थे उन्हीं पैसों से यह किताब छपाई गई है। इसे उनकी धर्म-पिपासा का चिह्न समझकर अपने पास रखेंगे तो मैं भी बहुत अनुगृहीत होऊंगा। अच्छा चलूं, नमस्ते।'

ट्रेन छूट गई।

कुछ देर मन ही मन मैं हंसा। धर्म-प्रचार का यह भी एक रास्ता है। इसे अभिनव-पंथ कहना अनुपयुक्त नहीं होगा। मैं अन्यमनस्कता से बाइबिल के पन्ने उलट रहा था। जहां पहली बार नजर पड़ी, वहां से पढ़ना शुरू किया तो मैं चकित रह गया। मानो मेरी बुद्धि शून्य हो गई हो। भला इसी लाइन पर नजर पड़ना क्या जरूरी था? देखा कि लिखा हुआ था, "But love ye your enemies and do good, and lend hoping for nothing again; and your reward shall be great and ye shall be the children of the Highest...who can

forgive sins but God only..."

विना पैसों की मामूली-सी एक वाइविल, और साधरण-सी कुछ लाइनें, पर इन्हें पढ़ने के साथ मुझे सब कुछ याद आ गया। हां, सारी बातें !

और साथ ही रोहिणी बाबू की बात भी याद आ गई। हमारे स्कूल के भूगोल के मास्टर महाशय रोहिणी बाबू ने एक दिन क्लास में पूछा था, 'अच्छा बताओ तो, महाभारत का सबसे बड़ा चरित्र कौन है ?'

पंचा ने कहा था, 'अर्जुन, सर !'

सुबोध ने कहा था, 'भीम, सर !'

फटिक ने कहा था, 'कर्ण, सर !'

क्लास की सभी लाइनों से घूमते-घूमते आखिर यही प्रश्न मेरे सामने आकर ठहरा।

मैं झटपट बोल उठा, 'युधिष्ठिर, सर !'

'शावाश ! बहुत अच्छा। मैं तुम्हारा जवाब सुनकर बहुत खुश हुआ।'

क्लास-भर के लड़कों में मेरा माथा गर्व से ऊंचा हो गया था। मेरा ही उत्तर सही था और बाकी सबका गलत। पर आज इतने दिनों के बाद जब सोचता हूं तो शर्म से सिर झुक जाता है। उस दिन का वह सही उत्तर मेरे अनजाने में कब गलत हो जाएगा, यह मुझे कहां पता था। उस दिन बड़े गर्व से मैं सिर ऊंचा किए घर लौट आया था, वही गर्वपूर्ण मेरा सिर कभी शर्म से झुक भी जाएगा; क्या मुझे पता था ? दुनिया में क्या ऊपरी सफलता ही महत्त्वपूर्ण है ?

अक्लांत निष्ठा आखिरी दम तक अगर सफलता के चरण न चूम पाए तो क्या सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा ? आज अगर मैं कहूं कि मेम भाभी का जीवन ही सार्थक था और उसकी निष्ठा ही सफलतापूर्ण रही तो क्या यह मेरी भूल होगी ?

सुल्तानगंज के कुमार साहब के वुड स्ट्रीट वाले फ्लैट से जब मेम भाभी भागी थी, क्या वह भी एक उत्तरण था ! उत्तरण की कोशिश करना भी एक प्रकार का उत्तरण ही है। अन्धकार से प्रकाश की ओर उत्तरण, साधा-

रण से असाधारण की ओर उत्तरण। मृत्यु से जीवन की ओर उत्तरण। और जीवन से जीवनातीत की ओर।

दस हज़ार से बीस हज़ार की ओर। फतेहगढ के बड़े महाराज राठौर वंश के कुलदीपक है। उन्हे रुपयों का कोई अभाव नहीं है। उनके यहा बड़ी रानी का पद खाली पडा था। फिर भला बीस हजार क्या चीज थे? समूचा राज्य देने मे भी उन्हें कौन रोकनेवाला था। जब होटल के खाने-वाले कमरे में उनकी मुलाकात मेम भाभी से हुई थी तो उन्होंने अपने ऐश्वर्य एवं वंश-गौरव की फेहरिश्त भी दे दी थी उसको। और अपना गुणगान सविस्तार बखान किया था।

वे बोले थे, 'सात बार मोन्टेकार्लो जा चुका हूं। तेरह बार मेरे घोडे ने डर्बी जीती है। एक टेबिल पर बैठकर एक बार में सत्रह बोतलें ह्विस्की पी सकता हूं।'

फिर बोले, 'तुम्हे पता है, हैदराबाद के निज़ाम के पश्चात् इतना रेविन्यू और कोई भी नेटिव-प्रिंस दिल्ली-दरबार मे नही भेजता!'

वहा के लोग कहते हैं, बडे महाराज दौलतमन्द होने के साथ-साथ दिल-दार व्यक्ति हैं। दौलत तो बहुतों के पास होती है, लेकिन दिलदार होना बहुत मुश्किल है। बाजार में कार का नया मॉडल आते ही उनके मन से पुरानी कार बिलकुल उतर जाती है। अपनी आत्मसन्तुष्टि के लिए उन्होने स्टेट मे बहुत-सी गाड़िया, बहुत-से राजप्रासाद, हवामहल एवं शीशमहल आदि बदले हैं। सिर्फ किसी बात की कमी है तो एक रानी की। सर्वप्रथम फतेहगढ में चौहान वंश की लडकी राजवधू बनकर आई थी। फिर चौहान वंश की ही नही, तीन और खानदानी वश की लड़किया भी इस रईस व्यक्ति की अंकशायिनी होने को आई थी। पर कोई टिकी नहीं। बच्चा होने के समय सभी मर गई। उसके बाद महाराज ने फिर शादी नही की। बाद मे जो नारिया इनके सम्पर्क में आई, वे इस देश की नहीं थीं। कोई जर्मन थी तो कोई इटालियन या फिर कोई जू थी। उनमें से भी कोई नही टिकी। यद्यपि राजवधू बनने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त नहीं

हुआ, लेकिन फिर भी उनके लिए अलग राजप्रासाद थे। उनके लिए अलग लाव-लश्कर, खानसामा, बावर्ची, बॉय, बेयरा वगैरह सभी थें। महाराजा की जब जहां खुशी होती, जाते और रात बिताकर आते; लेकिन फिर भी वे उनका मन नहीं जीत सके। उनमें से कोई भी महाराजा से संतुष्ट नहीं हुई और एक-एक करके सभी चली गईं। लेकिन जाते-जाते वे मोटी रकम एवं जवाहरात भी अपने साथ लेती गईं।

और अब मेम भाभी की बारी आई थी।

महाराजा ने पूछा, 'तुम्हें इण्डिया आए कितने दिन हुए हैं?'

उस वक्त तक मेम भाभी सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब के रुपयों के बल पर इस देश के बहुत से हाल-चाल सीख चुकी थी, इसीलिए बोली, 'सिर्फ तीन महीने।'

सिर्फ तीन महीने! तब तो बिलकुल ताजा चीज है। विलायत का एकदम नया ताजा आयात भी उसे कहा जा सकता है। बड़े महाराजा उसका उत्तर सुनकर बड़े खुश हुए, क्योंकि उनके मन एवं नजर दोनों की पसन्द के मुताबिक वह फिट थी।

वे बोले, 'मैं तुम्हें रानी बनाऊंगा। मेरी स्टेट की रानी साहिबा! तुम्हारे नाम से एक स्टेट भी लिख दूंगा। उसके समस्त अधिकार तुम्हारे ही होंगे।'

मेम भाभी ने कहा, 'लेकिन मुझे खास रानी बनाना पड़ेगा, याद रहे?'

बड़े महाराज ने कहा, 'हां-हां, खास रानी ही बनाऊंगा। पुरोहित बुलाकर, मन्त्र पढ़वाकर यथारीति तुम्हें अपनी जात में मिलाऊंगा। और क्या चाहिए?'

मेम भाभी ने कहा, 'एक बात और है।'

बड़े महाराज ने कहा, 'क्या?'

'मेरी जितनी इच्छा होगी, उतने ही रुपये मैं अपने देश भेजूंगी; मुझे कोई कुछ नहीं कह सकेगा।'

'कहां भेजोगी?'

खैर, उसमें बड़े महाराज को कोई आपत्ति नहीं थी। वे दौलतमंद आदमी थे, दौलत के बारे में कंजूसी भी नहीं करते। मेम भाभी का वहां पर पक्का-पुख्ता इन्तजाम हो गया, और फिर वुड स्ट्रीट के फ्लैट से मेम भाभी गायब हो गई। सुल्तानगंज के छोटे कुमार साहब के साथ इस तरह की तीन घटनाएं घट चुकी थी। मेम भाभी वाली घटना को लेकर उन्होंने अधिक दिमाग नहीं खपाया।

और उसके बाद से मेम भाभी इस आबू पहाड़ पर हैं।

उस दिन मेम भाभी की गाड़ी ने मुझे ठीक वक्त पर महाराज के हवामहल में उतार दिया था।

दोपहर को पगड़ीवाला वही राजपूत हवामहल में आया और मुझे सलाम करके मेरे पास खड़ा रहा। बोला, 'हुजूराइन साहिबा को मैंने आपकी इत्तिला कर दी है।'

आबू पहाड़ पर आने के अगले मुहूर्त से हुजूराइन द्वारा अतिथि-सत्कार के बहुत-से उदाहरण पा चुका हूं। चारों ओर ठंडा वातावरण था। नकली लेक और टोड रॉक छोड़कर सनसेट प्वाइंट की तरफ जाने-वाले मार्ग के इधर ही हवामहल में मेरे रहने की व्यवस्था की गई थी। रास्ते के उस पार कुछ आगे जाकर हुजूराइन का प्रासाद है। महाराज की उम्र पकने लगी है, पर उससे क्या फर्क पड़ता है। हुजूराइन की भी उम्र कम नहीं है। लाव-लश्कर, पैदल-प्यादे, बरकन्दाज, चपरासी, खानसामा, बेयरा, बावर्ची, आया, पालकी, घोड़ा, ऊंट आदि सब उनके साथ आए हैं। क्योंकि उन सबके आए बिना रानी साहिबा की इज्जत में बट्टा लग जाता है और बड़े महाराज के सम्मान पर ठेस पहुंचती है।

मेरे यहां आने के बाद से ही बार-बार खाने का सामान आ रहा था। कभी जलेबी, लड्डू, पेड़ा, पूरी, मिठाई तो कभी मांस, मछली, तरकारी वगैरह। नहाने और मुंह-हाथ धोने के लिए गरम पानी आता था। मेहमाननवाजी में किसी बात की कोर-कसर नहीं रखी गई

त्र आया था।

मैंने पूछा, 'हुज़ूराइन इस वक्त क्या क.र रही हैं ?'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'अभी हुज़ूराइन का गुस्ल हुआ है, अभी वदन की मालिश-वालिस होगी; उसके बाद पोशाक पहनाई जाएगी।'

मैंने पूछा, 'बड़े महाराज नहीं आएंगे।'

वह व्यक्ति इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं दे सका। मकान के बाहर गाड़ी खड़ी थी। मैं उसीमें बैठकर मेम भाभी के मकान में जा पहुंचा। सामने खड़े भरी बंदूक कंधे पर रखे एवं बेल्ट कसे एक संतरी ने आकर मुझे सलाम किया और गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया। कड़कड़ाहट की आवाज़ करता लोहे का गेट भी खोल दिया। अन्दर शुरू से आखिर तक कार्पेट बिछा हुआ था।

काठ की सीढ़ियों से होता हुआ मैं ऊपर पहुंचा। चारों ओर बाघ एवं हाथियों के कंकाल बंधे हुए थे। तो क्या बड़े महाराज को शिकार का भी शौक है ? सिर्फ शिकार का ही नहीं, बल्कि उन्हें शराब का भी बहुत शौक है। राजपूताना की मरुभूमि में अगर उनको वह न मिले तो उनका बदन सूख जाता है। उन्हें फूलों और पक्षियों का भी शौक है और जीवित चिड़ियां और कबूतर पालने का भी। पर उन्हें लड़कियों का शौक है कि नहीं, इसका सबूत अभी तक नहीं मिला मुझ।

कमरों के बाद कमरे ! इस महल को पार करके उस महल में गया ऐश्वर्य एवं आडम्बर में होड़-सी लगी हुई थी। चारों ओर बड़े- आइने लगे हुए थे, जिससे शीशमहल का भ्रम होता था। कमरे के बी में खड़ा होने से हज़ारों कोनों से हज़ारों चेहरे दिखाई पड़ते थे। महाराज समूचे कपड़े खुलवाकर यहां नर्तकियों का नाच देखा करते

मैं आश्चर्यचकित होकर चारों तरफ देख रहा था। यहां प भाभी के लिए अपने फ्री स्कूल स्ट्रीट के टूटे फ्लैट की याद करना राध है।

एक कमरा सफेद इटालियन-मार्बल पत्थरों का था, जिसकी

छत से शुरू होती थी। यहां तक कि कमरे की टेबिल, चेयर, बेंच, सोफा सब इटालियन-मार्बल पत्थर के बने हुए थे। बल्ब की रोशनी पत्थर के शेड से ढकी हुई थी।

और उसके बाद काली महोगनी काठ की सजावट थी। ऊपर से नीचे तक लकड़ी ही लकड़ी। कमरे की छत से शुरू होकर दीवार, फर्नीचर, फर्श, टेबिल, चेयर सब कुछ मानो एक ही काठ से तैयार किए गए थे। काठ में कहीं भी जोड़ का निशान नहीं था। पालिश भी ऐसी चमचम कर रही थी कि कोई चाहे उनमें अपना चेहरा भी देख ले।

पता नहीं कहां से गाने की क्षीण आवाज आ रही थी। ऐसा लगता था, मानो मैं किसी स्वप्न-प्रदेश में चला आया हूं। हुजूराइन ने स्वयं पसन्द करके खुद की देख-रेख में यह मकान बनवाया है। यहां जितना कुछ है, सब हुजूराइन का है। बड़े महाराज ने फतेहगढ में हुजूराइन के लिए एक बहुत बड़ा प्रासाद बनवा दिया था। उसके चारों तरफ एक मील की लम्बाई में लेक बनवाई गई थी। बगल में ही पहाड़ थे। पहाड़ पर स्थित हर एक पेड़ पर बिजली के बल्ब जगमगाते थे। वहीं पर हुजूराइन के लिए गिर्जाघर से घण्टे बजाए जाते थे, और घण्टे की वह ध्वनि लेक के पानी की तरंगों से होती हुई हुजूराइन के प्रासाद तक पहुंच जाती थी।

कभी-कभी ऐसा महसूस होता कि घण्टे का स्वर मुखरित होकर कहता है—

And I, John saw the holy city, new Jerusalem, coming down from God out of heaven, prepared as a bride adorned for her husband.

And I heard a great voice out of heaven saying— Behold, the tabernacle of God is with men and he will dwell with them, and they shall be his people and God himself shall be with them and be their God.

And God shall wipe away all tears from their eyes ;

nd there shall be no more death, neither sorrow, nor crying, neither shall there be any more pain...who can forgive sins but God only.

मुझे अच्छी तरह याद है, वह व्यक्ति मुझे एक कमरे में बैठाकर खुद कहीं गायब हो गया था।

बहुत देर बाद मेम भाभी आईं, पर वह चेहरा देखकर मानो मैं पहचान नहीं पाया। आबू रोड के स्टेशन पर भी सलमे-सितारे-जड़ित घूंघट निकाले एक मूर्ति देखी थी। पर वह तो उससे भी अधिक हसीन थी। मेम भाभी की उम्र मानो पहले से भी कम लगने लगी। बदन पर मांस की परतें चढ़ गई थीं। गाल पहले से भी अधिक फूल गए थे। आंखें और अधिक कटीली हो गई थीं। पलक-पंखुरियां और भी रंगीन तथा नाजुक लग रही थीं। पैरों में सुनहरी जरी के काम की चप्पल, देह पर रुपहली जाली की चुनरी; कानों में हीरे के झुमके तथा गले में मोतियों की माला! इन सबके अलावा मांग में सिन्दूर भी था।

अवसर मिलते ही मैंने मेम भाभी से पूछा था, 'क्यों, अब तो सच-मुच रानी बन गई हो न, मेम भाभी?'

मैंने सोचा था कि जिस संकुचित एवं घृणित जीवन के वातावरण से मुक्ति पाने की मेम भाभी की जिन्दगी-भर से चाहत रही है, आज वह सार्थक रूप ग्रहण कर चुकी है। बहुत वर्षों से स्वयं से घृणा करते-करते मानो अब वह सुखी हुई है और खुद को प्रेम से देखना सीख लिया है आज वह रानी बन गई है, प्रिंसेज बन गई है, रानी साहिबा हो गई है।

मेम भाभी की आया एक ट्रे में गिलास, पेग, बोतल, सिगरेट और माचिस रख गई।

मेम भाभी ने हाथ के इशारे से उसको जाने को कहा और पाके

एक सिगरेट लगाकर सुलगाई।

मैंने दुबारा पूछा, 'अब तो तुम सुखी हो न, मेम भाभी?' मेम भ

ने मेरी बातों को अनसुनी कर दिया और अपनी धुन में गिलास में से

घूंट भरा। मैंने महसूस किया कि इतने दिनों से शान्ति के गहरे समुद्र में डुबकी लगाकर मेम भाभी ने अब अपने को सफल बनाया है, क्योंकि सफलता की निशानी उसके बदन के पोर-पोर से छलक रही थी। वह अब अधिक सुन्दर और गोरी लग रही थी। मेम भाभी को अब सुबह से लेकर रात तक पुरुषों के लालच में खुद को पददलित नहीं करना पड़ता। अब तो उसे निर्बाध सुकून मिल रहा था। नींद टूटते न टूटते उसके अगल-बगल कई नौकरानियां आतीं और आकर उसके हुक्म का इन्तजार करतीं। रानी साहिबा के मोटर तक पहुंचने के रास्ते में मिलने वाले सब पथचारी माथा जमीन से टेककर उसे अभिवादन करते तथा उसके दीर्घजीवन की कामना करते। बड़े महाराज ने रानी साहिबा को खुश करने की गरज से फ्रांस से फर्नीचर और उनकी कलाई की शोभा के लिए स्वीट्ज़रलैंड से घड़ी मंगवाई थी। इंग्लैंड की बोण्ड स्ट्रीट से गाऊन तैयार होकर आते थे। गरज यह कि ऐशो-आराम और ऐश्वर्य में कुछ भी बाकी नहीं रहा। रानी साहिबा के हाथी ने उनके कदमों से सूंड छुआकर सलाम करना सीख लिया था। रानी साहिबा के घोड़े ने कलकत्ते की घुड़दौड़ में बाज़ी जीती थी। संसारी मनुष्य को भला और क्या चाहिए!

मेम भाभी ने मुझसे बहुत-सी बातें पूछीं। शादी हुई या नहीं? कलकत्ते के क्या हालचाल है? मैं नौकरी कहां करता हूं? मां, पिताजी, ताऊजी, आदि सबके समाचार भी उसने पूछे।

मैंने पूछा, 'इस तरह की पोशाक पहनने में तुम्हें तकलीफ नहीं होती?'

फिर पूछा, 'हां, तो इतने दिनों के बाद अब तुम सचमुच रानी साहिबा बन गई हो?'

रानी साहिबा की आंखों से आंसू बहने लगे।

मुझे क्या पता था कि मेम भाभी अभी तक रानी साहिबा नहीं बन सकी है। फतेहगढ़ के नये प्रासाद से दूर से ही लेक के किनारेवाला गिर्जा दिखाई पड़ता है। इस प्रासाद में और भी बहुत नारियों ने आश्रय लिया

था। विविध प्रकार की गुड़ियों से बड़े महाराज ने अपना शौक पूरा किया था। जिधर नज़र जाती, उधर ही रानी साहिबा की स्टेट दिखाई पड़ती थी। स्टेट के दलील-दस्तावेज़ भी तैयार हो चुके थे। राज्य की प्रजा समझती थी कि इस बार जो आई है, वही उनकी भावी रानी है। भावी रानी साहिबा; छोटी नहीं, पटरानी। उन लोगों पर हुकूमत करनेवाली मालकिन। उनकी हुज़ूराइन।

बड़े महाराज नयी कार चलाकर बिल्कुल भीतरी बालकनी के नीचे उतरते। आज ही सारी बातें पक्की होने की बात है।

मेम भाभी पूछती, 'महाराजा साहब, तारीख पक्की हो गई क्या?'

बड़े महाराज जवाब देते, 'थोड़ा-सा बखेड़ा हो गया है।'

'कैसा बखेड़ा?'

'स्टेट के पुरोहित का बड़ा लड़का अचानक मर गया है। अभी वे शोक में हैं। तुम्हें कुछ दिन तक सब्र करना पड़ेगा।'

यह तो हुआ एक बहाना। पर ऐसे-ऐसे बहुत-से बखेड़े आए और चले गए। पर शादी किसी तरह भी न हो सकी।

महाराज कहते, 'तुम इतनी उतावली क्यों होती हो? ह्विस्की का नया चालान आया है, खोलूं?

सिर्फ ह्विस्की ही नहीं, नये गहने, नयी कार, नया गाऊन आदि भी आते। इन्हीं सबमें देर हो जाती और असली बात उठती ही नहीं। कार में बैठकर दोनों घूमने निकलते। लेक के पार, पहाड़ पर से होती हुई, स्टेट की सीमा को छूकर गुज़रती हुई कार से सूर्यास्त देखते-देखते अचानक मेम भाभी के कानों में गिर्जा के घण्टों की ध्वनि पड़ती। बहुत दूर से वे शब्द तैरकर आते और बहुत दिनों पहले की बातें याद दिलाते। गिर्जाघर में पहले भी कई बार उसने उत्सुकता-भरी नज़रों से मदर मेरी की मूर्त्ति को निहारा है। लेकिन मूर्त्ति में किसी तरह का भाव परिवर्त्तन नहीं हुआ। गिर्जाघर की मूर्त्ति उसे साधारण मूर्त्ति से अधिक कुछ नहीं लगी। पर अब ऐसा क्यों लगता है? बड़े महाराज के रुपये आजकल उसके दिल पर

आघात क्यों करते हैं ?

देश से पत्र आता। मेटिल्ड की शादी हो गई है। वे लोग बहुत सुखी हैं। विन्स्टर स्क्वायर में नयी बिल्डिंग में रहना शुरू कर दिया है उन लोगों ने। और अब नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू की है। मार्गी एक कर्नल से शादी करके सुखी है। केटी की शादी भी एक डॉक्टर से हो गई है। वे सब न्यूजर्सी में हैं। मिनी को वायलिन बजाने में सर्टिफ़िकेट मिला है। अब वह एक इन्जीनियर के साथ इंगेज्ड हो चुकी है। उसकी शादी भी इसी जून में होने वाली है। वह अपनी दीदी से कीमती उपहार की उम्मीद करती है। बिली डॉक्टर बन गया है। आर्मी में भर्ती होकर इण्डिया आएगा। और हेनरी ? वह बचपन से ही बहुत शैतान था। पर अन्त में वह भी नेवी में फ़र्स्ट लेफ़्टिनेण्ट हो ही गया है। अब क्या बाकी रहा ? मेम भाभी ने और क्या चाहा था ? उसने जो कुछ चाहा था, सब कुछ पाया है। सब सपने पूरे हो गए। पर मेम भाभी ! वह खुद ?

अपनी बात सोचना शुरू करते ही अचानक बाधा पड़ी।

टन्-टन्-टन् करके घण्टे की ध्वनि शुरू हो गई। यह संगीत कानों में पड़ते ही मन इतना अस्त-व्यस्त हो जाता है कि उसे सभालना मुश्किल हो जाता है। सब कुछ तितर-बितर हो जाता। यह स्टेट, ये बड़े महाराज, हाथी, घोड़े, रूट, रेस की घोड़ी, जितनी जायदाद है; सब तुच्छ हो जाते।

मेम भाभी ने कहा, 'राजा साहब, तुमने अपनी बात नहीं रखी !'

'कौन-सी बात ?'

और वह बात याद करते-करते बड़े महाराज विभ्रान्त हो जाते। कौन-सी बात नहीं रखी उन्होंने ? इसलिमवाली ने रेस की घोड़ी मांगी थी, वह दी है उन्होंने। उसने खुद की स्टेट चाही, वह भी उसे मिल गई। गाड़ी की मांग की, तो वह भी दी गई।···रुपयों से जो कुछ खरीदा जा सकता है, वे सब इच्छाएं पूरी करूंगा। घूमने जाना चाहो तो वह भी मंज़ूर है। पेरिस, लंदन, न्यूयार्क, मोण्टे कार्लो जहां चाहो, चलो न।

'पर रानी साहिबा की गद्दी !'

था। विविध प्रकार की गुड़ियों से बड़े महाराज ने अपना शौक पूरा कि था। जिधर नज़र जाती, उधर ही रानी साहिबा की स्टेट दिखाई पड़ थी। स्टेट के दलील-दस्तावेज़ भी तैयार हो चुके थे। राज्य की प्रजा सम झती थी कि इस बार जो आई है, वही उनकी भावी रानी है। भावी रानी साहिबा; छोटी नहीं, पटरानी। उन लोगों पर हुकूमत करनेवाली मालकिन। उनकी हुज़ूराइन।

बड़े महाराज नयी कार चलाकर बिल्कुल भीतरी बालकनी के नीचे उतरते। आज ही सारी बातें पक्की होने की बात है।

मेम भाभी पूछती, 'महाराजा साहब, तारीख पक्की हो गई क्या ?'

बड़े महाराज जवाब देते, 'थोड़ा-सा बखेड़ा हो गया है।'

'कैसा बखेड़ा ?'

'स्टेट के पुरोहित का बड़ा लड़का अचानक मर गया है। अभी वे शोक में हैं। तुम्हें कुछ दिन तक सब्र करना पड़ेगा।'

यह तो हुआ एक बहाना। पर ऐसे-ऐसे बहुत-से बखेड़े आए और चले गए। पर शादी किसी तरह भी न हो सकी।

महाराज कहते, 'तुम इतनी उतावली क्यों होती हो ? ह्विस्की का नया चालान आया है, खोलूं ?

सिर्फ ह्विस्की ही नहीं, नये गहने, नयी कार, नया गाऊन आदि भी आते। इन्हीं सबमें देर हो जाती और असली बात उठती ही नहीं। कार में बैठकर दोनों घूमने निकलते। लेक के पार, पहाड़ पर से होती हुई, स्टेट की सीमा को छूकर गुज़रती हुई कार से सूर्यास्त देखते-देखते अचानक मेम भाभी के कानों में गिर्जा के घण्टों की ध्वनि पड़ती। बहुत दूर से वे शब्द तैरकर आते और बहुत दिनों पहले की बातें याद दिलाते। गिर्जाघर में पहले भी कई बार उसने उत्सुकता-भरी नज़रों से मदर मेरी की मूर्त्ति को निहारा है। लेकिन मूर्त्ति में किसी तरह का भाव परिवर्त्तन नहीं हुआ। गिर्जाघर की मूर्त्ति उसे साधारण मूर्त्ति से अधिक कुछ नहीं लगी। पर अब ऐसा क्यों लगता है ? बड़े महाराज के रुपये आजकल उसके दिल पर

आघात क्यों करते हैं ?

देश से पत्र आता। मेटिल्ड की शादी हो गई है। वे लोग बहुत सुखी हैं। लिस्टर स्क्वायर में नयी बिल्डिंग में रहना शुरू कर दिया है उन लोगों ने। और अब नये सिरे से जिन्दगी शुरू की है। मार्गी एक कर्नल से शादी करके सुखी है। केटी की शादी भी एक डॉक्टर से हो गई है। वे सब न्यूजर्सी में हैं। मिनी को वायलिन बजाने में सर्टिफिकेट मिला है। अब वह एक इन्जीनियर के साथ इंगेज्ड हो चुकी है। उसकी शादी भी इसी जून में होने वाली है। वह अपनी दीदी से कीमती उपहार की उम्मीद करती है। बिली डॉक्टर बन गया है। आर्मी में भर्ती होकर इण्डिया आएगा। और हेनरी ? वह बचपन से ही बहुत शैतान था। पर अन्त में वह भी नेवी में फ़र्स्ट लेफ़्टिनेण्ट हो ही गया है। अब क्या बाकी रहा ? मेम भाभी ने और क्या चाहा था ? उसने जो कुछ चाहा था, सब कुछ पाया है। सब सपने पूरे हो गए। पर मेम भाभी ! वह खुद ?

अपनी बात सोचना शुरू करते ही अचानक बाधा पड़ी।

टन्-टन्-टन् करके घण्टे की ध्वनि शुरू हो गई। यह संगीत कानों में पड़ते ही मन इतना अस्त-व्यस्त हो जाता है कि उसे संभालना मुश्किल हो जाता है। सब कुछ तितर-बितर हो जाता। यह स्टेट, ये बड़े महाराज, हाथी, घोड़े, ऊंट, रेस की घोड़ी, जितनी जायदाद है; सब तुच्छ हो जाते।

मेम भाभी ने कहा, 'राजा साहब, तुमने अपनी बात नहीं रखी !'

'कौन-सी बात ?'

और वह बात याद करते-करते बड़े महाराज विभ्रान्त हो जाते। कौन-सी बात नहीं रखी उन्होंने ? इंगलिशवाली ने रेस की घोड़ी मांगी थी, वह दी है उन्होंने। उसने खुद की स्टेट चाही, वह भी उसे मिल गई। गाड़ी की मांग की, तो वह भी दी गई।…रुपयों से जो कुछ खरीदा जा सकता है, वे सब इच्छाएं पूरी करूंगा। घूमने जाना चाहो तो वह भी मंजूर है। पेरिस, लंदन, न्यूयार्क, मोण्टे कार्लो जहां चाहो, चलो न।

'पर रानी साहिबा की गद्दी !'

'वह भी मिलेगी। दो दिन सब्र करो। रानी साहिबा बनने की भी एक पद्धति है। उसकी भी एक रीति है। यों ही रानी साहिबा नहीं बना जाता। चारों ओर नाते-रिश्तेदारों को निमन्त्रण देना पड़ेगा। नाच-गाना होगा, हवन होगा, दान-ध्यान होगा। भिखारी-भिखारिनों को भोजन दिया जाएगा। महल के भीतर-बाहर उत्सव-जश्न मनाया जाएगा। इतना सब क्या एक दिन में हो जाएगा? यह सब पूरा एक महीने तक चलेगा। रेजिडेण्ट साहब आएंगे। लालजी साहब, लालजी बाईसाहिबा; पर्दायतजी, पेशवानजी भी आएंगे। कोई बाकी नहीं रहेगा। यह इतना सरल काम तो है नहीं।'

और धीरे-धीरे उसका लेखा-जोखा भी होने लगा।

इंगलिशवाली के लिए रुपयों का झरना बह निकला। बड़े महाराज ने कड़ा आदेश दे दिया था कि इंगलिशवाली की कोई स्लिप मिले तो उसमें उसकी जैसी भी इच्छा लिखी हो, वह पूरी की जाए। अगर उसकी मांग यहां न मिले तो बम्बई ऑर्डर भेजो। बम्बई में भी न मिले तो कलकत्ते ऑर्डर भेजो। और अगर इण्डिया में भी न मिले तो इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी से मंगाओ। तमाम दुनिया में ढूंढ़ो।

पर अचानक सब गड़बड़ हो गया।

इण्डियन डोमीनियन के मंत्री सरदारजी की एक सील लगी चिट्ठी एक दिन सुबह-सुबह हाजिर हुई। उसके बाद से कानाफूसी और फुसफुसाहट शुरू हो गई। चारों ओर नीरवता-सी छा गई। किसीने कहा, 'नेहरूजी महाराजा की गद्दी छिनवा लेंगे।' 'सुना है दिल्ली में बादशाही शुरू हो गई है, बादशाही फौज आ पहुंची है।' शहर भर में लोगों की जबान पर यही एक बात थी। कोतवाली में महाराज का फौजी सिपाही बन्दूक लिए पहरा देता रहता था। उत्सुक जनता के सामने इकट्ठी होते ही कहता, 'भागो, भाग जाओ यहां से!'

अचानक अपने देश लौटने से पहले विली राजपूताना के इस शहर में आ पहुंचा। मेजर विलियम कार्लाइल स्मिथ। हिज़ मैजेस्टिज फोर्स की फिफ्थ ब्रिगेड का डॉक्टर। कई हाथों से होती हुई और अनेक देशों के डाकघरों की ठोकर खाती हुई मेम भाभी की एक चिट्ठी उसके हाथ लगी थी। चिट्ठी ऐसे समय में उसके पास पहुंची थी, जब उसका अपने देश लौट जाने का समय हो गया था।

देश लौटने से पहले एक बार वह अपनी बहन से मुलाकात करने आया।

मेम भाभी ने पूछा, 'तू कहां ठहरा है, विली ?'

'रेस्ट हाउस में।'

मेम भाभी ने कहा, 'रेस्ट हाउस में क्यों ? तुम्हें मेरे महल में रहना पड़ेगा।'

विली ने कहा, 'पर मैं तो आज ही दिल्ली लौट जाऊंगा। यहां से हैड क्वार्टर का आदेश मिलते ही देश रवाना हो जाऊंगा।'

अचानक मेम भाभी को पता नहीं क्या हुआ, बोली, 'तेरे साथ मैं भी चलूंगी।'

विली चकित रह गया। बोला, 'क्या मतलब ? कहां जाओगी तुम ?'

मेम भाभी ने कहा, 'अपने देश।'

'यह क्या ?' विली ने कहा, 'बड़े महाराज से परमीशन नहीं लोगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'मैं किसीकी बांदी नहीं हूं कि मुझे किसीसे परमीशन लेनी पड़े। तू मेरे पासपोर्ट का इन्तजाम कर दे। मैं माउण्ट आबू में रहूंगी। वहां से जाऊंगी तो किसीको शक भी नहीं होगा।'

विली उसी दिन चला गया। लेकिन दूसरे दिन से पता नहीं क्यों दंगनिवासी के प्रासाद के इर्द-गिर्द फौजी सिपाहियों का घूमना शुरू हो गया।

मेम भाभी ने बड़े महाराज के खास दफ्तर में चिट्ठी भेजी, पर वहां से कई दिनों तक कोई जवाब नहीं आया। मेम भाभी ने खास मुंशी को

होश में नहीं थे। उस वक्त रुपये-पैसे, मोहरें, हीरे-जवाहारात, जो इच्छा होती मैं मांग सकती थी। उस समय बड़े महाराज एकदम पागल हो रहे थे मेरे लिए।'

महाराज ने कहा, 'जो खुशी हो, वही मांग लो। गाड़ी, घोड़ा, प्लेन, हाथी, मोहरें जो भी इच्छा हो…।'

मेम भाभी ने कहा, 'तुमने मुझे जो कुछ भी दिया है, सब वापस ले लो। मुझे कुछ नहीं चाहिए! मेहरबानी करके सब कुछ वापस ले लो।'

'क्यों? तुम मुझपर नाराज हो?'

'नहीं! मेरे गहने, गाड़ियां, हाथी, सब ले लो। यह सब लेकर मैं क्या करूंगी? किसी दिन यह सब सचमुच मैंने चाहा था। लेकिन अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।'

'क्यों, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या?'

मेम भाभी ने कहा, 'नहीं, मैं रानी की गद्दी पाने के लिए फतेहगढ़ आई थी। और वह मुझे अभी तक नहीं मिली है।'

हठात् बड़े महाराज का होश लौट आया। बोले, 'गद्दी?'

'हां, गद्दी! मैं रानीजी की गद्दी चाहती हूं। मैं फतेहगढ़ की रानी साहिबा की गद्दी चाहती हूं। मैं सुल्तानगंज की प्रिंसेस नहीं बन सकी, इसीलिए तुम्हारे साथ भागी थी। और अब जब फतेहगढ़ की प्रिंसेस नहीं बन सकी तो फिर…!'

महाराज ने कहा,'फतेहगढ़ की प्रिंसेस नहीं बन सकी तो क्या करोगी? क्या फिर भागोगी?'

मेम भाभी ने कहा, 'तो क्या तुम मुझे बांधकर रख सकोगे?'

महाराज ने कहा, 'कहां भागोगी तुम?'

'किसी और स्टेट की रानी बनने की कोशिश करूंगी। मेरी उम्र इतनी नहीं हुई है। अभी भी मुझमें यौवन बाकी है।'

'रानी बने बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता?'

मेम भाभी रो पड़ी। बोली, 'जानते हो, मैं बहुत दूर से आई हूं

हज़ारों मील दूर से। वह भी सिर्फ रानी बनने के लिए। अगर रानी बन गई तो फिर मुझे रुपये नहीं चाहिए। मैं तुम्हारे महल के एक कोने में पड़ी रहूंगी। सिर्फ दो टाइम का खाना दे देना।'

महाराज ने कहा, 'तुम थोड़ी ह्विस्की और पिओ।'

मेम भाभी ने कहा, 'तुम ह्विस्की पिलाकर मुझे फुसला नहीं सकते। मैं ह्विस्की नहीं पिऊंगी।'

'क्यों?'

मेम भाभी ने कहा, 'यह क्यों सुनना चाहते हो?'

महाराज ने कहा, 'हमारे फतेहगढ़ में तुम्हारे देश की बहुत-सी लड़कियां आ चुकी हैं, पर उनमें से तो किसीने तुम्हारी तरह ह्विस्की पीने से इंकार नहीं किया?'

मेम भाभी ने कहा, 'मैं भी पहले पीती थी और अब भी पीती हूं, लेकिन तुम्हारे साथ रात को एक कमरे में बन्द होकर अब कभी नहीं पिऊंगी।'

'क्यों?'

मेम भाभी ने कहा, 'जो गलती मेरी मां कर चुकी है, वही मैं नहीं करना चाहती।'

महाराज ने पूछा, 'तुम्हारी मां ने क्या गलती की थी?'

अचानक मेम भाभी तेज धारवाली तलवार की तरह पैनी हो गई। बड़े महाराज ने इंगलिशवाली का यह रूप कभी नहीं देखा था। उन्हें ऐसा लगा, मानो कोई ज़हरीला सांप अपनी पूंछ के बल पर उनके बिस्तर पर तनकर खड़ा हो और अपना सिर हिला रहा हो। वह उनकी तरफ देखकर ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रही थी।

महाराज ने कहा, 'सो जाओ, सो सोओ तुम, मैं चला जाता हूं।'

मेम भाभी ने झट-से बड़े महाराज का हाथ पकड़ लिया। बोली, 'तुम भाग नहीं सकते।'

महाराज ने कहा, 'कल सुबह मैं फिर आऊंगा। अभी तुम गर्म हो रही

हो, अतः अकेली रहकर ठंडी होओ।'

मेम भाभी ने कहा, 'मैं गर्म नहीं हुई, ठण्डी ही हूं। तुमसे पहले भी मैंने बहुत लोगों के साथ रात बिताई है। मैं इगलिशवाली हूं, मुझे कोई नहीं ठग सकता। मैंने ही सबको ठगा है। पर तुम...'

क्षण-भर चुप रहकर वह फिर बोली, 'तुम सुल्तानगंज के प्रिंस के यहां से मुझे क्यों ले आए? क्यों तुमने मुझे झूठा प्रलोभन दिया?'

महाराज ने कहा, 'मैं तुम्हें हर महीने दस हज़ार रुपये देता हूं। किसी प्रकार के अभाव में भी नहीं रखा तुम्हें मैंने।'

'पर तुम तो अपनी गद्दी देने की बात कहकर मुझे यहां लाए थे। रानी की गद्दी। वह दी तुमने?'

कुछ देर महाराज के मुह से कोई जवाब नहीं निकला। फिर बोले, 'सुल्तानगंज के प्रिंस ने भी तो तुम्हें रानी साहिबा नहीं बनाया था।'

मेम भाभी ने कहा, 'लेकिन कलकत्ते में प्रिंसों की कमी तो नहीं थी। कइयों ने मुझे रानी बनाना चाहा था।'

बड़े महाराज ने कहा, 'पर वे तुम्हें मेरी तरह इतने रुपये नहीं देते।'

'शायद नहीं देते, लेकिन रानी तो बनाते मुझे।'

'लेकिन तुम्हें रानी बनने का इतना चाव क्यों है? रानी बनने का ऐसा कौन-सा लालच है तुम्हें? सभी लड़कियां तो रुपये मिलते ही खुश हो जाती हैं।'

मेम भाभी ने कहा, 'तुमने जिन लड़कियों को देखा है, वे शायद रुपयों से ही खुश हो जाती हैं। पर मैं लड़की होते हुए भी उनलोगों से भिन्न हूं। मैं इगलिशवाली जो हूं।'

'मैंने और भी इगलिशवाली देखी हैं।'

मेम भाभी ने जवाब दिया, 'पर उनको शायद मेहराब-तले नहीं जन्मना पड़ा था। उनके शायद बार-बार बाप नहीं बदले थे। उनको शायद तेरह भाई-बहिनों को पाल-पोसकर बड़ा नहीं करना पड़ा था। उनको शायद बाजार जा-जाकर मांस, मछली, सब्ज़ी वगैरह नहीं चुराने

। उन्ह शायद मां-बाप का प्यार मिला होगा। उन्होंने शायद रानी
ने पर भी खुद को रानी बताकर अपना परिचय नहीं दिया होगा।'
भाभी महाराज की छाती से लगकर सुबक-सुबककर ज़ोर-ज़ोर से
ने लगी।

महाराज उठ बैठे और धीरे-धीरे मेम भाभी की पीठ पर हाथ फिराने
गे। पहले भी बहुत पुरुषों ने इसी तरह उसकी पीठ पर हाथ फिराया
था। ठीक उन्हीं लोगों जैसा ही यह हाथ था। बिल्कुल वैसा ही लाड़-भरा।
किसी प्रकार का फर्क नहीं। बहुत दिनों पहले अलक ने भी इसी तरह हा
फेरा था और सुल्तानगंज के कुमार साहब ने भी। और भी कितने असंख्य
हाथों के स्पर्श से मेम भाभी की आत्मा कलंकित हुई है, इसका कोई हिसाब
नहीं है। जिस तरह उसकी मां की देह कलंकित हुई थी. उसी तरह मेम
भाभी की देह भी कलंकित हुई है। स्वदेश-विदेश, पूर्व-पश्चिम, सभी जगह
एक ही हाल है!!

अचानक मेम भाभी को महसूस हुआ कि महाराज उसकी पीठ पर से
अपना हाथ खींच रहे हैं। मानो निश्शब्द भाग जाने की कोशिश में हैं।

मेम भाभी ने कुछ नहीं कहा। वह नींद का बहाना किए पड़ी रही
और अपना सिर तकिये में धंसा लिया। तकिये में उसकी आंख, नाक, मुंह
सब दब गए और वह पेट के बल पड़ी रही। लगा कि बड़े महाराज धीरे-
धीरे उठे। बिछौना छोड़कर दरवाज़ा पार किया। अंधेरी निस्तब्ध रात
में उनके जूतों का ठक-ठक शब्द निस्तरंग हवा में मिल गया। कुछ देर
बाद नीचे कॉरीडोर में महाराज की गाड़ी की एक मृदु-सी आवाज़
और फिर क्रमशः वह भी दूर जाकर थम गई।

मेरे सामने मेम भाभी की आया कई बार आई और उसके चे
अच्छी तरह पाउडर, रूज़ लगाकर आंखों और भौंहों को तीखा क

सिर के जो बाल उड़े जा रहे थे, उनको संवारकर ठीक किया। बात-चीत के बीच में ही मेम भाभी की बिल्ली आकर उसकी गोद में बैठ गई। कुत्ता आकर उसके पैरों में अपना सिर रगड़ने लगा। मैं सब कुछ गौर कर रहा था।

अचानक मेम भाभी ने पूछा, 'तू आबू किसलिए आया है?'

मैंने कहा, 'क्यों, यहां नहीं आना चाहिए था मुझे?'

मुझे याद है कि उस निस्तब्धता में मैंने एक बार पूछा था, 'मेम भाभी, क्या तुम्हें कोई बच्चा-वच्चा नहीं हुआ?'

मेरी बात का मेम भाभी ने कोई जवाब नहीं दिया।

मैं सोच रहा था कि और क्या प्रश्न करूं कि एकाएक मेम भाभी ने कहा, 'तू यहां से आज ही चला जा।'

सुनकर मैं दंग रह गया। पूछा, 'क्यों?'

मेम भाभी ने कहा, 'यहां तुझे क्या काम है?'

मैंने कहा, 'वैसे कोई खास काम नहीं है। यौंही घूमने आया था।'

मेम भाभी ने कहा, 'तो फिर आज ही चला जा।'

'क्यों?'

मेम भाभी ने कहा, 'यहां रहने पर तू मुसीबत में फंस सकता है।'

'मुसीबत! मुसीबत कैसी?'

मेम भाभी ने ग्लास में से एक घूंट शराब का लिया। बोली, 'मैं आज रात को यहां से भागूगी।'

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मैंने पूछा, 'क्यों, कहां भागोगी? क्यों भागोगी?'

सिगरेट से गहरा कश लेकर खूब ढेर सारा धुआं उगलकर मेम भाभी अपनी गोद में बैठी बिल्ली के शरीर पर हाथ फेरने लगी! बोली, 'यह देख, इन सबको छोड़कर चले जाना पड़ेगा मुझे। सुना है, मेरे हाथी को एक बच्चा हुआ है, पर अब तो उसे भी शायद बिना देखे जाना पड़ेगा। मेरे घोड़े ने इस बार कलकत्ते में वायसराय का कप जीता है, पता है तुझे?'

मेम भाभी ने सिगरेट का एक और कश लगाकर धुआं छोड़ा। बोली, 'खैर, एक ही जीवन में मुझे इतनी तरह की जानकारियां तो हुईं। वस्ती से शुरू करके राजप्रासाद तक अब कुछ भी देखना बाकी नहीं रहा। वही एक प्रकार की घटना और एक ही तरह की जानकारी ! किसी प्रकार का फर्क नहीं।

मैंने पूछा, 'कोई फर्क नहीं ? लेकिन फ्री स्कूल स्ट्रीट से तो अधिक सुख में हो यहां।'

मेम भाभी ने कहा, 'पर अभी भी रानी साहिवा कहां बन पाई ? ये तो सभी छद्मवेश थे। बड़े महाराज ने मुझसे शादी नहीं की।'

'यह क्या कहती हो ? यह राजप्रासाद, ये लोग-बाग, हाथी-घोड़े, इतने राज-सरंजाम, सब झूठ हैं ?'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरी रानी बनने की इच्छा अन्त तक पूर्ण नहीं हुई।'

'क्यों ?'

मेम भाभी ने कहा, 'एक दिन दिल्ली से बड़े महाराज के नाम एक पत्र आया। मर्जर में सही करना था। पटेलजी ने उन्हें बुला भेजा था। महाराज की आमदनी कम हो गई। उनका मन बहुत खराब हो गया।'

मेम भाभी ने ग्लास से होंठ लगाए। सोने के पाइप में लगे सिगरेट का एक कश लेकर धुआं छोड़ा। बोली, 'इसीलिए मैं आज रात चली जा रही हूं।'

मैंने पूछा, 'इस बार कहां जाओगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'भई, अब तो विलायत ही चली जाऊंगी वापस।'

मुझे अपने कानों पर विश्वास करने की इच्छा नहीं हुई। मैंने कहा, 'इतने दिनों बाद सचमुच लौट जाओगी ?'

मेम भाभी ने कहा, 'हां, अब भागने के सिवाय कोई चारा नहीं है। मैं इतने दिनों से विलायत रुपये भेजती रही हूं। वह भी महाराज ने गवर्नमेण्ट को बता दिया है। इन सबके अलावा अब मुझे यहां अच्छा भी

नही लगता। अब तो विलायत मे मेरा खुद का मकान बन गया है। अब वापस अपने देश लौटकर वही दिन काटूंगी। बहुत देख लिया। बहुत कुछ सीख लिया। जिन लोगो से घृणा करके एक दिन उनसे दूर चली आई थी, यहां आकर भी उस घृणा के हाथों से मुक्ति नही मिली। यहां जो लोग मुझे रास्ते मे, बाजार में मिल जाने पर साष्टांग प्रणाम करते हैं, क्या तुम समझते हो कि वे सचमुच ही मेरी इज्जत करते है?'

मैंने पूछा, 'तो क्या नही करते?'

मेम भाभी ने कहा, 'नही। देखो न, मेरे पिताजी एक दिन सड़क के पश्चिम की ओर से आ रहे थे और मेरी मा आ रही थी उत्तर की ओर से। मोड़ पर पहुंचते ही उनकी मुलाकात हो गई। उसी मुलाकात के फलस्वरूप मेरा जन्म हुआ। और यही दुर्घटना मैंने सर्वत्र देखी है। सड़क पर किसी मेहराब के नीचे जन्म लेकर अपना जीवन शुरू करके राजप्रासाद के हरम तक, सभी जगह एक ही बात।'

मैंने पूछा, 'बड़े महाराज तुमको जाने देंगे?'

मेम भाभी ने कहा, 'नही जाने देंगे, इसीलिए तो छिपकर जा रही हूं।'

क्षण-भर रुककर वह फिर बोली, 'तू आज ही चला जा। कल समूचे आबू में हो-हल्ला मच जाएगा। बड़े महाराज कई महीनों से मुझ पर शक कर रहे है। यहा भी मेरे पीछे जासूस लगा रखे है। इसीलिए कह रही हूं कि तू चला जा यहा से।'

मैंने कहा, 'पर जाऊं कैसे?'

मेम भाभी ने कहा, 'तुम्हारे हवामहल मे रात को कार भेज दूगी। तू तैयार रहना। कार तुम्हे यहा से बहुत दूर पहुचा देगी।'

मैंने पूछा, 'और तुम?'

मेम भाभी ने कहा, 'मेरे बारे मे तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नही।'

मैंने पूछा, 'फिर भी, तुम्हारे जाने की क्या व्यवस्था होगी?'

मेम भाभी ने सिगरेट का कश लेकर धुआ उगला। बोली, 'मेरे

पटरा

जाने की तुम्हें चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। विली इण्डिया में है। वह मेरे लिए सारा इन्तजाम करके रखेगा।'

मुझे याद है, इस घटना के बहुत दिनों बाद एक दिन मैं रोहिणी बाबू से भेंट करने गया था। मैं महसूस कर रहा था कि किसी दिन जिस विजयोल्लास से फूलकर मैं घर लौटा था, उसकी लज्जा दूर करनी पड़ेगी।

पंचा ने कहा था, 'अर्जुन, सर!'

सुबोध ने कहा था, 'भीम, सर!'

फटिक ने कहा था, 'कर्ण, सर!'

और मैं? मैंने कहा था, 'युधिष्ठिर!'

यह सभीको मालूम है कि विजय की माला हमेशा युधिष्ठिर को ही मिली है। उस समय मुझे भी यही मालूम था। पर आज दूसरी ही बात मालूम हुई। आज मुझे पता चला कि जय और पराजय में कोई फर्क नहीं है। अक्सर देखा गया है कि कई लोगों ने मनुष्य के सामने हार स्वीकार करके भी विधाता के हाथों जयमाला पाई है। लेकिन यह भी देखा गया है कि मनुष्य पर जयी होकर लोग जब विधाता के सामने अपना हिसाब पेश करते हैं उस समय कितने ही लोगों के सिर शर्म से झुक जाते हैं। आज जिसको हम विजय कहते हैं, वही कल रातों-रात पराजय में बदल जाती है। क्या सार्थक है और क्या निरर्थक—इसका फैसला कौन कर सकता है?

मुझे याद है, उस दिन रात को जब लौटकर आया तो न जाने मुझे कैसा डर-सा लग रहा था। आबू रोड की इतनी ठण्ड में भी मैं पसीने-पसीने हो गया था। दूर कहीं पन्द्रह मिनट के अन्तर से गिर्जाघर का घण्टा बराबर बज रहा था। उस आवाज़ की तरङ्ग मानों समूचे पहाड़ पर तैरती हुई अनन्त में मिल रही थी। बाहर की साधारण-सी आवाज़ पर भी मैं चौंक उठता और मन ही मन यही दुआ करता कि मेम भाभी जहां कहीं भी जाए, सुख से रहे। दूर गगन में कहीं कोई पक्षी पुकार उठा। कूक-कूक की-सी आवाज़ थी वह। शायद किसी पहाड़ी पक्षी का आर्तनाद था। टप-टप करके खिड़की के टिन पर ओस की बूंदें पड़ रही थीं। किसी पेड़ की टहनी से एक सूखा पत्ता टूटकर निश्शब्द नीचे गिर पड़ा। घास में अंकुर फूट पड़े।

मैं कान खड़े किए हुए मेम भाभी की गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। कल सुबह यहां पुलिस आएगी। पूरे शहर में खोजबीन होगी। पर मेम भाभी कहीं नहीं मिलेगी। बहुत दिनों और रातों के बाद मेम भाभी अपने घर लौटेगी, और वहां पहुंचकर फिर से गृहस्थी बसाएगी। अब किसीसे भी उसे घृणा नहीं होगी। विली भी युद्ध से लौटकर शादी करेगा। मैटिल्ड की शादी हो चुकी है। उसके बाद मिनी की शादी होगी। फिर हेनरी, मार्टिन, सभी की गृहस्थी बसेगी। मेम भाभी उन्हीं लोगों की एक सहोदरा है, उनकी ही आत्मीया है। वह हम लोगों की कोई नहीं, कुछ नहीं लगती। वहां लम्बा गाऊन पहनकर वह गिर्जाघर जाकर प्रार्थना करेगी—"The time is fufillled, and the kingdom of God is at hand, repent ye···"

और मुझे उस दिन की भी तमाम बातें याद हैं, जिस दिन हावड़ा स्टेशन, दमदम एयरोड्रम, खिदिरपुर के डेक से अंग्रेज भारत छोड़कर चले

गी पर ट्रेन में या सिनेमाघरों में अब वे दिखाई नहीं पड़ते,
स-चालीस साल पहले वही राह गुज़रते निरीह लोगों के सिर पर
ते हुए चलते थे; फिर भी उन्हें कोई कुछ कहने-सुननेवाला नहीं
मलोगों ने जी-जान से, वल्कि पूरी तरह से साहब बनने का प्रयत्न
या। पर प्रयत्न करने के बावजूद हमलोग साहब लोगों की नज़र में
तो नेटिव थे, फिर बाबू। हम लोग साहब नहीं बन सके, इसका हमें
कम दुःख था ? पर आज वह सारा अतीत इतिहास बन गया है।
कन आज के तुम सभी लोग याद रखो कि उस दिन तमाम अंग्रेज लड़के-
ड़कियों के चले जाने के पश्चात् भी सिर्फ एक ऐसी लड़की थी, जो नहीं
ा सकी थी। सिर्फ वही एक उन सबसे पिछड़ गई थी। वह आज भी
आबू पहाड़ के पत्थरों में मिट्टी के नीचे बिल्कुल निश्चित अनन्त निर्भरता
के साथ चिर-निद्रा में विश्राम कर रही है। वह हार चुकी है। दुनिया की
भीड़ में परिश्रान्त होकर वह पथ खो बैठी है।

अब वही कहानी सुनाऊं।

जब मेरी नींद टूटी तो देखा, सुबह हो चुकी थी।

गिर्जाघर की घड़ी में टन-टनकर घण्टे बज रहे थे। उस समय आबू
पहाड़ के चारों ओर कुहासा फैला हुआ था। कुहासे से आच्छन्न सूर्य की
किरणें पहाड़ की चोटी पर पड़ रही थीं। उधर सनसेट प्वाइण्ट पर अंधेरे
का कुछ झुटपुटा-सा छाया था।

मैं बिलकुल संज्ञाहीन हो गया, मानो मेरी समूची चेतना ही लुप्त हो
गई हो। तो क्या उसने गाड़ी नहीं भेजी ? नहीं, यह भला कैसे हो सक
है ? शायद मुझे ही नींद आ गई हो और गाड़ी का हॉर्न सुनाई नहीं दि
हो। मैं धोती-कुरता बदलकर सड़क पर निकल आया तो देखा कि स
पर खासी भीड़ जमा है। अनगिनत सिपाही और कड़ा पहरा !

और गजब की सरगर्मी नज़र आ रही थी। नौकर-चाकर, लाव-लश्कर सभी व्यस्त! तो क्या सब जाग पड़े थे और उन्हें मेम भाभी के भागने की बात मालूम हो गई थी? कुछ आगे बढ़ते ही मेरी समस्या का समाधान हो गया।

कल वाला वह आदमी, जिसने मुझसे स्टेशन पर बातें की थीं, मुझे देखते ही मेरे पास दौड़ा आया और पूर्ववत् सलाम करके खड़ा हो गया। मैंने पूछा, 'मेम भाभी कहां है?'

उस व्यक्ति ने कहा, 'हुजूराइन नहीं हैं, हुजूर।'

मैंने पूछा, 'कहां गई?'

उस व्यक्ति ने कहा, 'मर गई, हुजूर।'

और पादरी साहब की दी हुई बाइबिल के पन्ने उलटते-पलटते मुझे वे तमाम बातें याद हो आईं कि बड़े महाराज ने मेम भाभी के पीछे गुप्तचर लगा दिए थे। उन्हें शायद शक हो गया था। हो सकता है, उन्हें सब कुछ मालूम चल गया हो और मेरे पास गाड़ी भेजने के पहले ही उन्होंने शायद सब कुछ खतम कर दिया हो। शायद रात के पहले पहर में ही सारी घटना घट चुकी हो। मेम भाभी निश्चिन्त होकर कुछ देर के लिये सोई होंगी। घोर अन्धेरी रात में शायद कोई पहले से ही मेम भाभी के कमरे में घुस-छिपकर बैठ गया होगा और मेम भाभी को उसका पता नहीं चल सका होगा। जब हवामहल में तमाम शोर गुल और चहल-पहल शान्त हो गई होगी तब वह अपनी ओट से निकला होगा और···

उसके बाद मिट्टी की पृथ्वी पर सवेरा हुआ। एक के बाद एक सभी जाग पड़े, पर मेम भाभी की नींद नहीं टूटी। उधर विली ने भी एरोड्रम पर खड़े-खड़े शायद उम्मीद छोड़ दी। अपनी दीदी को तो वह अच्छी तरह जानता था न! प्लेन की टिकट, पासपोर्ट सब बेकार हो गए। सारा

प्लान ही नष्ट हो गया। गिर्जाघर की घड़ी में उस वक्त भी घण्टे टन-टन बज रहे थे—"The time is fulfilled, and the kingdom of God is at hand···repent ye···Amen."

आज भी आबू पहाड़ के गिर्जाघर के सहन में खड़े होकर देखें तो चारों तरफ समाधि-स्तम्भों की कतारें दिखाई पड़ेंगी। वहां बहुत-से लोगों की समाधियां हैं। उन्हीं में एक समाधि के ऊपर सफेद पत्थर पर सिर्फ इतना ही लिखा है :

Here lies
a lady
who lived as she liked and died happy.

एक विदेशी महिला के लिए मुझे खर्च करते देखकर गिर्जाघर के पादरी साहब उस दिन शायद चकित हो गए थे।

उन्होंने मुझसे पूछा था, 'मिस नोरा आपकी क्या लगती थी ?'

उनकी बात का कुछ जवाब न देकर मैं वहां से बहुत शीघ्रता से खिसक पड़ा था, क्योंकि बूढ़े पादरी साहब शायद मेरी बात नहीं समझ पाते। बल्कि कोई भी और व्यक्ति मेरी बातें भला क्या समझ पाता !

मेम भाभी के जीवन की सार्थकता समझने की सामर्थ्य किसमें थी भला ?

एक दिन नदी ने कहा था—मैं समुद्र बनूंगी। लगता है शायद इसीलिए वह कहां और किस पहाड़ के शिखर से निकलकर चलती-चलती समुद्र में आ मिली थी। आज वही सचमुच समुद्र बन गई है, पर समुद्र बनने की उसकी लालसा आज भी नहीं मिटी है, क्या यही उसके लिए कम सुख की बात है ?

• • •